# विश्व की विश्वास से जुड़ी परंपराएँ

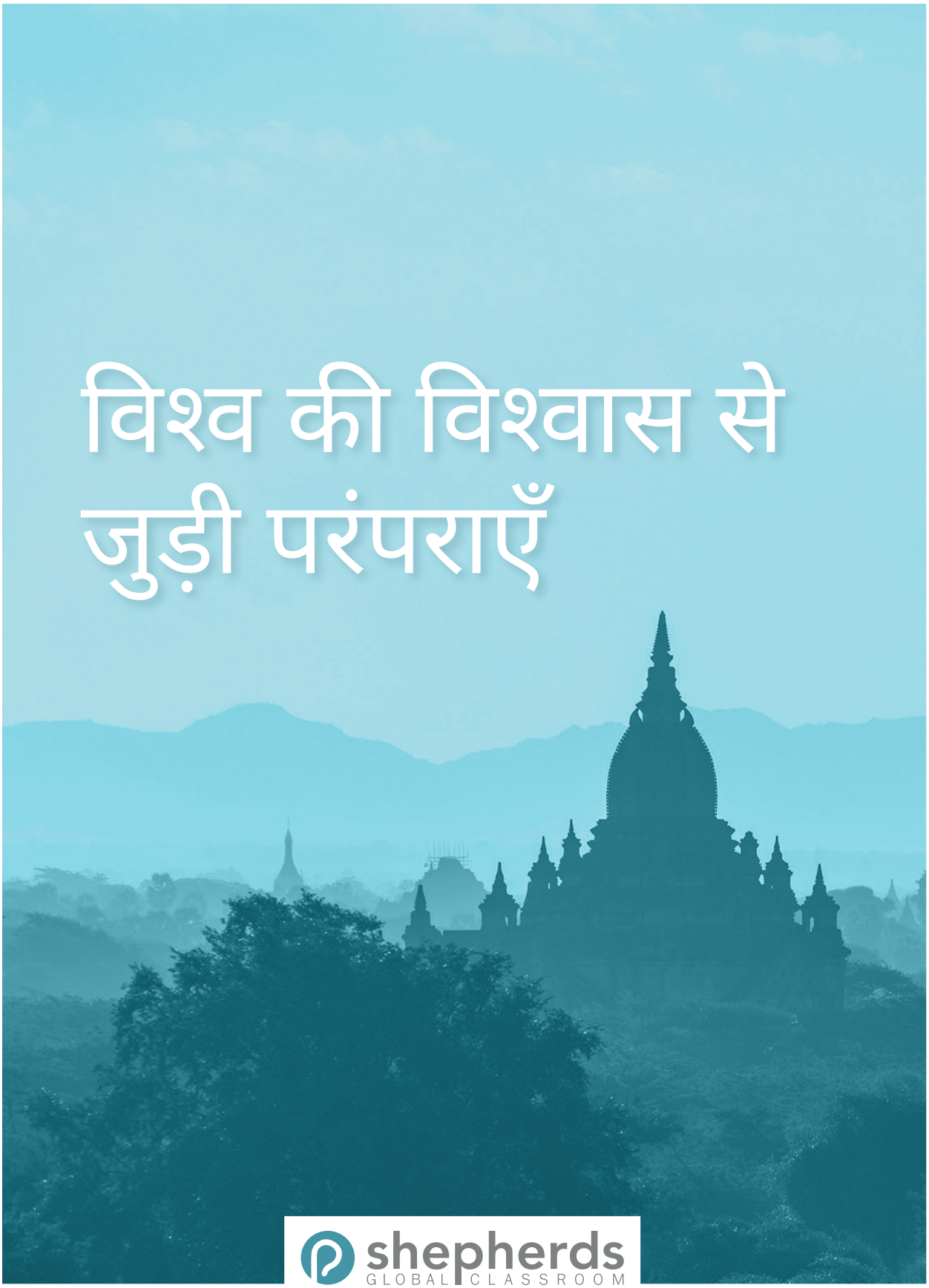

shepherds
GLOBAL CLASSROOM

# विश्व की विश्वास से जुड़ी परंपराएँ

shepherds
GLOBAL CLASSROOM

Shepherds Global Classroom का अस्तित्व इस पूरे संसार में उभरते हुए मसीही अगुवों के लिए एक पाठ्यक्रम प्रदान करके यीशु मसीह की देह को तैयार करने के लिए है। हमारा लक्ष्य संसार के हर देश में आत्मिक प्रशिक्षकों के हाथों में 20-कोर्स पाठ्यक्रम उपकरण को देकर स्वदेशी प्रशिक्षण कार्यक्रमों की संख्या को बढ़ाना है।

यह पुस्तक https://www.shepherdsglobal.org/courses से निःशुल्क डाउनलोड के लिए उपलब्ध है।

मुख्य लेखक: Dr. Stephen K. Gibson डॉ. स्टीफन के. गिब्सन

कॉपीराइट© 2023 Shepherds Global Classroom
तीसरे अंग्रेज़ी संस्करण से हिन्दी भाषा में अनुवादित

सर्वाधिकार सुरक्षित।

तृतीय-पक्ष पाठ्यसामग्री पर उनके सम्बन्धित प्रकाशकों का कॉपीराइट है और उन्हें विभिन्न लाइसेंसों के अन्तर्गत साझा किया गया है।

जब तक संकेत न दिया जाए, सभी पवित्रशास्त्र के उद्धरण HINDI OV (RE-EDITED) बाइबल से लिए गए हैं। कॉपीराइट ©2012 द बाइबल सोसायटी ऑफ इंडिया। इन्हें अनुमति के साथ प्रयोग किया गया है। पूरे विश्व में सर्वाधिकार सुरक्षित।

**अनुमति सूचना:**

इस पुस्तक को निम्नलिखित दिशानिर्देशों के अन्तर्गत प्रिंट और डिजिटल प्रारूप में स्वतंत्रपूर्वक छापा और वितरित किया जा सकता है: (1) पुस्तक की सामग्री में किसी भी तरह से बदलाव नहीं किया जाना चाहिए; (2) इसकी प्रतियाँ मुनाफ़े के लिए बेची न जाएँ; (3) शैक्षणिक संस्थान इस पुस्तक का उपयोग/प्रतिलिपि बनाने के लिए स्वतंत्र हैं, भले ही वे शिक्षा शुल्क ही क्यों न लेते हों; और (4) Shepherds Global Classroom की अनुमति और पर्यवेक्षण के बिना इस पुस्तक का अनुवाद न किया जाए।

# विषय-सूची


कोर्स अवलोकन.....5

(1) मूल मसीहियत .....9

(2) धार्मिक मतभेद को समझना.....13

(3) मोर्मोन धर्म .....23

(4) यहोवा विटनेसेस (यहोवा के साक्षी) .....33

(5) इग्लेसिया नी क्रिस्टो (मसीह की कलीसिया) .....39

(6) ईस्टर्न लाइटनिंग.....45

(7) प्रलयवादी पंथ.....51

(8) हिन्दू धर्म.....57

(9) बौद्ध धर्म .....63

(10) ताओ धर्म .....71

(11) इस्लाम .....77

(12) यहूदी धर्मसब्त.....83

(13) नये युग का धर्म .....89

(14) प्रकृति धर्म .....95

(15) वुडू .....99

(16) सेवेंथ डे एड्वैंटिस्म को समझना ..... 105

(17) रोमन कैथोलिकवाद को समझना ..... 113

(18) ईस्टर्न रूढ़िवादी धर्म को समझना ..... 119

(19) समृद्धि के धर्मशास्त्र को समझना ..... 127

सिद्धान्त की हस्तपुस्तिका ..... 137

समीक्षा प्रश्न..... 147

अनुशंसित संसाधन..... 153

निर्धारित कार्य का रिकॉर्ड ..... 157

# कोर्स अवलोकन

| ऐसे पंथ जिन्हें मसीहियत के साथ जोड़कर देखा जाता है | गैर-मसीही धर्म | भिन्न मसीही परंपराएँ |
|---|---|---|
| मोर्मोनवाद | हिन्दूवाद | सेवेंथ डे एड्वैंटिस्म |
| यहोवा विटनेसेस (यहोवा के साक्षी) | बौद्ध धर्म | रोमन कैथोलिकवाद |
| इग्लेसिया नी क्रिस्टो | ताओवाद | ईस्टर्न रूढ़िवाद |
| ईस्टर्न लाइटनिंग | इस्लाम | समृद्धि के धर्मशास्त्र |
| प्रलयवादी पंथ | यहूदी धर्म | |
| | नये युग का धर्म | |
| | प्रकृति धर्म | |
| | वुडू | |

**कोर्स का विवरण**

यह कोर्स 17 चुनिन्दा पंथों और धार्मिक परम्पराओं की बुनियादी मान्यताओं और इतिहासों की व्याख्या करता और उनकी तुलना ऐतिहासिक प्रोटेस्टेन्ट मसीहीयत से करते हुए बाइबल से उनके सिद्धान्तों और प्रथाओं का मूल्यांकन करता है। इसके द्वारा विद्यार्थी गलत धर्मो की गलत शिक्षाओं का उत्तर देने और मसीहियों को इन गलतियों से बचाने के लिए तैयार हो पाएंगें।

**कोर्स के लक्ष्य**

1. मसीहियों के सर्वाधिक प्रभावशाली पथों और धार्मिक परंपराओं के मूल सिद्धान्तों को समझने में सहायता करना।
2. मसीहियों की यह समझने में सहायता करना कि क्यों कुछ गलत शिक्षाएं हानिकारक हैं।
3. पंथों के प्रभाव से मण्डली को बचाने के लिए उनके पासबानों को तैयार करना।
4. धार्मिक त्रुटियों का बाइबल द्वारा उत्तर देने के लिए मसीहियों को प्रशिक्षित करना।
5. दूसरे धर्मो की परम्पराओं को मानने वाले लोगों को शिक्षा देने के लिए व्यवहारिक दिशा प्रदान करना।

**कक्षा के अगुवे के लिए व्याख्या और निर्देश**

जहां कहीं भी वचनों को कोष्ठक या मुख्य पाठ के भीतर लिखा गया है, कक्षा आगे बढ़ने से पहले उन वचनों को ज़रूर से पढ़ें।

धर्म समूहों से सम्बन्धित अध्यायों (पाठ 3-19) में सामान्यतः उसी नमूने का पालन किया गया है जो आगे निर्देषों में दिये गये हैं। पहले दो पाठ विशेष विषयों पर तैयार किये गये हैं।

ये निर्देश बताते हैं किस प्रकार कक्षा को उत्कृष्ट गुणवत्ता के साथ शिक्षा प्रदान की जा सकती है। जो विद्यार्थी Shepherds Global Classroom. से प्रमाण पत्र प्राप्त करना चाहते हैं उनके लिए शिक्षकों को यही मानक तय करना चाहिए। लेकिन अन्य प्रकार के वे समूह जो इन मांगों को पूरा नहीं कर पा रहे हैं, अगुवे या शिक्षक उनकी योग्यता को ध्यान में रखते हुए उन्हें अलग प्रमाण पत्र दे सकते हैं।

हमारे विचार से प्रत्येक पाठ को सम्पन्न करने में कम से कम दो घण्टे का समय लगेगा। यदि समूह कम समय के लिए मिलने जा रहा है तो, पाठ को दो सभाओं के लिए बांटा जा सकता है।

**सामूहिक गतिविधियों का क्रम**

**(1) सुसमाचार वार्ता से जुड़ी रिपोर्टस** (अनुमानित समयः यदि रिपोर्ट्स अधिक हैं तो, 20 मिनट)

जिन विद्यार्थियों ने पिछले पाठ पर वार्ता समाप्त कर ली है वे रिपोर्ट लिखेगें। वे सिर्फ सुसमाचार की कहानी को साझा करेगें। बाकि के विद्यार्थी भविष्य के लिए सुझाव देगें। किसी भी विद्यार्थी को किसी की रिपोर्ट पर अधिक आलोचनात्मक होने का अवसर न दें।

**(2) कक्षा के पुनरावलोकन का समय** (अनुमानित समयः 5-10 मिनट)

कक्षा का अगुवा पिछले पाठ का पुनरावलोकन करते हुए प्रश्न करे, उसके बाद वह कुछ प्रश्न उन पाठों से भी पूछ सकता है जिन्हें पहले से पढ़ाया जा चुका है। इसका उद्देश्य विद्यार्थी की स्मरण शक्ति को मज़बूत करना और उनके पास पायी जाने वाली गलतफहमियों को दूर करना है। पुनरावलोकन प्रश्न हमारी कई महत्वपूर्ण तथ्यों को समझने में मदद करते हैं। पुनरावलोकन प्रश्नों का उपयोग करके निर्देशक, कोर्स को अत्यधिक प्रभावशाली बना सकता है। पुनरावलोकन प्रश्न इस कोर्स के अन्त में दिये गये हैं।

**(3) पहली मुलाकात**

कोई भी जन “पहली मुलाकात" वाले शीर्षक को पढ़े। इसे पढ़ते समय अधिक टिप्पणियां या चर्चा न करें। कहानियों के अन्त में कोई निष्कर्ष प्रदान नहीं किया गया है जिससे विद्यार्थियों के भीतर कहानी को पढ़ते समय जिज्ञासा उत्पन्न हो सके। कई मामलों में, पाठ के अन्त में दी गयी गवाही उसी व्यक्ति के बारे में है जिसका जिक्र पहली मुलाकात में किया गया है।

**(4) वचन का अध्ययन – भाग 1** (अनुमानित समय: 15 मिनट)।

दिये गये अनुच्छेद को एक साथ ऊँची आवाज़ में पढ़ें। कुछ विद्यार्थी बारी बारी करके बाइबल वचनों को पढ़ सकते हैं। उसके बाद कुछ समय के लिए शान्त होकर विद्यार्थियों को सांराश और कथनों की सूचियां (प्रत्येक पाठ में विशेष निर्देष दिये गये हैं) लिखने का अवसर दें। जब वे लिख चुके हों तब उनमें से कुछ विद्यार्थियों को अपनी लिखी बातों को बताने को मौका दें ताकि वे एक दूसरे से सीख सकें।

**(5) धार्मिक समूह का अध्ययन** (अनुमानित समयः 40 मिनट)

धार्मिक समूह के बारे में प्रदान की गयी जानकारी का अध्ययन करें। अगुवा या कोई और जन समूह में सामग्री को पढ़कर उसके बारे में उन्हें समझा सकता है। अलग अलग विद्यार्थी हाशिये में लिखी हुए कथनों को समझा सकते हैं।

**चर्चा करने वाले प्रश्न** और **कक्षा में की जाने वाली गतिविधियों** कों ► इंगति किया गया है। कक्षा को अगुवा प्रश्न करे और विद्यार्थियों को उत्तर पर चर्चा करने के लिए समय दे। प्रत्येक पाठ में इस प्रकार के बहुत से प्रश्न होगें।

***उभरे हुए और तिरछे अक्षर*** धार्मिक समूहों की गलत शिक्षाओं और परम्पराओं को दर्शाते हैं। धार्मिक समूह के बारे में तथ्यों को पढ़ने के बाद व्याख्याओं और दिये गये वचनों को पढ़ें।

**(6) *सिद्धान्त की हस्तपुस्तिका* का उपयोग करना** (अनुमानित समयः 20 मिनट)

*सिद्धान्त की हस्तपुस्तिका,* अध्यायों के बाद छपा हुआ सामग्री का एक खण्ड है। पाठ के इस बिन्दू पर, इस खण्ड में रखे हुए *सिद्धान्त की हस्तपुस्तिका* पर ध्यान दें। विद्यार्थी वचन को एक साथ पढ़ें और सुनिश्चित करें कि ये पद किस तरह से एक बिन्दू को साबित करते हैं। हर एक विद्यार्थी करके दिखाए कि वह इस वचन से एक बिन्दू को साबित कर सकता है। कुछ बिन्दुओं का इस्तेमाल कई अध्यायों में किया गया है। यदि ऐसा लगता है कि विद्यार्थी उस बात को ठीक ठंग से समझ गया है तो उस अभ्यास को फिर से दोहराने की आवश्यकता नहीं है।

**(7) सुसमाचार प्रसार** (अनुमानित समय: 10 मिनट)

यह खण्ड तब हमें कुछ व्यावहारिक बातों को याद करने में सहायता करता है जब हम किसी धार्मिक समूह के लोगों से बातें कर रहे हों। कुछ अध्यायों में इसे *"सिद्धान्त की हस्तपुस्तिका"* के साथ इस्तेमाल किया गया है।

**(8) एक गवाही**

कोई जन "एक गवाही" नामक खण्ड को पढ़ें। ये गवाहियां लोगों की सच्ची घटनाएं हैं, हालांकि बहुत बार नामों को बदल दिया गया है।

**(9) वचन का अध्ययन – भाग 2** (अनुमानित समय: 20 मिनट)

सत्र के अन्त में, निर्धारित अनुच्छेद को फिर से पढ़ें। कुछ क्षणों के लिए प्रतीक्षा करें ताकि विद्यार्थी संदेश की व्याख्या करते हुए एक अनुच्छेद को लिख सकें जो उस खण्ड में उस धार्मिक समूह के लिए है जिसका उन्होंने अध्ययन किया है। होने दें कि कुछ विद्यार्थी अपनी बातों को समूह के साथ में साझा कर सकें।

## (10) निर्धारित कार्य

पाठ को समाप्त करते समय विद्यार्थियों को यह अवश्य ध्यान दिलाएं कि वे सुसमाचार प्रस्तुत करने के एक अवसर की खोज अवश्य करें। यदि सम्भव हो तो, अध्ययन करने वाले समूह के साथ विद्यार्थी गण अवश्य बातचीत करें। वे सुसमाचार तथा अन्य मसीही शिक्षाओं को उन्हें बताने का प्रयास करें। यदि उनके लिए विशेष धर्म समूह को सदस्य नहीं मिलता, तब उन्हें एक ऐसे व्यक्ति की तलाश करनी चाहिए जो उनकी पाठ्य सामग्री को सुनने में रूची दिखाए। वे उस धर्म के बुनियादी मूल्यों को बताएं, उसके बाद बाइबल के आधार पर प्रतिउत्तर दें। वे कक्षा के सामने अपनी बात रखने के लिए पूरी तरह से तैयार हों।

प्रत्येक विद्यार्थी कोर्स के माध्यम से 10 विभिन्न धर्मों के बारे में किये गये अध्ययन के बारे में एक लिखित रिपोर्ट दें। उस लिखित रिपोर्ट में उस धर्म की वे विशेषताएं लिखी होना जरूरी है जो एक प्रचारक के लिए जानना महत्वपूर्ण और आवश्यक है। उस रिपोर्ट में विद्यार्थी लिखें, कि उन्होंने अपनी मुलाकात में किस बात की व्याख्या की, और दूसरे व्यक्ति ने किस तरह उसकी बातों को प्रतिउत्तर दिया। प्रत्येक वार्ता की रिपोट लगभग 2 पृष्टों की होनी चाहिए। निर्देशक निर्धारित कार्य की व्याख्या पहले कुछ अध्यायों के बीच में अवश्य करें। विद्यार्थियों के द्वारा लिखी गयी अच्छी रिपोर्टों को विद्याथियों के सामने उदाहरण के तौर पर प्रस्तुत किया जा सकता है।

10 मुलाकातें और रिपोर्ट लिखना इस कोर्स का प्राथमिक निर्धारित कार्य है। इस पुस्तक के अन्त में निर्देशक द्वारा एक लेखा रखने में मदद करने के लिए एक फार्म दिया गया है।

## (11) सुझाए गए संसाधन

यदि विद्यार्थी किसी धार्मिक समूह के बारे में अधिक जानना चाहते हैं तो उन्हें उपलब्ध संसाधनों को देखने के लिए पुस्तक के अन्त में सुझाए गए संसाधनों पर गौर करना चाहिए।

# पाठ 1
# मूल मसीहियत

## परिचय

इस कोर्स में हम कई धार्मिक समूहों की विशिष्ट मान्यताओं की जांच करते हैं। गलत मान्यताओं पर चर्चा करने से पहले मूल मसीहियत को समझाना महत्वपूर्ण है। सच्ची मसीहियत क्या है? मसीही तत्वज्ञान के लिए कौन से मौलिक सिद्धांत आवश्यक हैं जो हमें किसी धार्मिक समूह की विश्वसनीयता निर्धारित करने में सहायता करते हैं?

## मौलिक ऐतिहासिक मसीहियत

केवल एक मसीहीयत और एक सच्ची कलीसिया है क्योंकि केवल एक परमेश्वर और एक ही सच्चा सुसमाचार है। कलीसिया एक नींव अर्थात: (1) प्रेरितों की सेवकाई और (2) यीशु मसीह के जीवन, सेवकाई, संदेश और प्रायश्चित में प्रकट सत्य पर बनाई गई है। सिर्फ एक नींव और एक ही विश्वव्यापी कलीसिया है।

विश्वव्यापी कलीसिया की एकता का अर्थ यह नहीं है कि एक संगठन ही पूरी कलीसिया है। कोई भी एक संगठन संसार भर में कलीसिया के लिए परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा नहीं करता है। यीशु ने अपने प्रेरितों से कहा कि वे सभी मसीहियों से एक ही संगठन में होने की अपेक्षा न करें (मरकुस 9:38-39) जो संगठन दावा करता है कि वह ही पृथ्वी पर परमेश्वर की सम्पूर्ण कलीसिया है, उस पर भरोसा नहीं किया जाना चाहिए।

विश्वव्यापी कलीसिया की एकता का अर्थ यह है कि सभी स्थानीय कलीसियाओं को मसीहियत के उन सिद्धांतों को मानना चाहिए जो नए नियम की कलीसिया की शुरुआत में आवश्यक थे। पहली कुछ शताब्दियों के दौरान, कलीसिया ने प्रेरितों के स्वीकृत मत या अकीदे, निसीन मत और चाल्सेडोनियन मत को लिखा, ताकि उन सिद्धांतों को बताया जा सके जो आरम्भ से ही मसीही धर्म के लिए आवश्यक रहे हैं। एक मतमूलभूत मसीही मान्यताओं का एक कथन है।

त्रिएकता, मसीह और पवित्र आत्मा की अलौकिकता, मसीह का प्रायश्चित, तथा अनुग्रह से विश्वास द्वारा उद्धार जैसे सिद्धांत मूल मसीही धर्म के आधारभूत सिद्धांत हैं।

यह कोर्स किसी विशेष संप्रदाय का बचाव करने के लिए नहीं बनाया गया है। इस कोर्स में जिन सिद्धांतों का बचाव किया गया है, उनमें प्रारंभिक मसीही धर्म के ऐतिहासिक निसीन, चाल्सेडोनियन और अथानासियन अकीदे में व्यक्त त्रिएकवाद; बाइबल का पूर्ण अधिकार; और अनुग्रह, विश्वास और उद्धार के इंजीलवादी सिद्धांत शामिल हैं।

## सुसमाचार के आवश्यक बिन्दू

निम्नलिखित बिन्दू सुसमाचार के आवश्यक तत्व हैं। किसी व्यक्ति के लिए उन्हें पूरी तरह समझे बिना भी उद्धार पाना संभव है। हालाँकि, इनमें से किसी भी बिन्दू का इनकार सुसमाचार की नींव को समाप्त कर देता है। यदि कोई व्यक्ति या संगठन इनमें से किसी भी आवश्यक तत्व को नकारता है, वह उद्धार के झूठे साधनों पर भरोसा करते हुए, दूसरा सुसमाचार विकसित करने वाला ठहरेगा।

जब आप किसी के साथ सुसमाचार साझा करते हैं, तो कुछ बिंदु विशेष रूप से महत्वपूर्ण होंगे क्योंकि वह पहले से ही कुछ गलत शिक्षाओं पर विश्वास करता है। उदाहरण के लिए, यदि वह मानता है कि उद्धार केवल एक निश्चित संगठन के माध्यम से है, तो वह यह मानेगा कि संगठन की सदस्यता की आवश्यकता उद्धार के लिए आवश्यक है। उसे यह जानने की आवश्यकता है कि एक व्यक्ति व्यक्तिगत रूप से क्षमा प्राप्त करता और परमेश्वर के साथ सीधे संबंध में आता है।

**(1) परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप में बनाया ताकि वह उनके साथ सम्बन्ध बना सके (उत्पत्ति 1:27, प्रेरितों 17:24-28)।**

यह सत्य हमारे अस्तित्व का उद्देश्य और उद्धार के लक्ष्य को दर्शाता है। इस सत्य का खंडन उन धर्मों द्वारा किया जाता है जो ऐसे परमेश्वर में विश्वास नहीं करते जिनका व्यक्तित्व है और जो सभी लोगों से प्रेम करते हैं। यह सत्य संसार की असल समस्या को दर्शाता है; लोगों का परमेश्वर के साथ संबंध नहीं है।

► अगर किसी मनुष्य को भरोसा न हो कि परमेश्वर उससे प्रेम करते हैं, तो क्या होगा?

**(2) पहले मनुष्यों ने पाप किया और परमेश्वर से अलग हो गए (उत्पत्ति 3:3-6, 8, यशायाह 59:2)।**

यह पाप की उत्पत्ति और संसार की स्थिति का कारण दर्शाता है। पाप के कारण संसार में दुख और पीड़ा है। परमेश्वर की योजना के कारण अभी भी आनंद और उद्देश्य है, लेकिन संसार वैसा नहीं है जैसी परमेश्वर ने योजना बनाई थी।

► यदि कोई व्यक्ति यह विश्वास न करे कि पाप ही संसार की वास्तविक समस्या है, तो क्या होगा?

**(3) हम में से प्रत्येक ने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया है (रोमियों 3:10, 23)।**

हर व्यक्ति जानबूझकर परमेश्वर के विरुद्ध पाप करने का दोषी है। ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है जिसने कभी कोई गलत काम न किया हो।

► यदि कोई व्यक्ति यह सोचता है कि वह अपने किये को उचित ठहरा सकता है, तो क्या होगा?

**(4) यदि कोई व्यक्ति परमेश्वर की कृपा को प्राप्त नहीं कर पता है, उसका न्याय परमेश्वर द्वारा किया जाएगा और उसे अनन्त दण्ड की सजा दी जाएगी (इब्रानियों 9:27, रोमियों 14:12, प्रकाशितवाक्य 20:12)।**

इससे प्रत्येक व्यक्ति के उद्धार की आवश्यकता की गंभीरता और तात्कालिकता का पता चलता है।

► यदि कोई व्यक्ति यह विश्वास नहीं करता कि एक धर्मी परमेश्वर है जो उसके पापों का न्याय करेगा, तो क्या होगा?

**(5) कोई व्यक्ति परमेश्वर के विरुद्ध किए गए पापों का प्रायश्चित करने के लिए कुछ भी नहीं कर सकता (रोमियों 3:20, इफिसियों 2:4-9)।**

अच्छे कार्य और दान, पाप का प्रायश्चित नहीं कर सकते, क्योंकि पाप अनन्त परमेश्वर के विरुद्ध है और सब कुछ पहले से ही उसका है।

► यदि कोई व्यक्ति यह विश्वास करने लगे कि उसे स्वयं को क्षमा के योग्य बनाने की आवश्यकता, तो क्या होगा?

**(6) क्षमा का एक आधार होना ज़रूरी है क्योंकि पाप गंभीर है और परमेश्वर न्यायी हैं (रोमियों 3:25-26)।**

परमेश्वर क्षमा करना चाहते हैं, लेकिन यदि वह बिना किसी आधार के क्षमा करे, तो पाप तुच्छ प्रतीत होगा, और परमेश्वर अन्यायी प्रतीत होंगे।

► मसीह की मृत्यु क्यों आवश्यक थी?

**(7) परमेश्वर के पुत्र, यीशु ने एक परिपूर्ण जीवन जिया और बलिदान के रूप में अपनी जान दे दी ताकि हमें क्षमा मिल सके, पवित्र परमेश्वर के सामने धर्मी ठहराया जा सके और अनन्त जीवन मिल सके (यूहन्ना 3:16, रोमियों 5:8-9, 1 पतरस 2:22, 24)।**

यीशु परमेश्वर के पुत्र हैं, इसलिए उनके बलिदान का मूल्य अनंत है और यह संसार में किसी को भी क्षमा करने का आधार प्रदान करता है। यदि वह केवल एक मनुष्य होते, तो उनके बलिदान का मूल्य सीमित होता। यदि वह परमेश्वर नहीं होते, तो वह हमें पूरी तरह से नहीं बचा पाते, और हमें उद्धार का कोई दूसरा मार्ग खोजना पड़ता।

► कुछ धर्म यह क्यों सिखाते हैं कि लोगों को कर्मों के द्वारा उद्धार पाना चाहिए?

**(8) यीशु शारीरिक रूप से मरे हुओं में से जी उठे, जिससे उन्होंने परमेश्वर के पुत्र के रूप में अपनी पहचान प्रमाणित की और अनन्त जीवन देने की अपनी सामर्थ का प्रदर्शन किया (यूहन्ना 11:25-26, यूहन्ना 20:24-28, रोमियों 1:4, प्रकाशितवाक्य 1:18)।**

जो पंथ यीशु के पुनरुत्थान का इंकार करते हैं, वे आम तौर पर उनके परमेश्वरत्व और उद्धार के लिए उनके बलिदान की पर्याप्तता का भी इंकार करते हैं। फिर वे उद्धार का दूसरा तरीका खोज लेते हैं।

► यीशु के मृतकों में से जी उठने के कारण हम किन-किन बातों और तथ्यों को जानते हैं?

**(9) उद्धार के लिए यीशु का बलिदान पर्याप्त है (इफिसियों 2:8-10, 1 यूहन्ना 2:2)।**

उद्धार अच्छे कर्मों से नहीं बल्कि *केवल* यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा *अनुग्रह* से होता है। कई धर्म सिखाते हैं कि एक व्यक्ति आंशिक रूप से अपना उद्धार अर्जित कर सकता है। यह लोगों को एक धार्मिक संगठन के नियंत्रण में रखता है जो उन्हें बताता है कि उद्धार पाने के लिए क्या करना चाहिए।

► कुछ लोग ऐसा क्यों सोचते हैं कि उनके धार्मिक संगठन के बिना उनका उद्धार नहीं हो सकता?

**(10) परमेश्वर हर उस व्यक्ति को बचाते हैं जो स्वीकार करता है कि वह पापी है, अपने पाप का पश्चाताप करता है, और सुसमाचार पर विश्वास करता है (मरकुस 1:15, 1 यूहन्ना 1:9)।**

किसी भी मानव संगठन को उद्धार की आवश्यकताओं में वृद्धि करने या उद्धार का कोई भिन्न साधन प्रस्तुत करने का अधिकार नहीं है।

► किस प्रकार के व्यक्ति को यह विश्वास करने का अधिकार है कि उसका उद्धार हो गया है?

**(11) मन फिराव का अर्थ है कि व्यक्ति अपने पापों के लिए खेदित और अपने पापों को छोड़ने के लिए तैयार है। (यशायाह 55:7, यहेजकेल 18:30, यहेजकेल 33:9-16, मत्ती 3:8)।**

मन फिराव का अर्थ यह नहीं है कि व्यक्ति को अपना जीवन परिपूर्ण बनाना होगा तभी परमेश्वर उसे स्वीकार करेंगे। केवल परमेश्वर ही अविश्वासी को उसके पापों की शक्ति से मुक्त कर सकते हैं। मन फिराव का अर्थ यह है कि एक व्यक्ति को अपने पापों के लिए इतना खेद है कि वह उनसे दूर होने के लिए तैयार है। यदि कोई व्यक्ति अपने पापों से दूर होने के लिए तैयार नहीं है, तो उसका उद्धार नहीं हो सकता।

► किसी व्यक्ति को पश्चाताप के बिना क्षमा क्यों नहीं किया जा सकता?

**(12) मन फिराने वाला, अर्थात विश्वास करने वाला पापी परमेश्वर से उसे बचाने के लिए प्रार्थना करने पर उद्धार प्राप्त करता है (रोमियों 10:13, प्रेरणा 2:21)।**

यीशु के कारण हर व्यक्ति को परमेश्वर की दया प्राप्त करने का अवसर मिलता है। किसी व्यक्ति को परमेश्वर की क्षमा प्राप्त करने के लिए किसी संस्था या मानवीय सहायता की आवश्यकता नहीं होती। एक व्यक्ति इसे व्यक्तिगत रूप से प्राप्त करता है और परमेश्वर के साथ एक सीधा संबंध आरम्भ करता है।

► हम कैसे जान सकते हैं कि कोई व्यक्ति क्षण भर में मसीही बन सकता है?

# पाठ 2
# धार्मिक मतभेद को समझना

## परिचय

► धार्मिक मतभेद क्यों होते हैं? क्या धार्मिक मतभेद आवश्यक हैं या इन्हें टाला जा सकता है?

► इन प्रश्नों पर संक्षिप्त चर्चा के बाद, कक्षा को निम्नलिखित वचन संदर्भों को देखना चाहिए: 1 तीमुथियुस 3:15, यहूदा 1:3; मत्ती 16:6, 12; तीतुस 1:9; और 1 पतरस 3:15। संक्षेप में चर्चा करें कि ये पद धार्मिक संघर्ष के बारे में क्या संकेत देते हैं।

यीशु ने कुएँ के पास सामरी स्त्री से कहा कि सामरियों की उपासना में समस्या यह है कि वे नहीं जानते कि वे किसकी उपासना करते हैं (यूहन्ना 4:22)। परमेश्वर के बारे में मनुष्य की अवधारणा उसकी सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है और निश्चित रूप से उसके सम्पूर्ण धर्म का आधार है। परमेश्वर कैसे हैं, इस बात को लेकर ग़लत होने से अधिक गंभीर कोई और चूक नहीं हो सकती।

परमेश्वर के बारे में कुछ विश्वास किए बिना उनकी आराधना करना असंभव है। यदि किसी व्यक्ति के पास परमेश्वर के बारे में गलत अवधारणा है, तो वह उन विशेषताओं का सम्मान करेगा जो परमेश्वर में नहीं हैं और उन विशेषताओं का सम्मान करने में विफल रहेगा जो परमेश्वर में हैं। उपासक का अपना चरित्र परमेश्वर को लेकर उसकी सोच के हिसाब से ढलने के प्रयास में ख़राब हो जाएगा।

एक व्यक्ति यीशु के बारे में कुछ विश्वास किए बिना उद्धार के लिए उन पर विश्वास नहीं कर सकता। यदि कोई व्यक्ति यीशु के बारे में गलत बातों पर विश्वास करता है, तो उसके पास एक ऐसा सिद्धांत है जो सुसमाचार का समर्थन नहीं करता है। वह एक झूठे सुसमाचार पर विश्वास कर सकता है जो उसका उद्धार नहीं कर पायेगा।

कलीसिया की ज़िम्मेदारी है कि वह सत्य को स्थापित करे। प्रेरित पौलुस ने कहा कि कलीसिया ही सत्य का खंभा और नीव है (1 तीमुथियुस 3:15)। सत्य को स्थापित करने के लिए, कलीसिया की ज़िम्मेदारी है कि वह उसे समझाए और उसका बचाव करे। प्रेरित यहूदा हमें बताते हैं कि जब लोग गलत सिद्धांत सिखाते हैं, तो हमें क्या करना चाहिए "उस विश्वास के लिये पूरा यत्न करो जो पवित्र लोगों को एक ही बार सौंपा गया था।" (यहूदा 1:3)

मिथ्या सिद्धांत एक बीमारी की तरह है जो दूसरों को बीमार करती है (2 तीमुथियुस 2:17)। झूठे सिद्धांत की तुलना खमीर से की गई है, जो धीरे-धीरे सारे गुंदे हुए आंटे को खमीरा कर देता है (मत्ती 16:6)।

परमेश्वर ने पासबानों को सत्य की रक्षा करने वाले अगुवों के रूप में बुलाया है। पौलुस ने तीतुस से कहा कि पासबान को स्वस्थ धर्मसिद्धान्त में शिक्षा देनी चाहिए और जो लोग इसका विरोध करते हैं उन्हें फटकारना चाहिए (तीतुस 1:9)। उन्होंने यह भी कहा कि धोखेबाज़ों के कारण पूरे परिवार सच्चाई से दूर ले जाए जा रहे थे (तीतुस 1:10-11)।

यह कोर्स उन सिद्धांतों के बारे में नहीं है जो विभिन्न मसीही कलीसियाओं को मेथोडिस्ट, बैपटिस्ट या पेंटेकोस्टल जैसी श्रेणियों में विभाजित करते हैं। यह कलीसियाएँ आम तौर पर इस कोर्स के पीछे संदर्भित *"सिद्धान्त की हस्तपुस्तिका"* में दिए गए आवश्यक बाइबल सिद्धांतों पर सहमत होती हैं। इसके बजाय, यह कोर्स उन धार्मिक समूहों को देखता है जो मसीही धर्म की नींव रखने वाले सिद्धांतों को नकारते हैं।

इस पाठ में हम आठ महत्वपूर्ण तरीकों का अध्ययन करेंगे जिनके द्वारा मसीहियों को धार्मिक संघर्ष का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए। उन्हे:

1. व्यक्तिगत रूप से उद्धार का अनुभव होना चाहिए।
2. बाइबल के सिद्धान्त में स्थापित होना चाहिए।
3. गलती के खतरे को समझना चाहिए।
4. पंथ के सदस्यों को समझना चाहिए।
5. झूठे धर्मों की उत्पत्ति को समझना चाहिए।
6. सुसमाचार बाँटना चाहिए।
7. कलीसिया को प्रदर्शित करना चाहिए।
8. पवित्र आत्मा पर निर्भर रहना चाहिए।

## व्यक्तिगत रूप से उद्धार का अनुभव करें

► किसी व्यक्ति के लिए धार्मिक वाद-विवाद में पड़ने से पहले उसका उद्धार होना क्यों महत्वपूर्ण है?

यदि किसी व्यक्ति ने परमेश्वर की कृपा का व्यक्तिगत रूप में अनुभव नहीं किया है,

1. उसमें सत्य की आत्मिक समझ का अभाव होगा।
2. उसके प्रयासों में पवित्र आत्मा की सामर्थ्य और बुद्धि नहीं होगी।
3. धार्मिक संघर्ष के पीछे उसके गलत उद्देश्य होंगे।

## बाइबल के सिद्धांतों में दृढ़ बने रहें

बुनियादी मसीही सिद्धांत को समझना एक विश्वासी को झूठी शिक्षा का सामना करने पर, विश्वास में दृढ़ रहने में सक्षम बनाता है (इफिसियों 4:14)। बाइबल के सिद्धांतों का अध्ययन एक विश्वासी को झूठी शिक्षा का खंडन और सत्य की व्याख्या करके दूसरों को सक्रिय रूप से प्रभावित करने के लिए भी तैयार करता है। यही कारण है कि इस कोर्स में झूठी शिक्षा को परमेश्वर की सच्चाई के विपरीत दिखाया और समझाया गया है। जब आप झूठे शिक्षकों के धोखे का खंडन करने के लिए *सिद्धान्त की हस्तपुस्तिका* अर्थात सिद्धांतों की पुस्तक में सिखाए गए वचनों और सिद्धांतों का उपयोग करते हैं, तो आपका विश्वास मजबूत होगा।

हर विश्वासी को परमेश्वर के संपूर्ण वचन को पढ़ना और उसका अध्ययन करना चाहिए (2 तीमुथियुस 3:15-17)। यह वह तलवार है जिसे परमेश्वर ने आत्मिक विजय के लिए प्रदान किया है (इफिसियों 6:17)।

मसीही धर्म के सिद्धांतों का व्यवस्थित रूप से अध्ययन करना भी आत्मिक रूप से स्थापित होने का एक महत्वपूर्ण तरीका है। Shepherds Global Classroom द्वारा प्रस्तुत पहला सिद्धांत कोर्स *मसीही धारणाएँ* है, लेकिन इसके अलावा अन्य सैद्धांतिक कोर्स भी उपलब्ध हैं।

नए विश्वासियों के लिए सही सिद्धांत में स्थापित होना आवश्यक है, लेकिन यीशु के सच्चे चेले अपने पूरे जीवन भर परमेश्वर की सच्चाई में वृद्धि करने का प्रयास करते रहते हैं (फिलिप्पियों 1:9)।

## गलती के खतरे को समझें

हमें धार्मिक त्रुटियों के विरुद्ध तर्क करने के लिए तैयार रहना चाहिए। धार्मिक त्रुटियों के गंभीर परिणाम होते हैं क्योंकि:

### (1) हर धर्म आपको परमेश्वर में विश्वास करने और स्वर्ग जाने के लिए नहीं कहता।

कुछ धर्म मनुष्य का रूप धारण करने वाले सर्वोच्च परमेश्वर में विश्वास नहीं करते हैं (बौद्ध धर्म)। लाखों धार्मिक लोग यह नहीं मानते कि वे एक व्यक्ति के रूप में स्वर्ग जा सकते हैं (बौद्ध और अधिकांश हिंदू)।

### (2) कुछ धर्म बुरे चरित्र और बुरे कर्म पैदा करते हैं।

धर्म ने कभी-कभी मानव जाति के सबसे बुरे कार्यों को उचित ठहराया है, जैसे कि हिटलर द्वारा लाखों यहूदियों की हत्या। धर्म, इस्लामी आतंकवादियों को हज़ारों लोगों की हत्या करने के लिए प्रेरित करता है।

### (3) धार्मिक राय व्यक्तिगत रुचि का मामला नहीं है।

किसी व्यक्ति को अपने धार्मिक विचारों को वैसे नहीं चुनना चाहिए जैसे वह अपनी पसंदीदा मिठाई चुनता है। हर धर्म वास्तविकता को परिभाषित करने का दावा करता है। अगर लोग वास्तविक हैं, और अगर जगत वास्तविक है, और अगर परमेश्वर वास्तविक हैं, तो कुछ धर्म वास्तविकता को गलत तरीके से समझाने का प्रयास कर रहे हैं। उदाहरण के लिए, अगर संसार का न्याय करने वाला कोई सर्वोच्च परमेश्वर है, तो जो लोग आत्माओं की उपासना करते हैं और आत्माओं को अपने जीवन को नियंत्रित करने देते हैं (एनीमिज्म और वूडू), वे न्याय के लिए तैयार नहीं होंगे। किसी भी व्यक्ति को वह धर्म नहीं चुनना चाहिए जो उसे पसंद है, बल्कि वह धर्म चुनना चाहिए जो वास्तविकता के अनुकूल हो।

### (4) यह मायने रखता है कि कोई व्यक्ति परमेश्वर का वर्णन कैसे करता है।

अगर कोई व्यक्ति किसी ऐसी चीज़ के बारे में बात कर रहा है जो वास्तविक नहीं है, तो इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि वह उसका वर्णन कैसे करता है। लेकिन अगर परमेश्वर वास्तविक है, तो उसके बारे में कुछ विचार सही हैं, और कुछ गलत हैं। जिस तरह आपके

बारे में कुछ कथन गलत होंगे, उसी तरह परमेश्वर के बारे में भी कुछ कथन गलत हैं, क्योंकि वह वास्तविक है। चूँकि यीशु परमेश्वर हैं और उनकी आराधना की जानी चाहिए, इसलिए यह कहना एक भयानक गलती होगी कि वह केवल एक मनुष्य है, जैसा कि कई धर्म कहते हैं।

**(5) व्यक्ति का अनंत भाग्य सत्य पर निर्भर करता है।**

जब लोग उद्धार के लिए किसी ऐसी चीज़ पर भरोसा करते हैं जो वास्तव में उनका उद्धार नहीं कर सकती, तो उनके हमेशा के लिए भटकने से पहले हमें उनके मन को बदलने का प्रयास करना चाहिए।

► धार्मिक गलतियों के गंभीर परिणाम होने के पाँच कारणों की सूची पर दोबारा गौर करें। देखें कि आप पृष्ठ को देखे बिना कितने कारण याद रख पाते हैं।

एक धनी व्यक्ति के घर में आग लग गई थी। अंदर बहुत सी कीमती चीजें थीं जिन्हें वह बचाना चाहता था। जब लोग सहायता के लिए आए, तो वे जलती हुई इमारत के अंदर जाने से डर रहे थे। घर के मालिक ने जल्दी से उन सभी को प्लास्टिक के वस्त्र दिए। उसने उनसे कहा कि वस्त्र विशेष रूप से उन्हें आग से बचाने के लिए बनाए गए हैं। उस पर भरोसा करते हुए, वे इमारत में घुस गए और जो चीजें वह चाहता था उन्हें बाहर निकालने की कोशिश की। उनमें से कुछ की मौत हो गई क्योंकि वे वस्त्र उनकी रक्षा नहीं कर सके। उनका विश्वास उन्हें नहीं बचा सका क्योंकि उन्होंने किसी ऐसी चीज़ पर विश्वास कर लिया था जो सत्य नहीं था।

परमेश्वर, स्वर्ग और नरक वास्तविक हैं। न्याय के दिन हर एक व्यक्ति को अपने सभी पापों का हिसाब देना होगा, और हर व्यक्ति अनंत काल के लिए या तो स्वर्ग या नरक में जाएगा। अगर किसी व्यक्ति का धर्म उसे गलत चीज़ पर भरोसा करने के लिए मजबूर करता है, तो परिणाम भयानक और अनंत होंगे। अगर उसका धर्म सत्य नहीं है तो वह उसे नहीं बचा पाएगा। इसलिए धार्मिक तर्क होना चाहिए।

## पंथ के सदस्यों को समझें

यह समझना महत्वपूर्ण है कि पंथ के सदस्य कैसे सोचते और महसूस करते हैं। अगर हम उनकी आवश्यकताओं को नज़रअंदाज़ करते हैं, तो हम सुसमाचार को उस तरीके से पेश करने में विफल हो सकते हैं जिससे उनका ध्यान आकर्षित हो।

इस बारे में सोचें कि आप पहली बार कलीसिया में कैसे आए। यह शायद इसलिए नहीं हुआ क्योंकि किसी ने आपको बहस में हरा दिया था। इसलिए, हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि हम झूठी मान्यताओं में फंसे किसी व्यक्ति को सिर्फ़ बहस में हराकर ही बदल देंगे।

सत्य को प्रमाणित करने के साधन के रूप में तर्क महत्वपूर्ण है, लेकिन अकेले तर्क से किसी व्यक्ति की प्रतिबद्धता में बदलाव नहीं आता।

यह खंड उन लोगों की कुछ विशेषताओं को प्रदान करता है जिन्होंने धार्मिक पंथ में शामिल होने का विकल्प चुना है। ये विशेषताएँ ज़रूरी नहीं कि किसी ऐसे व्यक्ति का वर्णन करें जिसका धर्म उसकी संस्कृति का हिस्सा हो।

► आप उन लोगों के बारे में क्या जानते हैं जो किसी पंथ में शामिल हो गए हैं? उनमें आमतौर पर क्या विशेषताएँ होती हैं?

**(1) पंथ के सदस्य का मानना है कि उनके अगुवे ही सत्य के एकमात्र स्रोत हैं।**

वह सोच सकता है कि वह अपने विश्वास को संस्थापक की शिक्षाओं और पंथ के धर्मग्रंथों से प्राप्त कर रहा है, लेकिन वह उन बातों की व्याख्या अगुवों द्वारा बताई गई बातों के आधार पर करता है। इस तरह वह पंथ के लेखन और प्रकाशन में विरोधाभासों को अनदेखा कर सकता है।

पंथ के अगुवे अपने सदस्यों के लिए सत्य का एकमात्र स्रोत बनने के उद्देश्य से ऐसे अनोखे सिद्धांत सिखाते हैं जो कहीं और देखने को नहीं मिलते। वे भले ही वे बाइबल पर विश्वास करने का दावा करते हों लेकिन वे चाहे लिखित हों या जीवित एक अंतिम अधिकार प्रदान करते हैं, जो व्यवहार में बाइबल को पीछे छोड़ देते हैं।

**(2) पंथ के सदस्य सामान्यतः मसीही कलीसिया पर विश्वास नहीं करते हैं।**

पंथ के सदस्यों को सिखाया जाता है कि मसीही कलीसिया धर्मत्यागी हैं, उनके पास सत्य नहीं है, और उनके पास परमेश्वर की आशीष नहीं है। पंथ के अगुवे लगातार मसीही कलीसियाओं का उपहास कर सकते हैं। इसके विपरीत, सच्ची मसीही कलीसिया स्वीकार करती है कि अन्य कलीसियाओं में भी सत्य है जो किसी व्यक्ति के लिए परमेश्वर को जानने और स्वर्ग जाने के लिए आवश्यक है।

कुछ पंथ के अगुवे नए प्रकाशन का निरंतर प्रवाह बनाए रखते हैं, इसलिए उनके लोग सोचते हैं कि केवल वे ही सत्य का प्राथमिक स्रोत हैं।

**(3) पंथ के सदस्य कलीसिया के इतिहास और परंपरा से अनभिज्ञ होते हैं।**

पंथ के सदस्यों को इस बात की बहुत कम जानकारी होती है कि कलीसिया ने अतीत में किस तरह के मुद्दों का सामना किया है। वे नहीं समझते कि बाइबल को कैसे संरक्षित किया गया। वे नहीं जानते कि कौन से सिद्धांत सुसमाचार की नींव हैं और मसीही धर्म के लिए आवश्यक हैं। उन्हें लगता है कि कलीसिया अपने इतिहास के अधिकांश समय में अपने सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांतों पर गलत रही है। उन्हें एहसास नहीं है कि मूल सिद्धांतों को अस्वीकार करके वे एक नए धर्म का हिस्सा बन गए हैं।

**(4) पंथ के सदस्य उत्पीड़न और संघर्ष की अपेक्षा करते हैं।**

यदि आप किसी पंथ के सदस्य से बहस करते हैं, तो वह यह मान लेता है कि आप धोखेबाज, अज्ञानी और गलत इरादों वाले हैं, तथा संभवतः शैतान के नियंत्रण में हैं।

पंथ के सदस्यों को उम्मीद रहती है कि दूसरे धार्मिक लोग उन्हें सताएँगे। अगर कोई उनके साथ बुरा व्यवहार करता है, तो इससे उन्हें यह यकीन हो जाता है कि वे सही हैं।

**(5) पंथ के सदस्यों की मान्यताएँ एक दूसरे के विरोधाभासी होती हैं।**

ऐसा लगता है जैसे पंथ का सदस्य अपनी मान्यताओं को कई अलग-अलग डिब्बों में रखता है। वह एक डिब्बे की मान्यताओं की तुलना दूसरे डिब्बे की मान्यताओं से नहीं करता। जब लोग विरोधाभासों की ओर इशारा करते हैं तो उसे आश्चर्य होता है, और वह उन्हें हल करने की ज़रूरत महसूस नहीं करता।

**(6) पंथ के सदस्य तर्क से अधिक अनुभव से आश्वस्त होते हैं।**

ऐसा लगता है कि पंथ के सदस्य जब अपने सिद्धांतों को बाहरी लोगों के सामने पेश करते हैं तो वे तर्क का इस्तेमाल करते हैं। हालाँकि, उनका तर्क, पंथ के अंध विश्वास पर आधारित होता है। वे जो पहले से ही मानते हैं, उसका समर्थन करने के लिए तर्क गढ़ते हैं।

उसने पंथ को इसलिए स्वीकार किया क्योंकि उसे सदस्यों से प्रेम और स्वीकृति मिली, या फिर उसने उनकी आराधना के समय, या फिर किसी व्यक्तिगत आत्मिक अनुभव के कारण महसूस किया। पंथ के साथ संबंध बनाने के बाद, उसने उनकी शिक्षाओं को बिना उनका मूल्यांकन किए स्वीकार करना आरम्भ कर दिया। जब बाहरी लोग सिद्धांतों पर बहस करते हैं, तो उसे लगता है कि वे समझ ही नहीं पाते कि उसने क्या अनुभव किया। उसे लगता है कि अगर वह उन्हें बहस से आगे बढ़ाकर अनुभव में ले जा सके, तो वे आश्वस्त हो जाएँगे।

**(7) पंथ के सदस्य एक अलग सुसमाचार पर विश्वास करते हैं।**

लोगों को वफ़ादार बनाने के लिए, एक पंथ केवल छोटे-मोटे सिद्धांतों में ही अद्वितीय नहीं हो सकता; उसे किसी ज़रूरी चीज़ में अद्वितीय होना चाहिए। यही कारण है कि एक पंथ के विशिष्ट सिद्धांतों में एक अलग सुसमाचार शामिल होता है। पंथ के सदस्यों का मानना है कि उद्धार केवल पंथ के ज़रिए ही संभव है।

**(8) पंथ का सदस्य आत्मिक रूप से असंतुष्ट होता है।**

क्योंकि वह बचा हुआ नहीं है, इसलिए उसे क्षमा का आश्वासन नहीं है; उसे पाप की शक्ति पर विजय नहीं मिली है; उसे परमेश्वर के साथ सम्बन्ध से मिलने वाला आनन्द नहीं मिला है; और उसे अपने साथी पंथ के सदस्यों के साथ सच्ची मसीही संगति नहीं मिली है। उसे सुसमाचार सुनने की आवश्यकता है।

## झूठे धर्मों की उत्पत्ति को समझें

► झूठे धर्म कहाँ से आते हैं?

यह विश्वास करना गलत है कि झूठे धर्म केवल लालच से, झूठे अनुभव से, या दुष्ट आत्मा से उत्पन्न होते हैं, क्योंकि यह धर्म की जटिलता को समझने में असफलता है। झूठे धर्मों का उत्तर देते समय, हमें उनकी उत्पत्ति के कई तत्वों को समझना चाहिए।

**(1) मानवीय तर्क**

झूठे धर्मों को अकसर बुद्धिमान लोगों द्वारा विकसित और समझाया जाता है जो परमेश्वर के प्रकाशन और पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन के बिना धार्मिक विश्वासों के बारे में तर्क करते हैं (1 कुरिन्थियों 2:6-9)।

**(2) व्यक्तिगत लाभ की मंशा**

सभी धार्मिक शिक्षक ईमानदार नहीं होते। बाइबल सिखाती है कि झूठे सिद्धांत उन लोगों द्वारा सिखाए जाते हैं जिनका विवेक सुन्न है, जो सत्य को अस्वीकार करते हैं और पाखंडी हैं (1 तीमुथियुस 1:5-6, 19, 1 तीमुथियुस 4:2)। कुछ धार्मिक अगुवे अपने झूठे सिद्धांतों से धनी बन गए हैं (2 पतरस 2:1-3)

**(3) आत्मिक अंधापन**

जो लोग परमेश्वर के साथ सम्बन्ध में नहीं हैं, वे आत्मिक रूप से अंधे हैं। उनमें न केवल आत्मिक समझ की कमी है, बल्कि उनकी स्वाभाविक समझ भी सही नहीं है (2 कुरिन्थियों 4:3-4)।

**(4) सत्य की अस्वीकृति**

पवित्र आत्मा संसार को पाप, धार्मिकता और न्याय के विषय में निरुत्तर करने में विश्वासयोग्य है (यूहन्ना 16:7-11)। जो व्यक्ति सत्य को अस्वीकार करता है, वह जानबूझकर इसका चुनाव करता है। इसलिए, उसके मन को बदलने के लिए उसे मनाना और व्याख्या करना पर्याप्त नहीं हैं। बाइबल कहती है कि जो व्यक्ति आवश्यक सिद्धांतों पर गलत धारणाओं में रहता है, उसे कलीसिया से खारिज कर दिया जाना चाहिए क्योंकि वह पाप कर रहा है (तीतुस 3:10-11)।

**(5) आत्मिक अनुभव**

झूठा धर्म सिर्फ़ खोखला कर्मकांड नहीं है। झूठी उपासना में दुष्टात्माएँ शामिल होती हैं। बाइबल हमें बताती है कि जो लोग मूर्तियों की पूजा करते हैं, वे दुष्टात्माओं की आराधना करते हैं (1 कुरिन्थियों 10:20-21)। इसका अर्थ यह है कि झूठे धर्मों के लोगों को आत्मिक अनुभव हो सकते हैं।

**(6) झूठा प्रकाशन**

झूठे धर्मों के सिद्धांत सभी मानव निर्मित नहीं हैं। बाइबल हमें बताती है कि कुछ सिद्धांत दुष्टात्माओं से आते हैं (1 तीमुथियुस 4:1)।

► कम से कम छह ऐसे कारक हैं जो झूठे धर्म के निर्माण में योगदान दे सकते हैं। इनमें से कितने को आप बिना पाठ को देखे याद कर सकते हैं?

**पंथों की सामान्य विशेषताएँ**[1]

- यह समूह अपने मानव अगुवे के प्रति उत्साही होता है और निर्विवाद प्रतिबद्धता प्रदर्शित करता है, तथा उसकी विश्वास प्रणाली और प्रथाओं को पूर्ण सत्य मानता है।
- प्रश्न, संदेह और असहमति को हतोत्साहित वरन दंडित भी किया जाता है।
- यह समूह मन को बदलने वाली प्रथाओं का उपयोग करता है (जैसे ध्यान, मंत्रोच्चार और परमानंद आराधना)।
- अगुवे यह तय करते हैं कि सदस्यों को कैसे सोचना, कार्य करना और महसूस करना चाहिए (उदाहरण के लिए, सदस्यों को कभी-कभी डेटिंग करने, शादी करने या नौकरी बदलने के लिए अनुमति लेनी पड़ती है। अगुवे यह निर्धारित करते हैं कि क्या पहनना है, कहाँ रहना है, और सदस्यों को बच्चे करने चाहिए या नहीं)
- समूह अपने लिए, अपने अगुवे और अपने सदस्यों के लिए एक विशेष, उच्च दर्जे का दावा करता है (उदाहरण के लिए, अगुवे को एक विशेष व्यक्ति या मसीह माना जाता है)।
- अगुवे किसी भी अधिकारी के प्रति जवाबदेह नहीं है।
- नेतृत्व अपने सदस्यों को नियंत्रित करने के लिए शर्म और/या अपराध की भावना उत्पन्न करता है।
- अगुवे या समूह के प्रति समर्पण के लिए सदस्यों को परिवार और मित्रों से संबंध तोड़ने पड़ते हैं, तथा अपने व्यक्तिगत लक्ष्यों में परिवर्तन करना पड़ता है।
- समूह नये सदस्यों को लाने में व्यस्त होता है।
- समूह धन कमाने में व्यस्त रहता है।
- सदस्यों से अपेक्षा की जाती है कि वे समूह और समूह-संबंधी गतिविधियों के लिए अत्याधिक मात्रा में धन समर्पित करें।
- सदस्यों को केवल अन्य समूह सदस्यों के साथ रहने और/ या मेलजोल बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

## सुसमाचार साझा करें

किसी पंथ की खास विशेषताओं को जानना और उसकी गलतियों का खंडन करना अच्छी बात है। हालाँकि, सुसमाचार को बाँटना सबसे महत्वपूर्ण है।

सुसमाचार को साझा करने का अवसर प्राप्त करने के लिए, छोटी-छोटी बातों पर बहस करने में समय बर्बाद न करें। पंथ के सदस्य को उसके पंथ के उन ऐतिहासिक तथ्यों के बारे में बहस करके नाराज़ न करें जिन्हें आप प्रमाणित नहीं कर सकते। उन बिंदुओं पर ध्यान

[1] https://www.apologeticsindex.org/268-characteristics-of-cults से अनुकूलित। 3 जून 2020 को एक्सेस किया गया।

केंद्रित करें जो सुसमाचार के लिए ज़रूरी हैं, और उसे उन बिंदुओं को उत्तर दिए बिना टालने न दें।

जब बातचीत समाप्त हो जाती है, तो सबसे महत्वपूर्ण बात यह कि उन्हें उद्धार पाने का सन्देश मिल गया हो। दूसरी चीज़ों के बारे में बहस करने से उनका उद्धार नहीं हो सकता, भले ही आप उनसे बेहतर तर्क क्यों न दें।

पंथ के सदस्य से बात करते समय, एक मसीही के लिए उस व्यक्ति के प्रति ईमानदारी और चिंता दिखाना महत्वपूर्ण है। मसीही को ऐसे व्यक्ति की तरह होना चाहिए जो अपने मित्र के बारे में चिंतित हो। एक मसीही को यह इस तरह से क्रोधित होना चाहिए कि मानों उसके मित्र को कोई व्यक्ति नुकसान पहुंचा रहा है। यदि पंथ का सदस्य आपको शत्रु के रूप में देखता है, तो वह आपकी बात मानने से इंकार कर देगा। यदि चर्चा प्रतिस्पर्धा की तरह लगती है, तो वह हारने से इंकार कर देगा।

एक मसीही को यह दिखाते हुए कि वह ईमानदारी से समझना चाहता है प्रेम, स्वीकृति, सच्ची चिंता, और सत्य के प्रति खुलापन दिखाना चाहिए।

## कलीसिया को प्रदर्शित करें

एक स्वस्थ स्थानीय कलीसिया, समुदाय में पंथ के प्रभाव पर अंतिम विजय है।

पंथ के सदस्यों का प्रचार केवल व्यक्तियों को राजी करके नहीं किया जा सकता। एक व्यक्ति आमतौर पर अपने धर्म को बिना सोचे-समझे नहीं बदलता कि वह किस समुदाय को छोड़ेगा और किस समुदाय में प्रवेश करेगा। यदि कोई पंथ सदस्य किसी व्यक्तिगत मसीही की गवाही से आकर्षित होने लगता है, तो वह उस समुदाय को देखना चाहता है जिसका प्रतिनिधित्व मसीही करता है। वह देखना चाहता है कि विश्वास वास्तव में कैसे जीया जाता है। वह मानता है कि वह जो संदेश सुन रहा है, उसने पहले से ही एक समुदाय का निर्माण कर दिया है जिसमें वह धर्मांतरित होने पर प्रवेश करेगा।

इसका अर्थ है कि स्थानीय कलीसिया की प्रकृति बिल्कुल महत्वपूर्ण है। किसी ऐसे व्यक्ति के लिए आकर्षक होने के लिए जो किसी दूसरे समुदाय से विश्वास के क्षेत्र में आने पर विचार कर रहा है, स्थानीय कलीसिया में कुछ खास विशेषताएं होनी चाहिए।

► किसी कलीसिया की ऐसी क्या विशेषताएँ हैं जो लोगों को पंथ से दूर अपनी ओर आकर्षित कर सकती हैं ?

### एक आकर्षक स्थानीय कलीसिया की विशेषताएँ

- सदस्य दिखाते हैं कि परमेश्वर के साथ उनका सम्बंध वास्तविक और संतोषजनक है। (पंथ के सदस्यों का परमेश्वर के साथ कोई सम्बंध नहीं होता है।)
- कलीसिया, सिद्धांतों को वास्तविकता के वर्णन के रूप में और परमेश्वर के साथ संबंधों के लिए शर्तों के रूप में प्रस्तुत करती है। (पंथ के सिद्धांत एक दूसरे का खंडन करते हैं और किसी व्यक्ति को परमेश्वर के पास नहीं लाते हैं।)

- कलीसिया यह प्रदर्शित करती है कि उन्हें परमेश्वर की आराधना करने में आनंद आता है। (पंथ की आराधना मानवीय, शारीरिक और शैतानी होती है।)
- कलीसिया के सदस्य अनंत काल के दृष्टिकोण से जीवन के उद्देश्य को दर्शाते हैं। (पंथ अनंत प्राथमिकताओं के लिए काम करने का दावा करते हैं। कलीसिया को यह दिखाना चाहिए कि आज अनंत काल के मूल्यों के साथ कैसे जीना है।)
- कलीसिया सांसारिक लक्ष्यों के बजाय सेवकाई को प्राथमिकता देती है। (पंथ सेवकाई के प्रति प्रतिबद्धता की मांग करते हैं, लेकिन उनके अगुवों के सांसारिक लक्ष्य होते हैं।)
- कलीसिया का संदेश गहरी आत्मिक आवश्कताओं को पूरा करता है। (पंथ के पास ऐसा सुसमाचार नहीं है जो आत्मिक आवश्कताओं को पूरा करता हो।)
- कलीसिया विश्वास का एक परिवार है जो अपने सदस्यों से प्रेम करती है और उनकी परवाह करती है। (पंथ अपने सदस्यों की देखभाल करने का दावा कर सकता है, लेकिन उसके पास सच्ची मसीही संगति नहीं हो सकती।)

► आप उस कलीसिया में क्या विशिष्ट कार्य देखने की अपेक्षा करेंगे जिसमें सूचीबद्ध विशेषताएं हों?

## पवित्र आत्मा पर निर्भर रहें

हमेशा याद रखें कि केवल पवित्र आत्मा ही पापियों को उनके अपराध का एहसास करा सकता, सत्य को समझा सकता, और परमेश्वर को जानने की इच्छा जगा सकता है। एक प्रचारक तब तक प्रभावी नहीं हो सकता जब तक कि उसे पवित्र आत्मा द्वारा निर्देशित और अभिषिक्त न किया जाए।

► आप उस व्यक्ति के बीच अंतर का वर्णन कैसे करेंगे जो पवित्र आत्मा पर निर्भर करता है और उस व्यक्ति के बीच जो उस पर निर्भर नहीं करता है?

# पाठ 3
# मोर्मोन धर्म

## पहली मुलाकात

आरव की मुलाकात उन लोगों के साथ तब हुई जब वह पार्क के रास्ते अपने घर जा रहा था। वे दो युवक थे जिन्होंने काली पैंट और सफेद शर्ट पहनी थी, और उन्होंने अपने नाम का बिल्ला लगा रखा था। वे बड़े मिलनसार थे और वे उसके साथ उनके धर्म के बारे में बात करना चाहते थे। आरव ने उनकी बातों को सुना और उसने बहुत अधिक प्रश्न नहीं पूछे। वे किसी सामान्य कलीसिया के लोग लग रहे थे और वही बातें कर रहे थे जो उसने चर्च में सुनी थीं। उन्होंने कहा की वे Church of Jesus Christ of Latter-Day Saints से हैं जिन्हें मोर्मोन के नाम से भी जाना जाता है।

## वचन का अध्ययन – भाग 1

► यशायाह 41 को ऊँची आवाज में मिलकर पढ़ें। प्रत्येक छात्र एक अनुच्छेद लिखे जो इस पवित्रशास्त्र के अंश का सारांश प्रस्तुत करे। यह अंश हमें परमेश्वर के बारे में क्या बताता है? प्रत्येक छात्र कथनों की एक सूची बनाए। जो आपने लिखा है उस पर सामूहिक रूप से चर्चा करें।

## मोर्मोन धर्म

### उत्त्पत्ति और इतिहास

मोर्मोन धर्म जोसेफ स्मिथ नाम के एक व्यक्ति के साथ शुरू हुआ। जोसेफ ने दावा किया कि 1820 में एक दिन, उन्होंने प्रार्थना की कि परमेश्वर उन्हें दिखाएं कि कौन सी कलीसिया सही है। प्रार्थना करते समय, उन्होंने एक दर्शन देखा। उसने श्वेत वस्त्रों में दो व्यक्तियों को देखा, जो यीशु और पिता परमेश्वर थे। परमेश्वर ने उससे कहा कि कोई भी कलीसिया सही नहीं थी और उनकी मान्यताएँ घृणित थीं।

► इस दर्शन में बाइबल के अनुसार कौन सी बातें गलत हैं?

बाद में जोसफ ने दावा किया कि उसने एक दर्शन देखा जिसमे उसे बताया गया कि उसे कहीं खोदने पर लिखी हुई सोने की प्लेट्स मिलेंगी। उसने जादुई चश्मे की सहायता से उन लिखी हुई बातों का अनुवाद किया और उन्हें मोर्मोन की पुस्तक के रूप में प्रकाशित कर दिया। किसी और ने कभी प्लेटों या चश्मे को नहीं देखा क्योंकि स्वर्गदूत उन्हें सुरक्षित रखने के लिए स्वर्ग वापस ले गया।

जोसफ मेसोनिक लॉज का सदस्य था उसने मोर्मोंवाद के सभी रीतियों को मेसोनरी की नियमावली से ही नक़ल किया था, जिसमे खून की कसम, पासवर्ड और गुप्त तरीके से हाथ मिलाना शामिल था।

***बाइबल कहती है कि प्रेरितों का कोई गुप्त धर्म नहीं था, बल्कि वे जो भी विश्वास करते थे वह प्रगट था, 2 कुरिन्थियों 4:2 और 2 तीमुथियुस 2:2 को देखें।***

मोर्मोन कलीसिया की स्थापना 1830 में न्यूयॉर्क में हुई थी। 1839 में, वे पहले नावू, इलिनोइस, फिर माइसोरी चले गए। स्मिथ ने कहा कि माइसोरी मोर्मोन के लिए प्रतिज्ञा किया गया देश था, और यह मंदिर माइसोरी में, स्वतंत्रता पर बनाया जाएगा।[2] लेकिन मंदिर कभी नहीं बना, और मोर्मोन फिर वापस चले गए। स्मिथ ने कई भविष्यवाणियां कीं जो कभी सच नहीं हुईं।

***बाइबल कहती है कि यदि कोई जन भविष्यद्वाणी करे और वह पूरी न हो, तो वह भविष्यद्वक्ता नहीं है, व्यवस्थाविवरण 18:22 देखें।***

स्मिथ ने कहा कि, "मेरे पास किसी भी आदमी की तुलना में घमंड करने के लिए अधिक है। मैं एकमात्र ऐसा आदमी हूं जो आदम के दिनों से अब तक पूरी कलीसिया को एक साथ रखने में सक्षम रहा है। पूरे का एक बड़ा बहुमत मेरे साथ खड़ा रहा है। न पौलुस, यूहन्ना, पतरस ने और न ही यीशु ने इस काम को किया। मैं इस बात पर गर्व करता हूँ कि मेरे जैसे काम किसी ने भी नहीं किये। यीशु के अनुयायी उससे दूर भाग गए; लेकिन अंतिम दिनों के संत अभी तक मेरे साथ हैं।"[3]

जोसफ ने उसके बहुविवाह की निंदा करने वाले समाचार पात्र की प्रिंटिंग प्रेस पर आक्रमण करके उसे नष्ट कर दिया। जब जोसेफ मुकदमे की प्रतीक्षा में जेल में था, एक भीड़ ने जेल पर हमला किया और जोसेफ और उसके भाई हीराम को मार डाला।

***बाइबल कहती है कि एक पासबान को घमंडी, क्रोधी और मारपीट करने वाला नहीं होना चाहिए, तीतुस 1:7 देखें।***

स्मिथ ने अपने बेटे को अपने उत्तराधिकारी के रूप में नामित किया था, लेकिन स्मिथ की मृत्यु के बाद आंदोलन के अधिकांश लोगों ने ब्रिघम यंग का अनुसरण किया और "प्रतिज्ञा के स्थान " को छोड़कर सौल्ट लेक शहर चले गए।

मोर्मोनवादी विश्वास करते हैं कि वास्तविक मसीहत प्रेरितों की मृत्यु के साथ समाप्त हो गई थी और जब तक स्मिथ ने मोर्मोन कलीसिया को आरम्भ नहीं किया, तब तक यह पृथ्वी पर अस्तित्व में नहीं थी।

► मोर्मोन कलीसिया की वे प्रारम्भिक घटनाएँ कौन सी हैं जिनकी वजह से हमारे मन में संदेह उत्पन्न होता है कि क्या यह वास्तव में धरती पर सच्ची मसीहियत की पुनर्स्थापना है ?

**वर्तमान प्रभाव**

कई अलग-अलग मोर्मोन संप्रदाय हैं जो जोसेफ स्मिथ द्वारा शुरू किए गए लेकिन मूल आंदोलन से अलग हो गए हैं। उनमें से कुछ बहुत छोटे हैं।

---

[2] Joseph Smith, *Doctrine and Covenants*, Section 57
[3] Joseph Smith, "26 May 1844 (Sunday Morning)," in *The Words of Joseph Smith*, accessed July 19, 2024, https://rsc.byu.edu/words-joseph-smith/26-may-1844-sunday-morning.

मोर्मोन की सबसे बड़ी कलीसिया का मुख्यालय साल्ट लेक सिटी, यूटा में है और लगभग 17 मिलियन की विश्वव्यापी सदस्यता का दावा करता है।[4] वे 188 भाषाओं में सामग्री प्रकाशित करते हैं।

उनके पास लगभग 55,000 पूर्णकालिक मिशनरी हैं। मिशनरी आमतौर पर युवा वयस्क होते हैं जो 1 ½ या 2 साल के लिए स्वयंसेवा करते हैं उन्हें बिना चुने भी उन स्थानों पर भेजा जा सकता है जहाँ जहाँ पर मोर्मोन की सेवकाई हैं। वे बिना किसी वेतन के काम करते हैं।

**मोर्मोन के कठिन सिद्धांत**

***बहुविवाह वाद***

जोसफ स्मिथ ने दावा किया कि बहुविवाह को परमेश्वर द्वारा मृत्यु के बाद मनुष्यों के ईश्वर बनने के तरीके के रूप में आज्ञा दी गई थी, जो प्रत्येक मोर्मोन का अंतिम लक्ष्य था। पुरुषों को अनंत काल के लिए कई पत्नियां रखनी चाहिए थीं, ताकि वे नई दुनिया को उसी तरह से आबाद कर सकें जैसे परमेश्वर ने पृथ्वी को आबाद किया था।[5]

***बाइबल कहती है कि एक पास्टर की केवल एक ही पत्नी होनी चाहिए, तीतुस 1:6 देखें।***

स्मिथ ने 27 पत्नियों से शादी की थी। सबसे छोटी पत्नी 14 साल की थी। उनमें से कई पहले से ही अन्य पुरुषों से विवाहित थीं, लेकिन स्मिथ ने कहा कि यदि पिछले विवाह मोर्मोनवाद के बाहर किए गए थे तो वे वैध नहीं थे। स्मिथ के बाद अगुवे बने ब्रिघम यंग की 57 पत्नियां और 165 बच्चे थे।

***बाइबल कहती है कि एक व्यक्ति जो तलाकशुदा व्यक्ति से शादी करता है वह व्यभिचार करता है मत्ती 5:32 देखें।***

स्मिथ ने कहा कि बहुविवाह परमेश्वर की अनन्त वाचा थी, और यह दुनिया की नींव से पहले स्थापित की गई थी। बाद में मोर्मोन चर्च के प्रेरितों ने कहा कि बहुविवाह ईश्वरत्व[6] तक पहुंचने का एकमात्र तरीका है और इसे कभी नहीं बदला जाएगा।

मोर्मोन ने 1890 तक बहुविवाह का अभ्यास जारी रखा, उस समय संयुक्त राज्य सरकार ने चर्च की भूमि को जब्त करने की धमकी दी क्योंकि वे कानून तोड़ रहे थे। उस समय, मोर्मोन भविष्यद्वक्ता वुड्रूफ़ ने दावा किया कि परमेश्वर ने एक प्रकाशन में उन्हें बताया कि बहुविवाह समाप्त हो गया है।

► अधिकांश मोर्मोन अब बहुविवाह का अभ्यास नहीं करते हैं। उनके बहुविवाह का इतिहास अभी भी उनकी विश्वसनीयता के लिए एक समस्या क्यों है?

---

[4] Facts and Statistics | Worldwide Statistics," The Church of Jesus Christ of Latter-day Saints, https://newsroom.churchofjesuschrist.org/facts-and-statistics, 11 अप्रैल, 2023 को एक्सेस किया गया।

[5] Joseph Smith, *Doctrine and Covenants*, Section 132

[6] Brigham Young, *Journal of Discourses,* Volume 11, 269

### *जातिवाद*

मोर्मोन धर्म सिद्धान्त के अनुसार, प्रत्येक मनुष्य जन्म लेने से पहले स्वर्ग में एक आत्मा था। स्वर्ग में एक युद्ध हुआ और जिन लोगों ने परमेश्वर के लिए अपनी पूरी लड़ाई नहीं लड़ी, उन्हें काली चमड़ी से शापित कर दिया गया। इस पैराग्राफ में उद्धृत पुरुष मोर्मोन कलीसिया के सभी अध्यक्ष थे और अभी भी उन्हें मोर्मोन द्वारा परमेश्वर के भविष्यद्वक्ता माना जाता है। जोसफ स्मिथ ने कहा कि यदि अश्वेत लोग मोर्मोन सिद्धांतों पर विश्वास करते हुए सही से जीवन व्यतीत करते हैं, तो कई पीढ़ियों के बाद उनकी त्वचा का रंग हल्का हो जाएगा। ब्रिघम यंग ने कहा कि काली त्वचा और सपाट नाक कैन का अभिशाप है।

उन्होंने कहा कि यह ईश्वर का एक शाश्वत सिद्धांत है कि अफ्रीकी रक्त वाला व्यक्ति याजकपद धारण नहीं कर सकता। उन्होंने यह भी कहा कि अश्वेत लोगों गुलामी एक ईश्वरीय कार्य है। जोसेफ फील्डिंग स्मिथ ने कहा कि अश्वेत लोगों को दुनिया में जो कुछ मिल रहा है वह उनकी आत्माओं द्वारा पैदा होने से पहले किये गए कामों का परिणाम है। डेविड मैके ने कहा कि नीग्रो के खिलाफ कलीसिया का भेदभाव मनुष्य ने नहीं बल्कि परमेश्वर ने शुरू किया था।

***बाइबल कहती है कि मसीह में राष्ट्रीयता और जातीय भेद नहीं हैं गलातियों 3:28।***

मोर्मोनवाद में, प्रत्येक पुरुष सदस्य को याजक बनना चाहिए। क्योंकि उनके अधिकांश इतिहास में, मोर्मोन लोगों ने अश्वेत पुरुषों को याजक बनने की अनुमति नहीं दी, जिसका अर्थ हुआ कि वे वास्तव में सदस्य नहीं थे। 1978 में, मोर्मोन चर्च ने एक नया प्रकाशन प्राप्त करने का दावा किया जिसने प्रारंभ से अश्वेत लोगों के बारे में कही गयी सारी बातों को बदल दिया, और अब वे अश्वेत पुरुषों को याजक बनने की अनुमति देते हैं।[7]

*स्वर्गदूत मोरोनी की एक मूर्ति हर मॉर्मन मंदिर के शीर्ष पर है।*

► मोर्मोन अन्य जातियों के साथ समान शर्तों पर अश्वेत लोगों को स्वीकार करने का दावा करते हैं। उनके नस्लवाद का इतिहास अभी भी उनकी विश्वसनीयता के लिए एक समस्या क्यों है?

### *भीतरी वस्त्र*

सभी मोर्मोन सदस्यों को अपने बाहरी कपड़ों के नीचे विशेष कपड़े पहनने की आवश्यकता होती है। विशेष कपड़े सफेद होते हैं और शरीर के अधिकांश हिस्से को ढांक कर रखते हैं। यह उन्हें आध्यात्मिक सुरक्षा प्रदान करने वाला है। यह कलीसिया के प्रति उनकी विश्वासयोग्यता को दर्शाता है। उन्हें इसे दिन-रात पहनना होता है।

### मोर्मोन के विधर्मी सिद्धांत

मोर्मोन के प्रत्येक सदस्य के लिए यह विश्वास करना अनिवार्य है कि जोसफ स्मिथ परमेश्वर का भविष्यद्वक्ता था और मोर्मोन *की पुस्तक* मसीह का एक और नियम है, जो अधिकार में बाइबल के बराबर है।

---

[7] Image by ErikaWittlieb from Pixabay, retrieved from https://pixabay.com/photos/moroni-angel-statue-prophet-mormon-1467937/.

उनके पास प्रकाशन की एक पुस्तक भी है जिसे सिद्धांत और वाचाओं की पुस्तक कहा जाता है, उनका मानना है यह कि बाइबल की तरह ही प्रेरित है। उनका मानना है कि बाइबल उनके सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांतों को स्थापित करने के लिए पर्याप्त नहीं है।

> "भाषा इसे सकारात्मक रूप से कह सकती है, पुराना नियम पुष्टि करता है कि परमेश्वर अनंत है, बिना शुरुआत या अंत के, समय की सीमाओं को पार करता है।
>
> - डब्ल्यूटी पुरकिसर
>
> परमेश्वर, *मनुष्य और उद्धार*

मोर्मोन दावा करते हैं कि उनका धर्म सच्चा मसीही धर्म है। उनके कई सिद्धांत सुसमाचार का समर्थन करने वाले बाइबल आधारित, ऐतिहासिक सिद्धांतों का खंडन करते हैं। मोर्मोन सदस्यों से बात करते समय विधर्मियों का पता लगाना कठिन है क्योंकि उनमें से कई नहीं जानते कि उनके भविष्यद्वक्ताओं ने क्या सिखाया।

मोर्मोन कलीसिया का मानना है कि परमेश्वर एक समय पर हमारे जैसे मनुष्य थे, लेकिन बाद में वह विकसित होकर परमेश्वर बन गए और अब भी वैसे ही हैं।[8] वे समझते हैं कि परमेश्वर पिता का शरीर है। उनकी कई पत्नियां हैं। उनके बच्चे पहले आत्माओं के रूप में जन्म लेते हैं, फिर उन्हें मनुष्यों के रूप में जन्म लेने के लिए पृथ्वी पर भेजा जाता है।

मोर्मोन कहते हैं कि वे मानते हैं कि यीशु का जन्म एक कुंवारी से हुआ था, लेकिन मोर्मोन कलीसिया सिखाती है कि परमेश्वर पिता ने मरियम को अपने शरीर का उपयोग करके प्राकृतिक तरीके से गर्भवती किया।

***बाइबल कहती है कि कुँवारी मरियम पवित्र आत्मा द्वारा गर्भवती हुई, लूका 1:34-35 और मत्ती 1:18 देखें। बाइबल यह भी कहती है कि परमेश्वर आत्मा हैं, यूहन्ना 4:24।***

मोर्मोन विश्वास करते हैं कि यीशु के पृथ्वी पर जन्म लेने से पहले अन्य स्वर्गदूतों की तरह एक आत्मा थे; वह परमेश्वर नहीं था।

***बाइबल कहती है कि यीशु परमेश्वर का वचन हैं और वह पृथ्वी पर पैदा होने से पहले भी परमेश्वर था, देखें यूहन्ना 1:1-2, 14।***

मोर्मोन विश्वास करते हैं कि पवित्र आत्मा और यीशु पिता से अलग हैं, और वे विश्वास करते हैं कि वे पिता के तुल्य नहीं हैं। वे त्रिएकत्व में विश्वास नहीं करते।

► कुछ शब्दों में, आप परमेश्वर के प्रति मोर्मोन के दृष्टिकोण के साथ समस्या की व्याख्या कैसे करेंगे?

मोर्मोन का मानना है कि एक पुरुष मोर्मोन परमेश्वर की तरह ही बढ़ सकता है। उनका मानना है कि कई लोग पहले ही ऐसा कर चुके हैं, जिससे कई देवता बने हैं। प्रेरित लोरेंजो स्नो ने कहा, "परमेश्वर एक समय पर मनुष्य के सामान थे और जैसा परमेश्वर हैं, वैसा ही मनुष्य बन सकता है।

---

[8] Joseph Smith में *History of the Church*, खंड 6, 305

जोसफ स्मिथ ने कहा, "यहाँ अनन्त जीवन - अर्थात एकमात्र बुद्धिमान और सच्चे परमेश्वर को जानना है; और तुम्हें सीखना होगा कि कैसे स्वयं परमेश्वर और परमेश्वर के राजा और याजक बनना है, जैसा कि सभी देवताओं ने तुमसे पहले किया है।

मोर्मोन मानते हैं कि केवल कुछ ही लोग अनन्त नरक में जाएंगे। मोर्मोन का कहना है कि ज्यादातर लोगों को मृत्यु के बाद मोर्मोन धर्म को स्वीकार करने का मौका दिया जाएगा। विश्वासयोग्य मोर्मोन स्वर्ग के उच्चतम स्तर पर जाएंगे।

***बाइबल कहती है कि बहुत से लोगों को शैतान और दुष्टात्माओं के साथ नरक में भेजा जाएगा, मत्ती 25:41 देखें।***

मोर्मोन विश्वास करते हैं कि उद्धार परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य सेवा के जीवन के लिए दिया जाने वाला प्रतिफल है। मोर्मोन उद्धार के व्यक्तिगत् आश्वासन होने का दावा नहीं करते हैं।

***बाइबल कहती है कि उद्धार परमेश्वर का उपहार है, जो कामों से अर्जित नहीं किया जाता है, इफिसियों 2:8-9 देखें।***

मोर्मोन विश्वास करते हैं कि अन्य सभी कलीसियाएँ शैतानी हैं, और मोर्मोन कलीसिया के बिना कोई उद्धार नहीं है। मोर्मोन और मसीहियों के बीच कोई वास्तविक एकता संभव नहीं है।

► मसीही विश्वासियों और मोर्मोनवादियों के मध्य एकता क्यों असम्भव है? इसके कई कारण बताइए।

**मोर्मोन की रणनीति**

मोर्मोन लोगों से प्रार्थना करने के लिए कहते हैं कि परमेश्वर उन्हें दिखाएगा कि क्या मोर्मोन की पुस्तक सत्य है और क्या जोसफ स्मिथ एक भविष्यद्वक्ता थे। बहुत से लोग उस प्रार्थना के उत्तर के रूप में अपने दिल में जलन महसूस करने का दावा करते हैं। वे सोचते हैं कि जलती हुई भावना पुष्टि करती है कि मोर्मोनवाद सच है। भावना उन्हें पुष्टि नहीं कराती कि वे व्यक्तिगत रूप से बचाए गए हैं।

"पवित्र शास्त्र में उद्धार के लिए आवश्यक सब कुछ है। कुछ भी जो बाइबल में शामिल नहीं है, और इससे साबित नहीं किया जा सकता है, उसे विश्वास का एक लेख या उद्धार की आवश्यकता नहीं बनाया जाना चाहिए। हम पुराने और नए नियम की उन विहित पुस्तकों पर विचार करते हैं - जिनके पवित्र शास्त्र होने के अधिकार पर कलीसिया में कभी संदेह नहीं किया गया है
- अनुकूलित इंग्लैंड के चर्च के धर्म के लेख से

***बाइबल कहती है कि हमें किसी अलग सुसमाचार पर विश्वास नहीं करना चाहिए, चाहे कोई स्वर्गदूत ही आकर हमें बताए, गलातियों 1:8 देखें।***

मोर्मोनवादी बाइबल में विश्वास करने का दावा करते हैं, परन्तु बाइबल उनके धर्मसिद्धान्तों का खण्डन करती है। वे कहते हैं कि नकल और अनुवाद में गलतियों के कारण बाइबल में त्रुटियाँ हैं। वे कहते हैं कि बाइबल में त्रुटियों के कारण आगे प्रकाशन की आवश्यकता थी। एक मोर्मोनवादी के लिए, सर्वोच्च अधिकार जोसफ स्मिथ का प्रकाशन है। क्योंकि वे विश्वास करते हैं कि वह परमेश्वर का भविष्यद्वक्ता था, वे मोर्मोनवाद की उन सभी मान्यताओं को स्वीकार करते हैं, जो बाइबल के विपरीत हैं।

***यीशु ने कहा था कि आकाश और पृथ्वी टल जाएँगे, परन्तु उसकी बातें कभी टलेंगी नहीं, मत्ती 24:35। उसने कहा कि परमेश्वर के वचन में से कुछ भी तब तक नहीं खोएगा जब तक कि यह सब पूरा न हो जाए, मत्ती 5:18 देखें। पतरस ने कहा***

***कि परमेश्वर का वचन सदा बना रहता है, देखें 1 पतरस 1:25। परमेश्वर हमसे अपेक्षा करता है कि हम नए प्रकाशन की खोज करने के बजाय उसके वचन पर भरोसा करें।***

> "मैं विश्वास करता हूं ... यीशु मसीह, उसका एकलौता पुत्र हमारा प्रभु; जो पवित्र आत्मा द्वारा गर्भ में आया था।
> - रसूलों का अकीदा
> (प्रेरितों के सिद्धांत को संक्षेप में प्रस्तुत करने के लिए पहली शताब्दी में लिखा गया था।

मोर्मोन ईसाइयों द्वारा उपयोग किए गए समान शब्दों का उपयोग करते हैं, लेकिन उनका मतलब अलग-अलग चीजें हैं। वे कहते हैं कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है, लेकिन उनका अर्थ यह नहीं है कि वह परमेश्वर है। वे कहते हैं कि पवित्र आत्मा ईश्वरत्व का तीसरा सदस्य है, लेकिन वे त्रित्व में विश्वास नहीं करते हैं।

वे कहते हैं कि यीशु का जन्म एक कुंवारी से हुआ था, लेकिन वे मानते हैं कि परमेश्वर पिता के पास एक भौतिक शरीर है और उसने इसका इस्तेमाल मरियम को प्राकृतिक तरीके से गर्भवती करने के लिए किया था।

वे कहते हैं कि यीशु ने हमारे पापों के प्रायश्चित के रूप में दुख उठाया और मर गया, और वह हमारी क्षमा के लिए प्रार्थना कर सकते हैं, लेकिन वे मानते हैं कि स्वर्ग एक विश्वासयोग्य जीवन का एक प्रतिफल है।

मोर्मोन वास्तविक मसीही धर्म होने का दावा करते हैं। वे दावा करते हैं कि अन्य सभी कलीसिया झूठी हैं। लेकिन अगर कोई व्यक्ति मोर्मोन धर्म के सभी सिद्धांतों को समझता है और विश्वास करता है, तो वह पवित्रशास्त्र के सुसमाचार पर विश्वास नहीं करता है और मसीही नहीं है।

► अब वापस जाएं और ***बोल्ड और इटैलिक किए गए*** पाठ और प्रत्येक पवित्रशास्त्र को पढ़ें।

## सिद्धान्त की हस्तपुस्तिका का उपयोग करना

► निम्नलिखित सूची में दिए गए सभी धर्म सिद्धान्तों का मोर्मोंवादियों द्वारा इन्कार कर दिया है। प्रत्येक सिद्धांत के महत्व और इसके प्रमाण को देखने के लिए *सिद्धान्त की हस्तपुस्तिका* को देखें। सुनिश्चित करें कि आप समझते हैं कि संदर्भित छंद सिद्धांत को कैसे साबित करते हैं।

(1) बाइबल धर्म सिद्धान्त के लिए पर्याप्त है।

(2) केवल एक ही परमेश्वर हैं।

(3) परमपिता परमेश्वर मनुष्य नहीं है।

(4) परमेश्वर कभी नहीं बदले।

(5) यीशु परमेश्वर हैं।

(7) पवित्र आत्मा परमेश्वर है।

(8) परमेश्वर त्रियक्ता है।

(9) उद्धार केवल मसीह के प्रायश्चित से ही है।

(11) हम विश्वास के द्वारा उद्धार पाते हैं।

(12) हमें उद्धार का व्यक्तिगत आश्वासन मिल सकता है।

(13) बचाए न गए लोग अनन्त दण्ड भोगेंगे।

## सुसमाचार प्रसार

मोर्मोन के मन को बदलना असंभव प्रतीत हो सकता है, परन्तु सच्चाई यह है कि हजारों मोर्मोन प्रत्येक वर्ष मोर्मोन कलीसिया को छोड़ देते हैं।

मोर्मोन को यह दिखाने का प्रयास करें कि उसकी सबसे महत्वपूर्ण मान्यताएँ सुसमाचार के विपरीत हैं। *सिद्धान्त की हस्तपुस्तिका में दिए गए प्रमाणों का* उपयोग करें। यह सबूत किसी ऐसे व्यक्ति के लिए प्रदान करें जो मोर्मोन धर्म में रुचि रखता है।

क्या मोर्मोन धर्म सही है या नहीं इस सन्दर्भ में प्रार्थना करने के लिए सहमत न हों। यदि आप पहले से ही सच्चाई जानते हैं तो आपको कभी भी परमेश्वर से कुछ दिखाने के लिए नहीं कहना चाहिए। इस तरह से प्रार्थना करना शैतान को आपको भ्रमित करने का एक अनुभव देने का अवसर देता है।

मोर्मोन के पास उद्धार का व्यक्तिगत आश्वासन नहीं है। उनमें से कई इस डर में जीते हैं कि उनका जीवन परमेश्वर द्वारा स्वीकार नहीं किया जाएगा। सुनिश्चित करें कि आप उनके साथ सुसमाचार साझा करते हैं और उन्हें बताते हैं कि उन्हें उद्धार का आश्वासन कैसे मिल सकता है। यह किसी भी चीज़ से अधिक महत्वपूर्ण है जो आप उन्हें बता सकते हैं।

आप अपनी बातचीत के परिणाम नहीं देख सकते हैं। मोर्मोन आपको बातचीत के अंत में यह नहीं बता सकता है कि उसने अपना विचार बदल दिया है। हालाँकि, आप बातचीत के दीर्घकालिक प्रभावों को नहीं जानते हैं। पवित्र आत्मा उस सत्य का उपयोग करना जारी रखेगा जो आपने दिया था।

## एक गवाही

**जोआना** मोर्मोन कलीसिया में बड़ी हुई और उन्होंने जो कुछ भी किया उसमें भाग लिया। उसे मोर्मोन लड़की का एक अच्छा उदाहरण माना जाता था। जब वह आइडाहो विश्वविद्यालय में भाग लेने के लिए घर से निकली, तो उसे एक मसीही बाइबल अध्ययन में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया। वह इस उम्मीद के साथ गई थी कि वह किसी को मोर्मोन धर्म में परिवर्तित होने के लिए राजी कर सकती है। बाइबल अध्ययन के दौरान, उसने बाइबल से परमेश्वर के बारे में ऐसी बातें सीखीं जिन्हें उसने कभी महसूस नहीं किया था। उसने यह भी देखा कि वहाँ के मसीहियों का परमेश्वर के साथ ऐसा रिश्ता था जैसा उसने कभी नहीं किया था। उसने मोर्मोन कलीसिया छोड़ दी और परमेश्वर के लिए जी रही है, भले ही उसके परिवार और उसके अधिकांश मोर्मोन मित्रों ने उसे अस्वीकार कर दिया था। परमेश्वर ने उसे एक नया मसीही परिवार और पहले से अधिक मित्र दिए। **जोआना** कहती है, "जिन लोगों ने मोर्मोन कलीसिया छोड़

दी है और पूरी तरह से परमेश्वर को छोड़ने के बारे में सोच रहे हैं, आप ऐसा मत करो ... परमेश्वर के पास अभी भी आपके लिए एक योजना है।

## वचन का अध्ययन – भाग 2

► अब यशायाह 41 को फिर से पढ़ें। प्रत्येक छात्र एक अनुच्छेद लिखे जिसमें इस अंश का संदेश मोर्मोन्स के अनुयायियों के लिए समझाया गया हो। कुछ छात्र अपनी लिखी बातें साझा कर सकते हैं।

## प्रत्येक पाठ के लिए निर्धारित कार्य

इस कोर्स के दौरान आप उन विभिन्न धर्मों और पंथों के अनुयायियों के साथ बातचीत करेंगे जिनका आप अध्ययन कर रहे हैं। आपको कम से कम 10 विभिन्न धार्मिक समूहों के सदस्यों के साथ बातचीत करने की आवश्यकता होगी। आपको सुसमाचार और अन्य मसीही शिक्षाओं को प्रस्तुत करना होगा।

यदि आपके लिए यह संभव नहीं है कि आप किसी विशेष पाठ में अध्ययन कर रहे धार्मिक समूह के सदस्य को ढूंढ सकें, तो आपको किसी और को ढूंढ लें जो सामग्री सुनने में रुचि रखता है।

आपकी बातचीत के बाद, आप दो रिपोर्ट देंगे।

1. आप दो पेज की रिपोर्ट लिखेंगे और इसे अपने क्लास लीडर को देंगे। इसमें आप धार्मिक समूह की बुनियादी मान्यताओं, विश्वासों के प्रति बाइबल की प्रतिक्रिया, अविश्वासियों के साथ आपकी बातचीत और आपने जो कहा उसके प्रति उनकी प्रतिक्रिया का वर्णन करेंगे।
2. जब आप कक्षा के लिए मिलेंगे तो आप अपने सहपाठियों को बातचीत के बारे में बताएंगे।

10 बातचीतें और लेखन कार्य इस कोर्स के प्राथमिक कार्य हैं।

# पाठ 4
# यहोवा विटनेसेस (यहोवा के साक्षी)

## पहली मुलाकात

उन्होंने समीरा के दरवाज़े को खटखटाया और उसे अवेक पत्रिका दी। आगंतुक एक महिला थी जो अपने दो बच्चों के साथ आई थी। उन्होंने अच्छे कपड़े पहिन रखे थे और वे मिलन सार थे। पत्रिका का मुख पृष्ट बच्चों की अच्छे स्कूल में पढाई में मदद करने के बारे में था। उस महिला ने एक वचन पढ़ा और उस पर व्याख्या की और उसके बाद उसने समीरा से पूछा की क्या वह चाहेगी कि वे बाइबल अध्ययन के लिए उनके पास फिर से आएं। समीरा ने कहा वह इस बारे में विचार करेगी।

## वचन का अध्ययन – भाग 1

► इब्रानियों 1 को ऊँची आवाज में मिलकर पढ़ें। प्रत्येक छात्र एक अनुच्छेद लिखे जो इस पवित्रशास्त्र के अंश का सारांश प्रस्तुत करे। यह अंश हमें यीशु के बारे में क्या बताता है? प्रत्येक छात्र कथनों की एक सूची बनाए। जो आपने लिखा है उस पर सामूहिक रूप से चर्चा करें।

## यहोवा विटनेसेस (यहोवा के साक्षी)

### इतिहास

चार्ल्स रसल ने अपनी विशिष्ट शिक्षाओं को प्रकाशित करने के लिए 1881 में सिय्योन की वॉच टॉवर ट्रैक्ट सोसाइटी शुरू की। इस संगठन ने 1931 में अपना नाम बदलकर यहोवा विटनेसेस कर लिया।

रसेल ने शास्त्र अध्ययन के छ: सेट लिखे। उसने कहा कि लोगों के लिए बेहतर होगा कि वे उसकी पुस्तकों को बिना बाइबल के पढ़ें, बजाय इसके कि वे उसकी पुस्तकों के बिना बाइबल पढ़ें। उन्होंने कहा कि यदि कोई व्यक्ति उसकी पुस्तकों के बिना केवल बाइबल पढ़ता रहे, तो वह दो साल के भीतर अंधेरे में होगा, लेकिन यदि वह बाइबल के बिना केवल उसकी पुस्तकों को पढ़ेगा, तो वह प्रकाश में होगा।

***बाइबल कहती है कि उसका वचन हमारे मार्ग के लिए दीपक है। भजन संहिता 119:105 देखें। भले ही हमारे पास शिक्षक के रूप में कोई व्यक्ति न हो लेकिन पवित्र आत्मा मसीह के अनुयायियों को सिखाता है। 1 यूहन्ना 2:27 देखें।***

यहोवा विटनेसेस के सिद्धांत कई बार बदले गए हैं।

यहोवा विटनेसेस के अगुवों ने कई भविष्यवाणियाँ की हैं जो सच नहीं हुई। मिसाल के लिए, दूसरे अगुवे, रदरफर्ड ने भविष्यद्वाणी की थी कि अब्राहम, इसहाक और याकूब 1925 में दोबारा ज़िंदा होंगे और एक आलीशान घर में रहेंगे जो उसने उनके लिए तैयार किया था। वे नहीं आए, लेकिन वह स्वयं उस घर में रहते थे।

***बाइबल कहती है कि अगर किसी व्यक्ति की भविष्यद्वाणी सच नहीं होती है, तो उस पर भविष्यद्वक्ता के रूप में भरोसा नहीं किया जाना चाहिए, व्यवस्थाविवरण 18:22 देखें।***

यहोवा विटनेसेस का मानना है कि अन्य सभी कलीसिया शैतानी हैं, और उनके संगठन के अलावा कहीं और उद्धार नहीं है।

***यीशु ने चेलों से कहा कि परमेश्वर के सभी सेवक एक ही संगठन में नहीं होंगे, लूका 9:49-50 देखें। उद्धार केवल यीशु में है किसी संस्था या संगठन में नहीं है प्रेरितों 4:10, 12 देखें।***

► वे कौन सी चीज़े हैं जिनके द्वारा आप पहचान सकते हैं कि यहोवा विटनेसेस वाले बाइबलीय मसीही नहीं हैं ?

**वर्तमान प्रभाव**

यहोवा विटनेसेस दावा करते हैं कि वे 239 देशों में काम करते हैं और 900 से ज़्यादा भाषाओं में प्रचार करते हैं। उन्होंने साहित्य के लगभग 40 बिलियन प्रतियाँ छापी हैं।[9] उनके पास लगभग 118,000 मंडलियाँ हैं, और 8 मिलियन से अधिक सक्रिय सदस्यों की सदस्यता है।[10]

यहोवा विटनेसेस का मुख्यालय ब्रुकलिन, न्यूयॉर्क में है।

**यहोवा विटनेसेस के कठिन सिद्धांत**

यहोवा विटनेसेस के लोग न तो सरकारी चुनावों में हिस्सा लेते हैं और न कोई सरकारी पद संभालते हैं, क्योंकि वे मानते हैं कि वे इस दुनिया के राज्यों से अलग हैं।

***बाइबल में, नहेम्याह, मोर्दकै और दानिय्येल जैसे लोगों ने परमेश्वर की सेवा की, लेकिन मूर्तिपूजक राष्ट्रों के लिए भी काम किया, नहेम्याह 1:11-2:1; एस्तेर 8:2, एस्तेर 10:3; और दानिय्येल 6:1-3 देखें।***

वे कभी सेना में कार्य नहीं करते है और वे मानते हैं कि लड़ाई कभी सही नहीं होती है।

वे कोई भी छुट्टी नहीं मनाते हैं, चाहे राष्ट्रीय छुट्टियाँ, ईसाई छुट्टियाँ, या जन्मदिन, क्योंकि उनका मानना है कि सभी उत्सव मूर्तिपूजक रीति-रिवाजों का पालन करते हैं।

---

[9] "What Is the Watch Tower Bible and Tract Society?" Jehovah's Witnesses, https://www.jw.org/en/jehovahs-witnesses/faq/watchtower-society/, accessed on April 11, 2023.
[10] "Fast Facts—Worldwide," Jehovah's Witnesses, https://www.jw.org/en/jehovahs-witnesses/worldwide/, accessed on April 11, 2023.

वे जीवन को बचाने के लिए भी रक्त संक्रमण स्वीकार नहीं करते हैं, क्योंकि शास्त्रों में रक्त खाने की मनाही है।

वे दशमांश नहीं देते हैं, और उनके पादरियों को वेतन नहीं मिलता है।

यहोवा विटनेसेस यह नहीं मानते कि मसीह में अपना विश्वास रखने से एक व्यक्ति को तुरंत बचाया जा सकता है। उनका मानना है कि उसे उनके संगठन में शामिल होना चाहिए, उनके सिद्धांतों को सीखना चाहिए, और उनकी आवश्यकताओं का अभ्यास करना शुरू करना चाहिए। उद्धार एक प्रक्रिया है, और जिस क्षण कोई जान सकता है कि वह बचाया गया है वह निश्चित नहीं है।

***नयी नियमावली में, लोग उस क्षण मसीही बन गये जब उन्होंने पश्चाताप किया और मसीह में अपना विश्वास रखा, प्रेरितों 2:41 व प्रेरितों 8:26-39 देखें। यह सम्भव है, क्योंकि हम कर्मों के द्वारा नहीं, अनुग्रह से अनुग्रह से उद्धार पाते हैं।***

हर एक सदस्य के लिए हर माह साक्षी की रिपोर्ट लिखना अनिवार्य होता है। यदि कोई व्यक्ति रिपोर्ट नहीं देता तो उसे सक्रीय सदस्यों की सूची से बाहर कर दिया जाता है और उस उद्धार प्राप्त विश्वासियों में नहीं गिना जाता है।

***बाइबल कहती है कि स्वर्ग की पुस्तक में सारे उद्धार पाए हुए लोगों के नाम लिखे हुए हैं, लूका 10:20 व प्रकाशितवाक्य 21:27 देखें। उस पुस्तक का धरती के किसी संगठन से कोई सरोकार नहीं है।***

► यहोवा विटनेसेस के अनुसार, किसी व्यक्ति का उद्धार कैसे होता है?

यहोवा विटनेस वाले क्रूस को एक मसीही प्रतीक नहीं मानते, उनका मानना है कि यीशु को लकड़ी के एक खंभे पर मारा गया था।

वे कहते हैं कि त्रिएकता के सिद्धान्त को रद्द कर देना चाहिए क्योंकि यह अतार्किक व् समझने से परे है, जैसे कि वहां ऐसा कुछ भी नहीं होना चाहिए परमेश्वर के स्वभाव में जो हमारी समझ से परे हो।

यहोवा विटनेसेस वाले कहते हैं कि पवित्र आत्मा परमेश्वर नहीं है, लेकिन एक अवैयक्तिक शक्ति है जो परमेश्वर से मिलती है और, बिजली की शक्ति के समान है।

> "मैं एकमात्र प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करता हूं, जो परमेश्वर का एकलौता पुत्र है; जो पुरे संसार के सामने अपने पिता से उत्पन्न हुआ, जो प्रभुओं का प्रभु, ज्योतियों में की ज्योति, ईश्वरों का ईश्वर, जो उत्पन्न हुआ, बनाया नहीं गया ; जो पिता के साथ एक है... और मैं प्रभु और जीवन के दाता पवित्र आत्मा में विश्वास करता हूं, जो पिता और पुत्र से निकलता है; जिसकी पिता और पुत्र के साथ मिलकर उपासना और महिमा की जाती है।
> - निसीन पंथ (325 ईस्वी में कलीसिया द्वारा लिखित।)

वे यीशु के पुनरुत्थान पर विश्वास करते हैं लेकिन वे मानते हैं कि केवल उसका आत्मा उठा था उसका शरीर नहीं।

► इन शिक्षाओं को ‘ कठिन शिक्षाएं’ क्यों कहा जाना चाहिए?

यहोवा विटनेसेस की शिक्षाओं में सबसे बड़ी त्रुटी यह है वे मसीह और पवित्र आत्मा की ईश्वरीयता को नहीं मानते।

यहोवा विटनेसेस वाले खुद को सच्चा मसीही कहते हैं। वे मानते हैं कि बाकि सारी कलिसियाएँ झूठी हैं। लेकिन यदि कोई व्यक्ति यहोवा विटनेस की शिक्षाओं को समझता और उन पर विश्वास करता है, तो वह पवित्रशास्त्र के सुसमाचार पर विश्वास नहीं करता है और मसीही नहीं है।

**यहोवा विटनेसेस के हथकंडे**

विटनेसेस के साथ जुड़ने में दिलचस्पी रखनेवाला एक इंसान कई महीनों तक बाइबल अध्ययन से गुज़रता है। उसे प्राप्त शिक्षाओं के अनुसार अपने जीवन में बदलाव करना होता है। फिर वह बपतिस्मा लेकर "प्रकाशक" बन जाता है, और संगठन से साहित्य वितरित करने लगता है।

औसतन, प्रचारक एक नया सदस्य पाने से पहले 10,000 घंटे गवाही देते हैं।[11]

प्रत्येक सदस्य वितरित करने के लिए संगठन से मुद्रित सामग्री खरीदता है।

वे अपनी मंडलियों को कलीसिया नहीं कहते। वे मानते हैं कि सभी कलीसिया शैतानी हैं। वे अपनी इमारतों को "राज-घर" कहते हैं।

***नया नियम कलीसियाओं के लिए लिखा गया है, प्रकाशितवाक्य 1:4 व 1 कुरिन्थियों 14:33 देखें।***

वे उन लोगों के सामने पवित्रशास्त्र द्वारा अपने सिद्धांतों को साबित करने की कोशिश करते हैं जो बाइबल के बारे में ज्यादा जाने बिना उस पर विश्वास करते हैं। उन्होंने बाइबल का अपना संस्करण प्रकाशित किया है, जिसे द न्यू वर्ल्ड ट्रांसलेशन कहा जाता है, जिसमें परिवर्तन हैं जो उनके सिद्धांत का समर्थन करते हैं। उन्होंने मसीह के ईश्वरत्व को दर्शाने वाले कई पदों को बदल दिया। यह संस्करण वास्तविक बाइबल भाषा विद्वानों द्वारा तैयार नहीं किया गया था।

वे कहते हैं कि यीशु परमेश्वर के पुत्र और संसार के उद्धारकर्ता हैं, और उसी ने उद्धार को संभव बनाया। उनका मानना है कि यीशु परमेश्वर द्वारा बनायी गयी पहली चीज़ थी, लेकिन वह केवल एक सिद्ध व्यक्ति था परमेश्वर नहीं।

> "पुनरुत्थान यीशु का प्रमाण था और है। इसके द्वारा यीशु की पहचान और उनके मिशन की सच्चाई हमेशा के लिए स्थापित हो गई थी।
>
> - विलार्ड टेलर
>
> परमेश्वर, मनुष्य और उद्धार

► कुलुस्सियों 1:16-17 में, न्यू वर्ल्ड अनुवाद ने "अन्य" शब्द को जोड़ दिया, ताकि वचन यह कह सके कि यीशु ने अन्य सभी चीजों को बनाया, वह अन्य सभी चीजों से पहले है, और उसके लिए ही अन्य सभी चीजें मौजूद हैं।

आपके विचार से, यहोवा विटनेसेस ने उस शब्द को क्यों जोड़ा?

► अब वापस जाएं और ***बोल्ड और इटैलिक किए गए*** पाठ और प्रत्येक पवित्रशास्त्र को पढ़ें।

---

[11] Calculated from figures reported in "2022 Grand Totals," Jehovah's Witnesses, https://www.jw.org/finder?wtlocale=E&pub=syr22, accessed on April 11, 2023.

## सिद्धान्त की हस्तपुस्तिका उपयोग करना

► दी गयी सूची में लिखे सिद्धांतों को यहोवा विटनेसेस वाले नहीं मानते हैं। सिद्धांत के महत्त्व और प्रमाण को देखने के लिए *सिद्धान्त की हस्तपुस्तिका* को देखें। सुनिश्चित करें कि आप समझते हों कि संदर्भित पद सिद्धांत को कैसे साबित करते हैं।

(5) यीशु परमेश्वर हैं।

(6) यीशु शारीरिक देह के साथ मृतकों में से जी उठे।

(7) पवित्र आत्मा परमेश्वर है।

(8) परमेश्वर त्रियक्ता है।

(9) उद्धार केवल मसीह के प्रायश्चित से ही है।

(11) हम विश्वास के द्वारा उद्धार पाते हैं।

(12) हमें उद्धार का व्यक्तिगत आश्वासन मिल सकता है।

(13) बचाए न गए लोग अनन्त दण्ड भोगेंगे।

## सुसमाचार प्रचार

यहोवा विटनेसेस के साथ कठोरता से व्यवहार न करें। क्योंकि वे मानते हैं कि उन्हें सच्चाई के लिए सताया जाता है, वे इवैंजेलिकल मसीहियों से अपेक्षा करते हैं कि वे उनके साथ बुरा व्यवहार करेंगे। इसके बजाय, उनके लिए मसीह के प्रेम और एक वास्तविक चिंता दिखाइए। यह शायद उन्हें मसीह तक जीतने का सबसे प्रभावी तरीका है।

छुट्टियों का जश्न मनाने या सेना में सेवा करने जैसे छोटे मुद्दों के बारे में बहस न करें। सुसमाचार की मूल बातों और उद्धार के आश्वासन के बारे में बात करना कहीं अधिक महत्वपूर्ण है।

प्राथमिकता सुसमाचार को साझा करना है। यहोवा विटनेसेस के पास उद्धार का आश्वासन और परमेश्वर के साथ एक व्यक्तिगत संबंध नहीं है।

## एक गवाही

पॉल का पालन पोषण एक यहोवा विटनेसेस के रूप में किया गया था, और उसके कई रिश्तेदार अभी भी उसी पंथ में हैं। एक वयस्क के रूप में वह संगठन से दूर हो गया, लेकिन वह फिर भी मानता था कि वे सही हैं। उसकी पत्नी मसीही बन गयी और लेकिन पॉल ने ठान लिया कि वह उसे साबित करेगा कि यहोवा विटनेसेस वाले सही हैं। अपने अध्ययन में उन्होंने पाया कि उन्होंने कई झूठी भविष्यवाणियाँ की थीं। उसने बाइबल पढ़ना शुरू किया और महसूस किया कि यीशु परमेश्वर हैं एक स्वर्गदूत नहीं, जैसा कि उसे सिखाया गया था। उसने वह वचन पढ़ा जहाँ पर लिखा था, "मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही हूँ" (यूहन्ना 14:6), और उसने महसूस किया कि उसे सिर्फ धार्मिक विश्वास की नहीं बल्कि यीशु के साथ एक रिश्ते की ज़रूरत थी।

## वचन का अध्ययन – भाग 2

► अब इब्रानियों 1 को फिर से पढ़ें। प्रत्येक छात्र एक अनुच्छेद लिखे जिसमें इस अंश का संदेश यहोवा विटनेसेस के लिए समझाया गया हो। कुछ छात्र अपनी लिखी बातें साझा कर सकते हैं।

## प्रत्येक पाठ के लिए निर्धारित कार्य

इस धार्मिक समूह के किसी व्यक्ति के सामने सुसमाचार प्रस्तुत करने का अवसर ढूँढ़ना याद रखें। अपने सहपाठियों के साथ हुई बातचीत के बारे में बताने के लिए तैयार रहें। अपना 2-पृष्ठ वाला प्रतिवेदन लिखकर अपनी कक्षा के अगुवे को सौंप दें।

# पाठ 5
# इग्लेसिया नी क्रिस्टो (मसीह की कलीसिया)

## पहली मुलाकात

फर्नान्डो एक रोमन कैथोलिक व्यक्ति था और वह एक बार पासबान भी रह चुका था, परन्तु उसने पासबानी का पद छोड़ दिया। एक दिन उसने एक नयी नौकरी शुरू की। जब एक व्यक्ति उसे वह काम करने का तरीका बता रहा था, तो फर्नान्डो को मालूम हुआ कि वह व्यक्ति इग्लेसिया नी क्रिस्टो (मसीह की कलीसिया) का सदस्य था। फर्नान्डो ने कहा, "मैं केवल यीशु पर भरोसा करता हूँ; वही मेरा परमेश्वर है।" उस व्यक्ति ने उससे कहा कि यीशु परमेश्वर नहीं है, और बताया कि उसका पासबान बाइबल से यह साबित कर सकता है कि यीशु केवल एक बिचवई था। उन्होंने फर्नान्डो के सामने बहुत से पवित्रशास्त्र प्रस्तुत किए, और वह उलझन में पड़ गया। उन्होंने उसे भरोसा दिलाया कि यीशु परमेश्वर नहीं है।

> "मसीही धर्म के हृदय में यह घोषणा पाई जाती है कि हमारा प्रभु यीशु मसीह, परमेश्वर का अनन्त पुत्र, हमारे उद्धार के लिए मनुष्य बना।"
> - विलार्ड टेलर
> *परमेश्वर, मनुष्य और उद्धार*

## वचन का अध्ययन – भाग 1

► प्रकाशितवाक्य 1 को ऊँची आवाज में मिलकर पढ़ें। प्रत्येक छात्र एक अनुच्छेद लिखे जो इस पवित्रशास्त्र के अंश का सारांश प्रस्तुत करे। यह अंश हमें मसीह के बारे में क्या बताता है? प्रत्येक छात्र कथनों की एक सूची बनाए। जो आपने लिखा है उस पर सामूहिक रूप से चर्चा करें।

## इग्लेसिया नी क्रिस्टो (मसीह की कलीसिया)

### इसकी उत्पत्ति और प्रभाव

इस संगठन के नाम का अनुवाद "मसीह की कलीसिया" के रूप में किया गया है। ऐसे दूसरे संगठन भी हैं जो अपने नाम में इन्हीं शब्दों का उपयोग करते हैं।

इग्लेसिया नी क्रिस्टो (मसीह की कलीसिया) की शुरुआत सन् 1914 में फिलीपींस में फेलिक्स मनालो ने की थी, जो एक भूतपूर्व सेवेंथ-डे एडवेंटिस्ट थे। उनकी मृत्यु के बाद, उनका बेटा अगुवा बना और फिर उनके बाद उनका पोता अगुवा बना।

इग्लेसिया की लगभग 7,000 मण्डलियाँ 164 देशों में पाई जाती हैं।[12] इनमें से अधिकांश फिलीपींस में हैं। रोमन कैथोलिक कलीसिया को छोड़कर यह फिलीपींस का सबसे बड़ा मसीही संगठन है।

---

[12] "About Us," Iglesia Ni Cristo (मसीह की कलीसिया), https://iglesianicristo.net/about-us/, 11 अप्रैल, 2023 को एक्सेस किया गया।

इग्लेसिया नी क्रिस्टो (मसीह की कलीसिया) सामुदायिक सुधार के लिए काम करती है। यह पंथ राजनीति में बहुत सक्रिय है और अपने सदस्यों को बताता है कि चुनावों में अपना मतदान किसे देना है। राजनीतिक नेता इस कलीसिया की मंजूरी की खोज में रहते हैं। इग्लेसिया ने फिलीपींस में मार्कोस शासन का समर्थन किया था।

इग्लेसिया एक धनी संगठन है जो विस्तृत कलीसियाई भवनों पर जोर देता है।[13] इग्लेसिया ने संसार का सबसे बड़ा गुम्बद वाला भीतरी सभागार बनाया है। हालाँकि इसके कई सदस्य निर्धन हैं, परन्तु इसके कई अगुवे चिकित्सक या वकील जैसे पेशेवर लोग भी हैं।

इग्लेसिया के पास रेडियो स्टेशन हैं। यह *Pasugo (पासुगो)* और *God's Message (गॉड्स मैसेज)* नाम की दो पत्रिकाएँ प्रकाशित करता है। ये पत्रिकाएँ रोमन कैथोलिक और सुसमाचार प्रचार करने वाली कलीसियाओं पर लगातार हमला करती हैं।

इग्लेसिया के कई हृदय परिवर्तित लोग पहले रोमन कैथोलिक थे जो पहले से ही मानते थे कि बाइबल सत्य है परन्तु उन्हें बाइबल का अच्छा ज्ञान नहीं था। इग्लेसिया के सदस्य उनके सामने बाइबल के ऐसे वचन प्रस्तुत करते हैं जो उन्हें सिखाए गए सिद्धान्तों को छोड़ने के लिए राजी करते हैं।

इग्लेसिया की मण्डलियाँ संसारभर के प्रमुख शहरों में पाई जाती हैं। फिलीपींस के बाहर इग्लेसिया के अधिकांश हृदय परिवर्तित लोग फिलिपिनो हैं जो उन देशों में आकर बस गए हैं।

► इग्लेसिया में अधिकांश हृदय परिवर्तित लोग रोमन कैथोलिक कलीसिया से क्यों हैं?

## कलीसिया और प्रायश्चित के सिद्धान्त

इग्लेसिया की सबसे महत्वपूर्ण मान्यता यह है कि यही वह सच्ची कलीसिया है जिसे फेलिक्स मनालो ने बहाल किया था। इस सिद्धान्त पर इतना जोर दिया जाता है कि ऐसा लगता है कि इग्लेसिया का सुसमाचार उनकी कलीसिया और उसकी उत्पत्ति के सिद्धान्त से मिलकर बना है।

इग्लेसिया के अनुयायियों का मानना है कि फेलिक्स मनालो परमेश्वर के अंतिम विशेष संदेशवाहक थे। उनका मानना है कि बाइबल की भविष्यद्वाणियों जैसे कि यशायाह 41:9-10, यशायाह 43:5-7, यशायाह 46:11, और प्रकाशितवाक्य 7:2-3 में मनालो का कई बार उल्लेख किया गया है।

---

[13] तस्वीर: 8651Iglesia Ni Cristo churches Malolos City 09" by Judgefloro https://commons.wikimedia.org/wiki/File:8651Iglesia_Ni_Cristo_churches_Malolos_City_09.jpg, सार्वजनिक डोमेन से पुनर्प्राप्त।

यशायाह 41:9-10 परमेश्वर के विशेष अभिषिक्त सेवक के बारे में बताता है। मसीही विश्वासियों का मानना है कि यह अंश यीशु को, जो मसीह है संदर्भित करता है, परन्तु इग्लेसिया के अनुयायियों का कहना है कि यह फेलिक्स मनालो को संदर्भित करता है। वे कहते हैं कि "पृथ्वी के दूर दूर देशों" वाक्यांश का अर्थ पृथ्वी का अंतिम समय है। उनका मानना है कि मनालो ने उस भविष्यद्वाणी को पूरा किया क्योंकि उन्होंने उसी दिन अपनी कलीसिया का पंजीकरण करवाया जिस दिन प्रथम विश्व युद्ध शुरू हुआ था, जिसे वे पृथ्वी के अंतिम समय की शुरुआत कहते हैं। बाइबल में पृथ्वी के दूर दूर देशों शब्द का अर्थ वास्तव में ऐसा स्थान है जो भौगोलिक रूप से दूर है।

यशायाह 46:11 में, परमेश्वर ने कहा कि वह पूर्व दिशा के किसी दूर देश से एक शिकारी (उकाब) पक्षी को बुलाएगा जो उसका उद्देश्य पूरा करेगा। मसीही विद्वानों ने आमतौर पर इस वचन को परमेश्वर के द्वारा इस्राएल को दण्ड देने के लिए विदेशी शक्तियों के उपयोग के संदर्भ में समझा है, जो शिकारी (उकाब) पक्षी के प्रतीक के अनुरूप है। इग्लेसिया का मानना है कि उस वचन के द्वारा फेलिक्स मनालो की सेवकाई की भविष्यद्वाणी की गई थी।

इग्लेसिया के अनुयायियों का मानना है कि प्रेरितों की मृत्यु के तुरन्त बाद मसीही कलीसिया धर्मत्यागी हो गई थी। उनका मानना है कि उनकी अपनी कलीसिया को छोड़कर सभी कलीसियाएँ धर्मत्यागी हैं, और यह कि जो सत्य प्रेरितों की मृत्यु के बाद खो गया था उसे मानालो ने बहाल किया।

► आप इग्लेसिया के इस दावे का उत्तर कैसे देंगे कि बाइबल की कुछ विशेष भविष्यद्वाणियों को मनालो ने पूरा किया? उनके द्वारा उपयोग किए जाने वाले वचनों को देखें और उनके संदर्भों पर विचार करें।

इग्लेसिया में प्रायश्चित का एक अनूठा सिद्धान्त मिलता है। यह पुराने नियम की आज्ञा पर आधारित है कि किसी दूसरे व्यक्ति के अपराध के लिए किसी व्यक्ति को दण्ड नहीं दिया जाना चाहिए। इग्लेसिया के शिक्षक कहते हैं कि यीशु दूसरों के पापों के लिए नहीं मरा, क्योंकि इससे परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन होता। परन्तु, क्योंकि बाइबल कहती है कि कलीसिया मसीह की देह है, इसलिए यदि कोई व्यक्ति कलीसिया से जुड़ता है तो वह कोई अन्य व्यक्ति नहीं रहता, बल्कि मसीह का अंग हो जाता है। इस कारण, जब यीशु कलीसिया से जुड़े लोगों के लिए मरा, तो वह किसी और के लिए नहीं मर रहा था। प्रायश्चित का यह सिद्धान्त उनकी कलीसिया को उद्धार के लिए बिलकुल आवश्यक इसलिए बनाता है, क्योंकि वे ही एकमात्र सच्ची कलीसिया हैं।

► समझाएँ कि इग्लेसिया कैसे दावा करती है कि यीशु केवल उनकी कलीसिया के सदस्यों के लिए मरा।

इग्लेसिया के कई भजन कलीसिया के बारे में हैं। उनका यह विश्वास कि वे ही एकमात्र सच्ची कलीसिया हैं, इस उदाहरण में उनके एक गीत "एक सत्य, एक विश्वास" से देखा जा सकता है:

> एक सत्य, एक विश्वास,
> एक कलीसिया, जहाँ हमने अनुग्रह पाया

भीतर है एक आशा
मसीह की एक सच्ची कलीसिया।[14]

**अन्य मान्यताएँ और प्रथाएँ**

इग्लेसिया के अगुवे लोगों को अपने धर्म में लाने के लिए बहुत जुनूनी हैं। वे अपने लोगों से कलीसिया के संदेश को फैलाने के लिए काम करने का आग्रह करते हैं।

आराधना सभाओं में पुरुष और महिलाएँ पवित्र स्थान के अलग-अलग किनारों पर बैठते हैं। आराधना सभा शुरू होने पर दरवाजा ताला लगा दिया जाता है।

उनके भजनों में कलीसिया, जीवन की कठिनाइयों को सहना और क्षमा के लिए प्रार्थनाओं जैसे विषयों पर जोर दिया जाता है। वे प्रार्थना करते हैं कि परमेश्वर उन्हें आज्ञाओं का पालन करने और क्षमा प्राप्त करने योग्य बनने में सहायता करे।

इग्लेसिया के अगुवे दावा करते हैं कि उनकी मान्यताओं का स्रोत बाइबल है। असम्बन्धित लगने वाले बाइबल के बहुत से वचनों का उपयोग करके शिक्षा देना उनकी सामान्य शैली है। वे बाइबल के विभिन्न संस्करणों का उपयोग करते हैं और एक उपदेश में छह अलग-अलग संस्करणों से उद्धरण दे सकते हैं। वे पवित्रशास्त्र से किसी भी प्रश्न का उत्तर देने का प्रयत्न करते हैं। उनके कई सदस्य दावा करते हैं कि पंथ द्वारा वचनों का उपयोग करके शामिल होने के लिए राजी किया गया था।

इग्लेसिया त्रिएकत्व या मसीह या पवित्र आत्मा के ईश्वरत्व में विश्वास नहीं करती।

इग्लेसिया के सदस्य लगातार अपने प्रकाशनों में मसीह के ईश्वरत्व के सिद्धान्त पर हमला करते हैं। वे सिखाते हैं कि यीशु एक विशेष व्यक्ति तो था, परन्तु परमेश्वर नहीं था। वे कहते हैं कि यदि कोई व्यक्ति सोचता है कि मसीह परमेश्वर है, तो वह वास्तव में मसीह को नहीं जानता और उसका उद्धार नहीं हुआ है।

उनका मानना है कि मृत्यु के समय प्राण मर जाता है और तब तक अस्तित्व में नहीं रहता जब तक कि परमेश्वर व्यक्ति को पुनर्जीवित और पुनर्निर्मित न कर दे। वे नरक को नहीं मानते।

> "फिर, पवित्र पूर्वजों का अनुसरण करते हुए, हम सब एकमत होकर, लोगों को एक ही पुत्र, हमारे प्रभु यीशु मसीह का अंगीकार करना सिखाते हैं, जो ईश्वरत्व में भी सिद्ध है और मनुष्यत्व में भी सिद्ध है; जो वास्तव में परमेश्वर है और वास्तव में मनुष्य है।"
> - चाल्सेडोनियन पंथ
> (कलीसिया के द्वारा 451 इस्वी में लिखित।)

वे यह नहीं मानते कि सुसमाचार का प्रचार सुनने या बाइबल पढ़ने के बाद मसीह पर भरोसा रखने से कोई व्यक्ति उद्धार पा सकता है। उनका मानना है कि उद्धार एक प्रक्रिया है। इग्लेसिया नी क्रिस्टो (मसीह की कलीसिया) के अनुसार, उद्धार पाने के लिए एक व्यक्ति को कलीसिया से जुड़ना और उसकी आवश्यकताओं का पालन करना आवश्यक है। हालाँकि, वे इस बात का आश्वासन नहीं

[14] "One Truth, One Faith" गीत के बोल, https://incmedia.org/one-truth-one-faith/ से 16 मार्च, 2023 को एक्सेस किए गए।

देते कि कलीसिया की सदस्यता लेने से एक व्यक्ति का उद्धार हो जाता है। उनका मानना है कि यदि कोई व्यक्ति सही तरीके से जीवनयापन नहीं करता, तो वह अपना उद्धार खो देगा। इन सिद्धान्तों के कारण, उनके कई सदस्य इस डर में हैं कि उनका उद्धार नहीं हुआ है।

► इग्लेसिया नी क्रिस्टो (मसीह की कलीसिया) उद्धार का तत्काल आश्वासन क्यों नहीं देती?

इग्लेसिया नी क्रिस्टो (मसीह की कलीसिया) सच्ची मसीहियत होने का दावा करती है। यह दावा करती है कि अन्य सभी कलीसियाएँ झूठी हैं। परन्तु यदि कोई व्यक्ति इग्लेसिया के सभी सिद्धान्तों को समझता है और उन पर विश्वास करता है, तो वह पवित्रशास्त्र के सुसमाचार पर विश्वास नहीं करता और मसीही विश्वासी नहीं है।

## सिद्धान्त की हस्तपुस्तिका का उपयोग करना

► क्योंकि इग्लेसिया नी क्रिस्टो (मसीह की कलीसिया) बाइबल पर विश्वास करने का दावा करती है, इसलिए उनके सिद्धान्तों का उत्तर देने के लिए बाइबल का उपयोग किया जा सकता है। इस पंथ का उत्तर देने के लिए *सिद्धान्त की हस्तपुस्तिका* से निम्नलिखित शिक्षण अनुभागों का उपयोग करें।

(5) यीशु परमेश्वर हैं।

(7) पवित्र आत्मा परमेश्वर है।

(8) परमेश्वर त्रियक्ता है।

(9) उद्धार केवल मसीह के प्रायश्चित से ही है।

(11) हम विश्वास के द्वारा उद्धार पाते हैं।

(12) हमें उद्धार का व्यक्तिगत आश्वासन मिल सकता है।

(13) बचाए न गए लोग अनन्त दण्ड भोगेंगे।

## सुसमाचार प्रसार

आपने देखा होगा कि इग्लेसिया नी क्रिस्टो (मसीह की कलीसिया) के सिद्धान्त यहोवा के साक्षियों (Jehovah's Witnesses) के सिद्धान्तों से बहुत मिलते-जुलते हैं। उनके सदस्य इस डर में जीवन बिताते हैं कि उनका अभी तक उद्धार नहीं हुआ है।

सुसमाचार के बुनियादी सत्य पर जोर देना आवश्यक है। याद रखें कि आप ऐसे लोगों से बात कर रहे हैं जो इस सिद्धान्त पर निर्भर हैं कि सही कलीसिया में होने से ही उनका उद्धार होगा। उन पवित्रशास्त्रों पर जोर दें जो उद्धार के व्यक्तिगत् आश्वासन की शिक्षा देते हैं। उन्हें दिखाएँ कि जब तक वे उद्धार के लिए मसीह पर भरोसा नहीं करते, तब तक निश्चय ही वे कभी नहीं जान सकते कि उन्होंने उद्धार पा लिया है।

## गवाही

मिगेल इग्लेसिया नी क्रिस्टो (मसीह की कलीसिया) में एक पासबान था। जब वह कलीसिया में कई अन्य पासबानों से परिचित हुआ, तो उसे यह जानकर निराशा हुई कि वे पवित्र जीवन के उस मानक के अनुसार जीवन नहीं बिताते जिसका वे प्रचार करते थे। वे अपने लोगों को उपदेश देते थे कि उन्हें शुद्ध और धर्मी जीवन जीना चाहिए। मिगेल को ऐसा लगता था कि एक प्रचारक जितना बुरा जीवन जीता है, उतनी ही मजबूती से वह धर्मी जीवन के बारे में प्रचार करता है। मिगेल ने कहा कि कई पासबान वह संगठन छोड़ना चाहते हैं परन्तु यह नहीं जानते कि ऐसा कैसे करें। वे उत्पीड़न से डरते हैं। मिगेल ने वह संगठन छोड़ने और बाइबल के सिद्धान्तों को मानने का निर्णय लिया।

## वचन का अध्ययन – भाग 2

► अब प्रकाशितवाक्य 1 को फिर से पढ़ें। प्रत्येक छात्र एक अनुच्छेद लिखे जिसमें इस अंश का संदेश इग्लेसिया नी क्रिस्टो के अनुयायियों के लिए समझाया गया हो। कुछ छात्र अपनी लिखी बातें साझा कर सकते हैं।

## प्रत्येक पाठ के लिए निर्धारित कार्य

इस धार्मिक समूह के किसी व्यक्ति के सामने सुसमाचार प्रस्तुत करने का अवसर ढूँढ़ना याद रखें। अपने सहपाठियों के साथ हुई बातचीत के बारे में बताने के लिए तैयार रहें। अपना 2-पृष्ठ वाला प्रतिवेदन लिखकर अपनी कक्षा के अगुवे को सौंप दें।

# पाठ 6
# ईस्टर्न लाइटनिंग

## पहली मुलाकात

शांग हुइ चीन में एक पासबान था। उसने सुना कि लोग कलीसिया छोड़कर सर्वशक्तिमान परमेश्वर की कलीसिया (Church of Almighty God) में शामिल हो रहे हैं। यहाँ तक कि उसके माता-पिता भी उनके साथ शामिल हो गए थे। उस पंथ के सदस्यों से जब वह मिला, तो उन्होंने कहा, "परमेश्वर का नाम यहोवा तो था, परन्तु पृथ्वी पर उस समय यह यीशु था। परमेश्वर फिर से एक नया काम कर सकता है, और पृथ्वी पर दूसरा मसीह बन सकता है।" उनकी शिक्षाओं से शांग हुइ उलझन में पड़ गया। वह अपनी सेवकाई में हतोत्साहित हो गया क्योंकि वह पंथ बहुत तेजी से बढ़ रहा था।

## वचन का अध्ययन – भाग 1

► 2 तीमुथियुस 3 को ऊँची आवाज में मिलकर पढ़ें। प्रत्येक छात्र एक अनुच्छेद लिखे जो इस पवित्रशास्त्र के अंश का सारांश प्रस्तुत करे। यह अंश हमें झूठे मसीही धर्मों के बारे में क्या बताता है? प्रत्येक छात्र कथनों की एक सूची बनाए। जो आपने लिखा है उस पर सामूहिक रूप से चर्चा करें।

## ईस्टर्न लाइटनिंग

### इसकी उत्पत्ति और प्रभाव

ईस्टर्न लाइटनिंग नामक पंथ का आधिकारिक नाम सर्वशक्तिमान परमेश्वर की कलीसिया (Church of Almighty God) है। इस धर्म की शुरुआत सन् 1989 में चीन में हुई थी। इसकी सदस्यता का अनुमान 1,00,000 से 10,00,000 तक है।

> "[बाइबल का] यह प्रकाशन अब पूरा हो चुका है। परमेश्वर इसमें और कुछ नहीं जोड़ेगा, क्योंकि मनुष्यों के लिए, इस संसार के संदर्भ में और जो आनेवाला है, दोनों के लिए आवश्यक सभी बातें इसमें मिलती हैं, और जो लोग इसमें कुछ भी जोड़ेंगे या घटाएँगे, उनके विरुद्ध उसने बड़े कठोर दण्ड की घोषणा की है।"
>
> - एडम क्लार्क
>
> मसीही धर्मशास्त्र

ईस्टर्न लाइटनिंग का मानना है कि पुराने नियम के समय में परमेश्वर ने स्वयं को यहोवा के रूप में प्रकट किया, फिर यीशु के रूप में पृथ्वी पर आया, और अब एक महिला के रूप में पृथ्वी पर आया है जो स्वयं को डेंग की बिजली कहती है। मूल रूप से उसका असली नाम यांग जियांगबिन था। डेंग सार्वजनिक रूप से प्रकट नहीं होती, और सार्वजनिक रूप से यह ज्ञात नहीं है कि वह कैसी दिखती है या वह कहाँ है। इस पंथ का दिखाई पड़ने वाला अगुवा झाओ वेईशान है, जो शायद यांग का पति है।

***बाइबल कहती है कि जब लोग कहते हैं कि मसीह पृथ्वी पर छिपा हुआ है तो हमें इस पर विश्वास नहीं करना है, लूका 17:23 देखें।***

ईस्टर्न लाइटनिंग का दावा है कि बाइबल अब पुरानी हो चुकी है, और नये प्रकाशन की आवश्यकता है। इस पंथ ने कई पुस्तकें प्रकाशित की हैं, जिनमें *पूर्व दिशा से बिजली चमकना (Lightning from the Orient)* भी शामिल है, जो परमेश्वर के द्वारा उस महिला मसीह को दिया गया प्रकाशन होने का दावा करती है। ये पुस्तकें मसीही विश्वासियों से बात करती हैं और उन्हें विस्तृत दण्ड की धमकी देती हैं।

***यीशु ने कहा कि उसका वचन कभी न टलेगा, मरकुस 13:31 देखें।***

ईस्टर्न लाइटनिंग सिखाती है कि यीशु का नाम अब अप्रचलित और शक्तिहीन हो गया है, और अब डेंग ही मसीह है।

***मसीह के जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान की सभी भविष्यद्वाणियों को यीशु ने पूरा किया। इस कारण, एक नये मसीह की आवश्यकता नहीं है, लूका 24:44, मत्ती 16:16 और मत्ती 24:4-5 देखें।***

उन्होंने 21 दिसंबर, 2012 को इस संसार के अंत की भविष्यद्वाणी की थी।

► ऐसी कौन सी बातें हैं जिन्हें आप पहले से ही देख रहे हैं और जो यह दिखाती हैं कि यह संगठन मसीही नहीं है?

**गतिविधियाँ और रणनीति**

ईस्टर्न लाइटनिंग विशेष रूप से मसीही कलीसियाओं को, यहाँ तक कि सबसे मजबूत मसीही विश्वासियों को भी चुनकर निशाना बनाती है। ऐसे लोगों की कहानियाँ बताई जाती हैं जो मसीही सेवकाइयों में थे, परन्तु कलीसिया छोड़कर उनके साथ जुड़ गए। इस पंथ के सदस्य कलीसिया में शामिल होने का दिखावा करते हैं, फिर यदि मसीही पासबान अपना हृदय परिवर्तन करें, तो उन्हें बड़ी मात्रा में पैसे देने की पेशकश करते हैं। यह पंथ अन्य धर्मों या संप्रदायों के लोगों में कम रुचि रखता है।

***बाइबल उन लोगों के बारे में बात करती है जो भलाई से घृणा करते हैं, 2 तीमुथियुस 3:3 देखें।***

यह पंथ सम्भावित हृदय परिवर्तित लोगों को आकर्षित करने के लिए वेश्यावृत्ति का उपयोग करता है। जो लोग इसमें जुड़ जाते हैं, उन्हें उनके जीवनसाथी से अलग कर दिया जाता है और उन्हें यौन गतिविधियों में शामिल होना पड़ता है।

***मसीही विश्वासी पवित्रता बनाए रखते हैं और विवाह प्रतिबद्धताओं की रक्षा करते हैं, इफिसियों 5:3, इब्रानियों 13:4 देखें।***

ईस्टर्न लाइटनिंग के सदस्य अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए यातना, अपहरण और हत्या का उपयोग करने के लिए प्रसिद्ध हैं। वे मसीही संगठनों के अगुवों पर शारीरिक हमला करते हैं। वे हृदय परिवर्तित व्यक्ति को अपनी सदस्यता छोड़ने से मना करते हैं।

***बाइबल कहती है कि एक मसीही विश्वासी को कोमल होना चाहिए, व्यवस्था का पालन करना चाहिए, और हिंसक नहीं होना चाहिए, तीतुस 3:1-2 देखें।***

यदि कोई व्यक्ति जुड़ने की रुचि रखता है, तो वे उसे उपहार देते हैं, परन्तु यदि कोई व्यक्ति हृदय परिवर्तन नहीं करता, तो वे हिंसा की धमकी देते हैं। इस पंथ के सदस्य इस पंथ का विरोध करने के कारण लोगों को परमेश्वर की ओर से घातक बीमारियाँ मिलने की कहानियाँ सुनाते हैं। वे मसीही विश्वासियों को यौन पाप में फँसाने का प्रयत्न भी करते हैं, और बाद में उन्हें भेद खोलने की धमकी देते हैं।

***परमेश्वर की ओर से मिली बुद्धि पवित्र, मिलनसार, और कोमल है, याकूब 3:17 देखें।***

इस पंथ के प्रतिभागियों का दावा है कि उन पर हिंसा का झूठा आरोप लगाया गया है, परन्तु चीन में कई मसीही विश्वासियों और मिशनरियों ने उनके कार्य देखे हैं।

सदस्यों से इस पंथ को अपना सब कुछ देने की माँग की जाती है। उन्हें अपने परिवारों को छोड़ने और पंथ के साथ रहने और संदेश फैलाने के निमित्त काम करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

ईस्टर्न लाइटनिंग ने कई अन्य देशों में संगठन का विस्तार करना शुरू कर दिया है। वे चीनी कलीसियाओं में लोगों को छपी हुई सामग्री देकर शुरुआत करते हैं।

► सच्ची कलीसिया के कार्यों की तुलना ईस्टर्न लाइटनिंग के कार्यों से कैसे की जाती है?

**मान्यताएँ**

ईस्टर्न लाइटनिंग के अनुयायी मानते हैं कि मसीह हमारे पापों के लिए मरा, परन्तु वे यह नहीं मानते कि कोई व्यक्ति उनके संगठन के बिना मसीह के द्वारा उद्धार पा सकता है। उद्धार पाने के लिए, किसी व्यक्ति को यीशु पर अपना विश्वास छोड़ना होगा और उसके बजाय डेंग, अर्थात् उस महिला मसीह का अनुसरण करना होगा। वे पुनरुत्थान से और मसीह की दूसरी वापसी से इन्कार करते हैं।

> "यीशु नरक में उतरा; तीसरे दिन वह मरे हुओं में से जी उठा; वह स्वर्ग पर चढ़ गया, और सर्वशक्तिमान परमेश्वर पिता के दाहिने हाथ पर बैठ गया; वहाँ से वह जीवित और मरे हुए लोगों का न्याय करने के लिए आएगा।"
> - प्रेरितों का विश्वास

उनका मानना है कि जो कोई भी डेंग (अर्थात् महिला मसीह) के संदेश को ग्रहण नहीं करता, उसे परमेश्वर की ओर से दण्ड मिलेगा।

> "प्रायश्चित की शिक्षा का मुख्य प्रस्ताव यह है कि मसीह की मृत्यु ही उद्धार का स्रोत और सक्षम कारण है। मसीह की मृत्यु हमारे उद्धार को सम्भव बनाती है।"
> - थॉमस ओडेन
> द वर्ड ऑफ़ लाइफ

***बाइबल ने उन लोगों की भविष्यद्वाणी की थी जो सत्य का विरोध करेंगे और कलीसिया को विभाजित करने का प्रयत्न करेंगे, यहूदा 1:17-19 देखें।***

> अब महिला मसीह का अनुसरण करना मनुष्य की जिम्मेदारी है, और केवल तभी ऐसा होता है जब वह यीशु मसीह पर अपने विश्वास को त्याग दे, सार्वजनिक रूप से अपनी बाइबल को फाड़ दे, स्वयं को "शैतान की सन्तान" कहे, महिला मसीह के बोले गए शब्दों के प्रति स्वयं को पूरी तरह से समर्पित करके "विजयी"

हो जाए और इस प्रकार एक "विजयी व्यक्ति" बन जाए, जो उस राज्य में प्रवेश कर सकता है जिसे महिला मसीह के द्वारा पृथ्वी पर स्थापित किया जाएगा।[15]

► हम कैसे जान पाते हैं कि यीशु मसीह और परमेश्वर का वचन अभी भी मसीही विश्वासी के लिए आवश्यक है?

सर्वशक्तिमान परमेश्वर की कलीसिया (ईस्टर्न लाइटनिंग) वास्तविक मसीही धर्म होने का दावा करती है। यह इस बात का दावा करती है कि अन्य सभी कलीसियाएँ झूठी हैं। परन्तु यदि कोई व्यक्ति ईस्टर्न लाइटनिंग के सभी सिद्धान्तों को समझता और मानता है, तो वह पवित्रशास्त्र के सुसमाचार पर विश्वास नहीं करता और मसीही विश्वासी नहीं है।

► अब वापस जाएं और ***बोल्ड और इटैलिक किए गए*** पाठ और प्रत्येक पवित्रशास्त्र को पढ़ें।

## सिद्धान्त की हस्तपुस्तिका का उपयोग करना

► नीचे सूची में दिए गए सभी सिद्धान्तों का ईस्टर्न लाइटनिंग के द्वारा इन्कार किया गया है। प्रत्येक सिद्धान्त के महत्व और उसके प्रमाण को देखने के लिए *सिद्धान्त की हस्तपुस्तिका*देखें। यह सुनिश्चित करें कि आप समझते हैं कि जिन वचनों का संदर्भ दिया गया है वे उस सिद्धान्त को कैसे साबित करते हैं।

(5) यीशु परमेश्वर हैं।

(7) पवित्र आत्मा परमेश्वर है।

(8) परमेश्वर त्रियक्ता है।

(9) उद्धार केवल मसीह के प्रायश्चित से ही है।

(11) हम विश्वास के द्वारा उद्धार पाते हैं।

(12) हमें उद्धार का व्यक्तिगत आश्वासन मिल सकता है।

## सुसमाचार प्रसार

भले ही इस पंथ की हिंसक, अनैतिक और भ्रामक रणनीतियाँ उन्हें आतंकवादी संगठन की तरह दिखाती हैं, परन्तु अगुवों की गतिविधियों के बारे में उनके कई अनुयायी नहीं जानते हैं। विशेष रूप से चीन के अलावा अन्य देशों में, इस पंथ से प्रभावित लोग शायद उनके विरुद्ध आरोपों पर विश्वास न करें। इस कारण, एक मसीही विश्वासी के लिए महत्वपूर्ण है कि वह उनके सिद्धान्तों का उत्तर देने में सक्षम हो।

---

[15] "The Development and Beliefs of the Eastern Lightning Cult", China For Jesus, 1 नवंबर, 2023 को एक्सेस किया गया, http://www.chinaforjesus.com/EL_development.htm.

जो व्यक्ति इस पंथ में पूरी तरह से भाग लेता है और उनके सिद्धान्तों पर विश्वास करता है, उसके लिए मसीही विश्वासी होना सम्भव नहीं है। इस कारण, उनके पास एक ऐसी आत्मिक भूख है जो संतुष्ट नहीं हुई है। एक मसीही विश्वासी की प्राथमिकता उनके साथ सुसमाचार साझा करना होनी चाहिए।

कई लोग डर के कारण ईस्टर्न लाइटनिंग से जुड़ते हैं। हमें यह प्रचार करना होगा कि सत्य के प्रति विश्वासयोग्यता किसी भी सांसारिक दशा से अधिक महत्वपूर्ण है। हम यह भी जानते हैं कि परमेश्वर का राज्य विजयी होगा।

## विशेष चेतावनी: ऐतिहासिक मसीही धर्म को न छोड़ें

प्राचीनकाल से लेकर अब तक मसीही धर्म में कई तरह की मान्यताएँ रही हैं। हालाँकि, परमेश्वर के स्वभाव और मसीह के स्वभाव के बारे में मूलभूत सिद्धान्तों को सभी युगों में कलीसिया के द्वारा स्थापित और संरक्षित किया गया था। सभी कलीसियाओं का प्रतिनिधित्व करने वाली प्रारम्भिक महासभाओं ने बाइबल के सिद्धान्तों के कथन लिखे, और सुसमाचार-प्रचार करने वाली सभी कलीसियाओं ने इन सिद्धान्तों को आवश्यक माना है। बाइबल आधारित कलीसियाएँ एक-दूसरे से बहुत अलग दिखती हैं, और कई बातों पर असहमत होती हैं, परन्तु वे कुछ आवश्यक बातों पर सहमत होती हैं।

कुछ पंथ कहते हैं कि उनकी अपनी कलीसिया को छोड़कर सभी कलीसियाएँ आवश्यक सिद्धान्तों पर गलत हैं और वास्तव में मसीही नहीं हैं। वे न केवल छोटे-छोटे सिद्धान्तों पर असहमत होती हैं, बल्कि उन सिद्धान्तों पर भी असहमत होती हैं जो सुसमाचार के लिए आवश्यक हैं। वे उन बातों का इन्कार करती हैं जो मसीही विश्वासियों को अन्य धर्मों से अलग करती हैं। एक पंथ जो आवश्यक मसीह धर्म का इन्कार करता है वह कोई दूसरा धर्म है और उसे मसीही होने का दावा नहीं करना चाहिए।

जब कोई पंथ कहता है कि वह सही है और अन्य सभी कलीसियाएँ गलत हैं, तो हमें यह समझने की आवश्यकता है कि उनके कहने का क्या अर्थ है। वे कह रहे हैं कि सभी कलीसियाओं का प्रतिनिधित्व करने वाली प्राचीन महासभाएँ गलत थीं। वे कह रहे हैं कि सभी युगों में रहने वाले लाखों मसीही विश्वासी गलत थे। वे कह रहे हैं कि ईश्वरीय लोग जिन्हें आप जानते हैं, जो मसीह के उदाहरण हैं, वे गलत हैं। वे कह रहे हैं कि संसार भर के सभी पुरुष और महिलाएँ जो परमेश्वर से प्रेम करते हैं, प्रार्थना करते हैं, आराधना करते हैं, परमेश्वर के अनुग्रह की गवाही देते हैं, उत्पीड़न सहते हैं, बाइबल का पालन करते हैं और सुसमाचार साझा करते हैं, वे सभी गलत हैं। इस पंथ का कहना है कि ये सभी उस बुनियादी सत्य पर भी गलत थे जो किसी व्यक्ति को मसीही विश्वासी ठहराता है।

यदि यह पंथ सही है, तो परमेश्वर ने सदियों तक अपनी कलीसिया को सुसमाचार के आवश्यक सत्य में मार्गदर्शन करने के लिए नहीं चुना। यदि यह पंथ सही है, तो यह विचित्र बात है कि हर जगह ईमानदार, ईश्वरीय लोग अभी भी उनके सिद्धान्तों को अस्वीकार करते हैं। यह सच है कि धार्मिक संगठन सांसारिक, शक्तिशाली और धनी हो सकते हैं और वास्तव में सत्य में रुचि न रखें, परन्तु हर जगह की कलीसियाओं में ईश्वरीय और आत्मिक लोग आवश्यक बाइबल आधारित सत्य को मानते हैं।

## गवाही

लिया ईस्टर्न लाइटनिंग पंथ से जुड़ गई क्योंकि उसे लगा कि वे मसीही विश्वासी हैं, परन्तु जल्द ही उसे एहसास हुआ कि वे बाइबल या यीशु पर विश्वास नहीं करते। उसने छोड़ देने का निर्णय लिया, परन्तु उन्होंने उसके पैरों पर लोहे की छड़ से मारा, ताकि वह चल-फिर न सके। उन्होंने कहा कि यदि वह चली गई तो वे उसे मार डालेंगे। बाद में वह एक मसीही विश्वासी की सहायता से बच निकली। वह अब एक कलीसिया में है और परमेश्वर से सहायता माँग रही है। वह अभी भी ईस्टर्न लाइटनिंग द्वारा दी गई चोटों के कारण अपंग है।

## वचन का अध्ययन – भाग 2

► अब 2 तीमुथियुस 3 को फिर से पढ़ें। प्रत्येक छात्र एक अनुच्छेद लिखे जिसमें इस अंश का संदेश ईस्टर्न लाइटनिंग के अनुयायियों के लिए समझाया गया हो। कुछ छात्र अपनी लिखी बातें साझा कर सकते हैं।

## प्रत्येक पाठ के लिए निर्धारित कार्य

इस धार्मिक समूह के किसी व्यक्ति के सामने सुसमाचार प्रस्तुत करने का अवसर ढूँढ़ने का प्रयत्न करें। यह पंथ शायद उस देश में मौजूद न हो जहाँ आप अध्ययन कर रहे हैं। यदि नहीं, तो यह सामग्री किसी अन्य के सामने प्रस्तुत करें और उनकी प्रतिक्रिया लें। अपने सहपाठियों के साथ हुई बातचीत के बारे में बताने के लिए तैयार रहें। अपना 2-पृष्ठ वाला प्रतिवेदन लिखकर अपनी कक्षा के अगुवे को सौंप दें।

# पाठ 7
# प्रलयवादी पंथ

## पहली मुलाकात

संदीप ने एक कलीसिया की ओर जाते हुए एक बड़ा सा बोर्ड देखा: “21 मई, 2011, न्याय की दिन। बाइबल इसका आश्वासन देती है!” संदीप हैरान रह गया कि यदि संदेश सच है तो उसे क्या करना चाहिए। ऐसा लग रहा था कि उसके पास बच्चों को पाठशाला भेजने, या अपना घर बनाने, या उधार लिए गए पैसे वापस करने का कोई कारण नहीं होगा। उसने सोचा कि क्या उसे इस संदेश को फैलाने में सहायता करने के लिए अपना सारा पैसा दान कर देना चाहिए।

## वचन का अध्ययन – भाग 1

► मरकुस 13 को ऊँची आवाज में मिलकर पढ़ें। प्रत्येक छात्र एक अनुच्छेद लिखे जो इस पवित्रशास्त्र के अंश का सारांश प्रस्तुत करे। वह कौन सी चेतावनियाँ हैं जो यीशु इस अंश में हमें देता है? प्रत्येक छात्र कथनों की एक सूची बनाए। जो आपने लिखा है उस पर सामूहिक रूप से चर्चा करें।

## प्रलयवादी पंथ

### प्रलयवादी पंथों का परिचय

सैकड़ों प्रलयवादी पंथ पाए जाते हैं। उनमें बहुत विविधता पाई जाती है और उनके कई अलग-अलग नाम हैं। अक्सर वे ऐसे व्यक्ति द्वारा शुरू किए जाते हैं जो भविष्य के बारे में नये प्रकाशन का दावा करता है। उनमें से कुछ थोड़े समय तक ही, कुछ सदस्यों के साथ चलते हैं, और अन्य बड़े हो जाते हैं। इस कोर्स के अन्य अनुभागों में शामिल कुछ संगठनों में प्रलयवादी पंथों की विशेषताएँ पाई जाती हैं। उदाहरण के लिए, यहोवा के साक्षी (Jehovah’s Witnesses) ने अपने सदस्यों को प्रेरित करने के लिए कई बार भविष्यद्वाणियाँ की हैं, परन्तु वे भविष्यद्वाणियाँ सच नहीं हुई।

### सर्वनाशकारी प्रलयवादी पंथ अस्तित्व में क्यों हैं

कई लोगों को लगता है कि यह संसार संकट के समय के पास आ रहा है जो हर उस बात को बदल देगा जिसे हम सामान्य मानते हैं। इस संकट का वर्णन अर्थशास्त्र, पारिस्थितिकी, युद्ध, राजनीति या सांस्कृतिक बदलाव के संदर्भ में किया जा सकता है।

कई नये उपन्यास और फिल्में एक काल्पनिक सर्वनाश का वर्णन करती हैं जो संसारभर में महामारी, या परमाणु युद्ध, या पृथ्वी पर एक विशाल उल्कापिण्ड के गिरने से होता

> "हाँ, मेरा मानना है कि यह संसार, जैसा कि हम इसे जानते हैं, समाप्त हो जाएगा। यह कब होगा, मुझे नहीं पता, परन्तु सम्पूर्ण इतिहास एक शीर्ष घटना की ओर संकेत कर रहा है जब जो कुछ भी इस समय दिखाई दे रहा है वह आग से शुद्ध हो जाएगा। यह मन की कल्पना नहीं है बल्कि बाइबल की स्पष्ट और दोहराई गई गवाही है।"
> - बिली ग्राहम

है। इन कहानियों में, पृथ्वी के अधिकांश लोग मारे जाते हैं, और जो लोग बच जाते हैं वे एक ऐसे युग में प्रवेश करते हैं जहाँ उनके द्वारा जानी गई किसी भी बात से बिल्कुल अलग जीवन होता है।

इस डर और अपेक्षा की वजह से लोग इस बारे में उत्तर खोज रहे हैं कि भविष्य का सामना कैसे करें। कुछ लोग धार्मिक स्पष्टीकरण की खोज में हैं। वे एक प्रलयवादी पंथ के संदेश में रुचि लेने लगते हैं। कोई प्रलयवादी पंथ एक ऐसे व्यक्ति के द्वारा शुरू किया जाता है जो नये प्रकाशन के साथ एक भविष्यद्वक्ता होने का दावा करता है। प्रलयवादी पंथ संसार की स्थिति और हमें तैयारी के लिए क्या करना चाहिए, यह समझाकर लोगों की भावनात्मक और आत्मिक आवश्यकताओं को पूरा करने का प्रयत्न करते हैं।

प्रलयवादी पंथ सभी युगों में अस्तित्व में रहे हैं। कलीसिया की दूसरी सदी में मोंटैनस नामक एक कथित भविष्यद्वक्ता रहता था और उसने परमेश्वर के राज्य के जल्द आने और इस सांसारिक प्रणाली के अंत के बारे में भविष्यद्वाणियाँ की थीं। कलीसिया के सम्पूर्ण इतिहास में ऐसे लोग रहे हैं जिन्होंने यह दावा किया कि वे उस समय को जानते हैं जब मसीह अपना राज्य स्थापित करने और दुष्टों का न्याय करने के लिए वापस आएगा। लाखों लोग इससे धोखा खा चुके हैं और निराश हो चुके हैं।

► प्रलयवादी पंथों के कौन से उदाहरण आपने देखे या सुने हैं?

प्रलयवादी पंथों के अगुवे उस युग के संकटों का बाइबल आधारित तरीके से उत्तर नहीं देते, हालाँकि वे मसीही विश्वासी होने का दावा करते हैं और बाइबल का उपयोग करते हैं। नीचे अधिकांश प्रलयवादी पंथों की कुछ विशेषताएँ दी गई हैं।

**प्रलयवादी पंथों की विशेषताएँ**

**(1) वे विशिष्ट भविष्यद्वाणियों के लिए तिथियाँ निर्धारित करते हैं।**

वे प्रभु के दूसरे आगमन् की भविष्यद्वाणी कर सकते हैं।

***यीशु ने कहा कि उसके लौटने का समय कोई भी नहीं जानता, मत्ती 24:36 देखें।***

वे इस संसार की सरकारों के अंत की भविष्यद्वाणी कर सकते हैं। वे ऐसी आपदा की भविष्यद्वाणी कर सकते हैं जो इस संसार के दुष्ट लोगों को नष्ट कर देगी। वे कोई विशिष्ट समय बता सकते हैं जब ऐसा होना निश्चित हो। जब ऐसा नहीं होता, तो वे कहते हैं कि उनकी भविष्यद्वाणी का अर्थ कुछ और था। वे एक नयी तिथि निर्धारित कर सकते हैं। वे आमतौर पर कई छोटी-छोटी भविष्यद्वाणियाँ करते हैं जो सच नहीं होतीं।

***बाइबल कहती है कि यदि किसी व्यक्ति की भविष्यद्वाणी सच नहीं होती, तो उस पर भविष्यद्वक्ता के रूप में भरोसा नहीं किया जाना चाहिए, व्यवस्थाविवरण 18:22 देखें।***

**(2) उनके पास पवित्रशास्त्र की नयी व्याख्याएँ होती हैं।**

वे पवित्रशास्त्र के कुछ वाक्यांशों को नया अर्थ देते हैं जिनके बारे में पहले कभी किसी ने नहीं सोचा था। वह अर्थ कुछ ऐसा होता है जिसे पवित्रशास्त्र से ही साबित नहीं किया जा सकता। कथित भविष्यद्वक्ता दावा करता है कि वह व्याख्या उसे प्रकाशन के द्वारा दी गई थी, जो इसे व्याख्या वहीं, बल्कि नया प्रकाशन बनाता है। यह बाइबल का दुरुपयोग है क्योंकि वे कहते हैं कि उनके विचारों की शिक्षा उन्हें बाइबल से मिलती है, परन्तु वास्तव में वे बाइबल में अर्थ जोड़ने के लिए उस नये प्रकाशन पर निर्भर होते हैं जो पहले से मौजूद नहीं था। जो लोग उस संदेश पर विश्वास करते हैं वे वही लोग हैं जिन्होंने पहले से ही उस भविष्यद्वक्ता पर भरोसा करने का निर्णय लिया है। वे बाइबल के अधिकार का पालन नहीं कर रहे हैं बल्कि उस पंथ के अगुवे के अधिकार का पालन कर रहे हैं।

***बाइबल कहती है कि पवित्रशास्त्र इसलिए नहीं है कि कोई व्यक्ति अपना ही अर्थ देने लगे। परमेश्वर ने इसकी लेखन प्रक्रिया को प्रेरित और नियंत्रित किया ताकि इसका अर्थ वही हो जो परमेश्वर कहना चाहता था, 2 पतरस 1:20-21 देखें।***

**(3) वे गैर-मसीही कार्यों की माँग करते हैं।**

वे अपने सदस्यों से ऐसे व्यवहार की अपेक्षा करते हैं जो मसीही धर्म के लिए कभी भी विशिष्ट नहीं रहा है। वे समाज और सामान्य जीवन से अलग होने की माँग कर सकते हैं। वे उन लोगों के प्रति शत्रुतापूर्ण रवैया रखते हैं जो उनके शत्रु हैं और वे हिंसा को भी प्रोत्साहित कर सकते हैं। वे अपने सदस्यों और उनके परिवारों के विरुद्ध बल का प्रयोग कर सकते हैं। जब वे अपने कार्यों के लिए मुसीबत में पड़ जाते हैं, तो वे इसे उत्पीड़न कहते हैं। उनका मानना है कि परमेश्वर उनके कट्टरपंथी विश्वास के उत्तर में अद्भुत रीति से हस्तक्षेप करेगा। कुछ प्रलयवादी पंथ आत्महत्या में समाप्त हो गए हैं।

***तीतुस 3:1-5 मसीही विश्वासी के लिए अपेक्षित व्यवहार को पापियों के व्यवहार के विपरीत दिखाता है।***

**(4) वे अपने सदस्यों को अन्य रिश्तों से अलग रखते हैं।**

कुछ प्रलयवादी पंथ अपने सदस्यों से संगठन को अपना सब कुछ देने की माँग करते हैं। वे सदस्य एक परिसर में एक साथ रहते हैं और उन सभी मित्रों और रिश्तेदारों से अलग रहते हैं जो पंथ में नहीं हैं। हो सकता है कि उन्हें सभी बाहरी लोगों को शत्रु मानना सिखाया जाए। वे अनुयायी अंत में निराश हो जाते हैं क्योंकि वह संगति सत्य पर आधारित नहीं होती और वह सच्ची मसीही संगति नहीं हो सकती।

***यीशु ने प्रार्थना की कि हम संसार में तो रहें परन्तु उससे वैसे ही अलग रहें जैसा वह है, यूहन्ना 17:14-16 देखें।***

► यह प्रश्न अगले अनुभाग का परिचय देता है: प्रलयवादी पंथों ने क्या हानि की है?

**प्रलयवादी पंथों के प्रभाव**

प्रलयवादी पंथ कई तरह से विनाशकारी हैं।

1. वे मसीही कलीसियाओं के लोगों को झूठे सिद्धान्त की ओर आकर्षित करते हैं।
2. वे अपने अनुयायियों को निराश करते हैं और उनके लिए अपना विश्वास पूरी तरह से खोने का कारण बनते हैं।
3. वे मसीही विश्वासी होने का दावा तो करते हैं, परन्तु गैर-मसीही जैसा व्यवहार रखते हैं जो मसीह की प्रतिष्ठा को धूमिल करता है।
4. वे परमेश्वर के राज्य और मसीह की वापसी के बारे में पवित्रशास्त्र पर लोगों द्वारा संदेह करने का कारण बनते हैं।

**सांसारिक संकट के प्रति मसीही प्रतिक्रिया**

बाइबल ऐसे समयों के बारे में बात करती है। दानिय्येल की पुस्तक और प्रकाशितवाक्य की पुस्तक जैसे पवित्रशास्त्र अनिश्चित भविष्य, समाज में अराजकता, अंतर्राष्ट्रीय युद्ध और उत्पीड़न के समय में लिखे गए थे। वे ऐसे समय थे जब परमेश्वर पर विश्वास करने वाले लोगों के विश्वास की परीक्षा हुई। ऐसा लग रहा था कि सब कुछ नियंत्रण से बाहर है और हर अच्छी वस्तु नष्ट हो सकती है।

> "यीशु महिमा के साथ जीवितों और मरे हुओं का न्याय करने के लिए फिर से आएगा: उसके राज्य का कभी अंत न होगा।"
> - नीकिया का विश्वास

भविष्यसूचक पवित्रशास्त्रों का सबसे बड़ा विषय यह है कि सब कुछ परमेश्वर के नियंत्रण में है और अंत में वह अपना राज्य स्थापित करेगा और धर्मी लोगों को प्रतिफल देगा।[16] बाइबल इस बात की पुष्टि करती है कि समय कठिन आएँगे और ऐसा लग सकता है कि बुराई कुछ समय के लिए राज करे। विश्वासियों को परमेश्वर पर अपना विश्वास बनाए रखने और इस संसार की परिस्थितियों के बावजूद ईमानदारी से जीवन बिताने के लिए कहा जाता है। जिस तरह से वे पवित्रशास्त्र उन समयों पर लागू होते थे, वैसे ही वे किसी भी अन्य समय पर लागू होते हैं जब इसी तरह विश्वास की परीक्षा होती है।

2 थिस्सलुनीकियों की पुस्तक उन मसीहियों के लिए लिखी गई थी जो यीशु की वापसी और परमेश्वर के न्याय के दिन के जल्दी ही आने की अपेक्षा कर रहे थे। वे ऐसे लोगों की बात सुन रहे थे जो यह दावा करते थे कि वे जानते हैं कि ये घटनाएँ पहले ही हो चुकी हैं (2 थिस्सलुनीकियों 2:2)। वे इस बात को लेकर उलझन में पड़े थे कि उन्हें क्या करना चाहिए।

प्रेरित पौलुस ने कुछ ऐसी घटनाओं का वर्णन किया जो मसीह की वापसी से कुछ समय पहले घटित होंगी, जिसमें "पाप के पुरुष" और "विनाश के पुत्र" (2 थिस्सलुनीकियों 2:3) नामक व्यक्ति का शासन शामिल है।

हमारे लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण बात यह है कि हम 2 थिस्सलुनीकियों 2:15-17 में विश्वासियों को दिए गए पौलुस के अंतिम निर्देश देखें। उसने उनसे कहा कि वे दृढ़ रहें और जो उन्हें सिखाया गया था उसका पालन करते रहें। उन्हें आने वाली किसी भी घटना के कारण मसीही जीवन के मूल सिद्धान्तों नहीं छोड़ना था। आयत 17 में वह प्रार्थना करता है कि परमेश्वर उन्हें हर अच्छे वचन और काम में दृढ़ करे।

यहाँ तक की अगर इस संसार का अंत निकट है, परन्तु यह हमारे लिए मसीही जीवन के सिद्धान्तों को छोड़ने का समय नहीं है। जो बातें हमेशा सबसे महत्वपूर्ण रही हैं, वे अंत तक सबसे महत्वपूर्ण रहेंगी। हमें खोए हुए लोगों को प्रचार करना है, सच्चे सिद्धान्त को थामे

---

[16] दानिय्येल 2:44, दानिय्येल 4:34, दानिय्येल 6:26, दानिय्येल 7:27, प्रकाशितवाक्य 1:7, प्रकाशितवाक्य 6:15-17, प्रकाशितवाक्य 11:15, प्रकाशितवाक्य 17:14, प्रकाशितवाक्य 19:11-21.

रखना है, पवित्र जीवन जीना है, विश्वासियों के साथ संगति करनी है, दूसरों का भला करना है और सभी लोगों के प्रति प्रेम दिखाना है।

► यदि हम प्रलयकारी समय में जीवन बिता रहे हैं, तो याद रखने वाली सबसे महत्वपूर्ण बातें कौन सी हैं?

► अब वापस जाएं और ***बोल्ड और इटैलिक किए गए*** पाठ और प्रत्येक पवित्रशास्त्र को पढ़ें।

## सुसमाचार प्रसार

प्रलयवादी पंथ के सदस्य से बात करते समय पहली प्राथमिकता यह सुनिश्चित करना है कि वह वास्तव में सुसमाचार को समझता है। आप मान सकते हैं कि उस पंथ का एक सदस्य मसीही धर्म के सिद्धान्तों पर विश्वास करता है और उसने केवल कुछ विशिष्ट भविष्यद्वाणियाँ जोड़ी हैं, परन्तु वह पंथ वास्तव में आवश्यक सिद्धान्तों का खण्डन कर सकता है।

इसके बाद यह बताना महत्वपूर्ण है कि वह पंथ ऐतिहासिक मसीही धर्म से कैसे अलग हुआ। उन कार्यों और शिक्षाओं की ओर संकेत करें जिन्हें सदियों से कलीसिया के ईश्वरीय लोगों के द्वारा कभी स्वीकार नहीं किया गया हो।

इस तथ्य की ओर संकेत करें कि मत्ती 24:36 हमें बताता है कि मसीह की वापसी का समय बताया नहीं गया है।

इस बात की ओर संकेत करें कि भविष्यद्वाणी सम्बन्धी पवित्रशास्त्रों की उनकी व्याख्या, व्याख्या करने के सामान्य सिद्धान्तों पर नहीं, बल्कि केवल अगुवे पर उनके भरोसे पर आधारित है।

इस बात की ओर संकेत करें कि व्यवस्थाविवरण 18:22 हमें बताता है कि यदि किसी व्यक्ति की एक भी भविष्यद्वाणी झूठी है तो उस पर भविष्यद्वक्ता के रूप में भरोसा नहीं किया जाना चाहिए।

## गवाही

डॉर्कस का पालन-पोषण यहोवा विटनेसेस (Jehovah's Witness) परिवार में हुआ था। बचपन में वह मानती थी कि राज्य भवन में दी जाने वाली शिक्षाएँ सीधे परमेश्वर की ओर से आती हैं। एक रात अगुवों ने एक विशेष बैठक बुलाई। उन्होंने घोषणा की कि सन् 1975 में प्रलय होगा। उसमें अभी सात वर्षों का समय था। डॉर्कस उस रात इस डर से रोई कि प्रलय आने पर उसके परिवार का क्या होगा। अगले कुछ वर्षों तक उसके परिवार और अन्य लोगों ने उस पंथ के लिए कड़ी मेहनत की। उनका मानना था कि अब अधिक समय नहीं बचा है। उस पंथ की पत्रिकाओं ने प्रलय में नष्ट हो रहे बच्चों, वयस्कों और बूढ़ों की तस्वीरें छापी थीं। सन् 1975 के आखिरी दिन, बहुत से लोग उस रात अंत आने की अपेक्षा में सो गए। अगली सुबह डॉर्कस हैरान होकर जागी कि सब कुछ अभी भी वैसा ही था। उसके माता-पिता ने उस भविष्यद्वाणी के बारे में दोबारा बात नहीं की। डॉर्कस ने आखिरकार उस पंथ की बैठकों में जाना बंद कर दिया, परन्तु उसे मालूम नहीं था कि सत्य की खोज कहाँ की जाए। कई वर्षों के बाद डॉर्कस की मुलाकात एक ऐसे व्यक्ति से हुई जिसने उसे उद्धार के बारे में समझाया और उसने उद्धार पाया।

## वचन का अध्ययन – भाग 2

► अब मरकुस 13 को फिर से पढ़ें। प्रत्येक छात्र एक अनुच्छेद लिखे जिसमें इस अंश का संदेश प्रलयवादी पंथ के अनुयायियों के लिए समझाया गया हो। कुछ छात्र अपनी लिखी बातें साझा कर सकते हैं।

## प्रत्येक पाठ के लिए निर्धारित कार्य

इस धार्मिक समूह के किसी व्यक्ति के सामने सुसमाचार प्रस्तुत करने का अवसर ढूँढ़ना याद रखें। अपने सहपाठियों के साथ हुई बातचीत के बारे में बताने के लिए तैयार रहें। अपना 2-पृष्ठ वाला प्रतिवेदन लिखकर अपनी कक्षा के अगुवे को सौंप दें।

# पाठ 8
# हिन्दू धर्म

## पहली मुलाकात

अमित का पालन-पोषण एक हिन्दू परिवार में हुआ था और उन्होंने सभी धार्मिक रीति-रिवाजों में भाग लिया था। जब वह बच्चा था तो हर दिन पूजा किया करता था।वह बहुत ही सीधा था, लेकिन अध्यात्मिक खालीपन को महसूस कर रहा था। अमित ने अपने धर्म को बेहतर ढंग से समझने की कोशिश करने के लिए हिंदू लेखन पढ़ें। उसे सिखाया गया था कि विश्वास मायने नहीं रखते क्योंकि सभी धर्म ईश्वर तक पहुंचने के तरीके हैं। वह वास्तव में वह सच्चाई खोजना चाहता था जो उसे ईश्वर तक पहुँचा दे,लेकिन वह सोचत था कि क्या ऐसी कोई सच्चाई विद्यमान है।

## वचन का अध्ययन – भाग 1

► यशायाह 46 को ऊँची आवाज में मिलकर पढ़ें। प्रत्येक छात्र एक अनुच्छेद लिखे जो इस पवित्रशास्त्र के अंश का सारांश प्रस्तुत करे। इस अनुच्छेद में परमेश्वर और मूर्तियों के बीच क्या विरोधाभास दिखाया गया है? प्रत्येक छात्र कथनों की एक सूची बनाए। जो आपने लिखा है उस पर सामूहिक रूप से चर्चा करें।

## हिन्दू धर्म

### हिन्दू धर्म का परिचय

भारत में हिन्दू धर्म की शुरुआत इतिहास में इसके बारे में दर्ज किसी भी लेख से बहुत पहले हुई। हिन्दू धर्म का कोई व्यक्तिगत संस्थापक नहीं है और न ही कोई संगठन है जिसमें सभी अनुयायी शामिल हो। एक अरब से अधिक हिन्दू हैं,[17] लेकिन उनके पास कई तरह की मान्यताएं हैं। कई हिन्दू केवल कुछ हिन्दू धार्मिक रीति-रिवाजों का पालन करते हैं।

> "ईश्वर का असीम रूप से बुद्धिमान विचार सभी सत्यों का मूल है। यह ईश्वर के बारे में अन्य सभी मान्यताओं की ध्वनि के लिए आवश्यक विश्वास का एक आधार है।"
> - एडब्ल्यू टोज़र
> द नॉलेज ऑफ़ द होली

हिंदुओं का मानना है कि उनका धर्म प्राचीन भारतीय लेखन से उत्पन्न हुआ है जिसे वेद कहा जाता है। वेद सैकड़ों खंडों से बने हैं।

ऐसा कोई सैद्धांतिक कथन नहीं है जो देवता के बारे में सार्वभौमिक हिन्दू विश्वास का प्रतिनिधित्व करता हो। अधिकांश हिन्दू कई देवताओं में विश्वास करते हैं जिनके भिन्न व्यक्तित्व हैं और वे अच्छे और बुरे दोनों काम करते हैं। हिन्दू कई मूर्तियों का उपयोग करते हैं जो उन देवताओं और आत्माओं का प्रतिनिधित्व करती हैं जिनकी वे पूजा करते हैं।

---

[17] "धर्म: हिन्दू धर्म," Joshua Project, https://joshuaproject.net/religions/5, 11 अप्रैल, 2023 को एक्सेस किया गया।

***यीशु ने कहा कि हमें केवल एक सच्चे परमेश्वर की सेवा करनी चाहिए लूका 4:8 देखें।***

कुछ हिन्दू एक ईश्वर को सर्वोच्च मानते हैं। कुछ हिन्दू भगवान शिव को सर्वोच्च कहते हैं; अन्य के पास हिन्दू किसी और भगवान को सर्वोच्च मानते हैं। भगवान शिव की एक पत्नी और बच्चे हैं। शिव अच्छा और बुरा दोनों करते हैं। कुछ लोग *भगवान शिव* को रचयिता तो कहते हैं परन्तु वे यह नहीं मानते कि सृष्टि किसी विशेष समय पर रची गई थी।

"मैं सर्वशक्तिमान पिता परमेश्वर में विश्वास करता हूँ, जो स्वर्ग और पृथ्वी का कर्त्ता है।"
- रसूलों का अकीदा

जब हिन्दू एक सर्वोच्च ईश्वर के बारे में बात करते हैं, तो उनका मतलब वही नहीं होता है जो मसीहियों का परमेश्वर के बारे में बात समय होता है। मसीही मानते हैं कि ईश्वर दुनिया की अंतिम वास्तविकता और व्यक्तिगत निर्माता है। हिन्दू कहते हैं कि वे एक ईश्वर में विश्वास करते हैं, लेकिन वह मानते हैं कि भगवान सीधे नहीं वरन उन अवतारों के द्वारा बात करते हैं जिन्होंने मनुष्य के रूप में जन्म लिया है।

***यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता कहता है कि सारी चीज़ों को परमेश्वर ने अपनी सामर्थ्य से रचा है, और सारे झूठे देवता नष्ट होंगे , यिर्मयाह 10:9-12 देखें। परमेश्वर लोगों से बातें करते और अपने बारे में बताते हैं यशायाह 46:9-10 देखें।***

हिंदुओं का मानना है कि एक परम, अवैयक्तिक शक्ति है जिसने दुनिया की उत्पत्ति की। कुछ हिन्दू उस परम शक्ति को ब्रह्म कहते हैं। उनका मानना है कि जो कुछ भी मौजूद है वह ब्रह्म का हिस्सा है। उनका मानना है कि ब्रह्म हर जीवित चीज में आत्मा या आवश्यक जीवन है। वे यह भी कह सकते हैं कि वे केवल एक ही ईश्वर में विश्वास करते हैं, परन्तु उनके कहने का अर्थ यह है कि जो कुछ भी अस्तित्व में है वह एक है, और वह परमेश्वर है।

***उत्पत्ति 1 में लिखा है कि परमेश्वर ने हर चीज़ को आदेश देकर रचा। वह रची गयी चीज़ों से अलग है उत्पत्ति 1:1 देखें।***

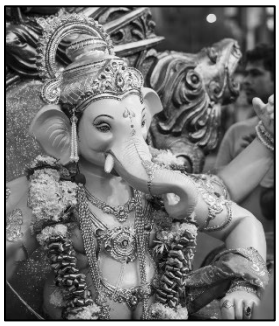

हिंदुओं का मानना है कि लोगों के हित के लिए काम करने वाला कोई भी महान अगुवा या मार्गदर्शक बाद में भगवान बन सकता है। प्रत्येक व्यक्ति ब्रह्म का प्रकटीकरण है, लेकिन ईश्वर वह व्यक्ति है जिसने दूसरों की तुलना में ब्रह्म को अधिक प्रकट किया।[18]

► ईश्वर के सन्दर्भ में मसीहियों और हिंदूओं की अवधारणाओं के बीच कुछ अंतर क्या हैं?

हिन्दू लोग कहते हैं कि वे सभी धर्मों का सम्मान करते हैं। वे कहते हैं कि “सभी सत्य एक हैं”। वे कहते हैं कि लक्ष्य तक पहुँचने के कई मार्ग हैं, हालाँकि विभिन्न धर्मों में इस बात की अवधारणाएँ भिन्न हैं कि किसी व्यक्ति को किस तरह का जीवन जीना चाहिए और किस लक्ष्य तक पहुँचने का प्रयास करना चाहिए। वे “सारी सच्चाई एक है” का मतलब यह नहीं लेते कि विभिन्न धर्मों में सभी सत्य तर्कसंगत रूप से एक दूसरे के अनुरूप हैं। उनका मतलब है कि सभी सत्य अंतिम वास्तविकता की अभिव्यक्ति है जिसे बयानों में नहीं डाला जा सकता है।

[18] Image by Ganesh Chaturti from Unsplash, retrieved from https://unsplash.com/photos/Mawa0oZ3YKs.

***प्रेरित पौलुस ने कहा कि पासबान की प्राथमिक जिम्मेदारी सच्ची शिक्षा प्रदान करना है तीतुस 1:9। सारे धर्म समान नहीं हैं 1 तीमुथियुस 1:3-6 देखें।***

मसीही मानते हैं कि भले ही परमेश्वर हमारी समझ से बड़े हैं, उसने अपने बारे में सच्चाई को प्रकट किया है। यदि कोई धर्म उस सत्य का खंडन करता है, जिसे परमेश्वर ने अपने बारे में प्रकट किया है, तो वह धर्म गलत है।

कुछ हिंदुओं का मानना है कि यीशु एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने हिन्दू धर्म के सिद्धांतों का अभ्यास किया था और वह अन्य समय में रहने वाले अन्य लोगों की तरह ही एक महान शिक्षक थे। वे विश्वास नहीं करते कि वह परमेश्वर के अद्वितीय पुत्र हैं।

हिन्दू समय के अंतहीन चक्रों में विश्वास करते हैं, जिसकी न कोई शुरुआत न है न कोई अंत है, और कोई घटना नहीं है जो चीजों को स्थायी रूप से बदल देती है।

हिन्दू पुनर्जन्म में विश्वास करते हैं। उनका मानना है कि मनुष्य कई बार विभिन्न जीवन रूपों में पुनर्जन्म लेता है।

***बाइबल कहती है कि मनुष्य एक बार जन्म लेता है और फिर उसे परमेश्वर के न्याय का सामना करना पड़ता है इब्रानियों 9:27।***

हिन्दू कर्म में विश्वास करते हैं। कर्म की अवधारणा के अनुसार, एक व्यक्ति इस जीवन और अगले जीवन में अपने कार्यों के लिए अच्छे और बुरे परिणाम प्राप्त करता है। कर्म ब्रह्मांड का एक प्राकृतिक नियम है, जो किसी भी देवता द्वारा थोपे गए कानूनों पर आधारित और किसी भी देवता द्वारा विनियमित नहीं है।

> "एक मसीही मनुष्य में,अर्थात् मानव-व्यक्ति के असीम मूल्य में और ईश्वर की मुक्तिदायी कृपा के द्वारा साकार होने वाली अमूल्य क्षमता में विश्वास रखता है।"
> -डब्ल्यू.टी. पुरकिसर
> एक्सप्लोरिंग आवर क्रिस्चियन फेथ

***मसीही लोग परमेश्वर की व्यवस्था का पालन करते हैं और उनका परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत सम्बन्ध होता है, यूहन्ना 14:15 देखें। बाइबल कहती है कि मसीह सारे लोगों का अपने धर्मी माप के आधार पर न्याय करेगा, प्रेरितों 17:31, 2 कुरिन्थियों 5:10, याकूब 4:12 देखें।***

किसी व्यक्ति के काम अगर खुद को या दूसरों को नुकसान पहुंचाते हैं तो वह दोषी है। वह बेहतर परिणाम प्राप्त करने के लिए अच्छे कार्यों के साथ गलत कार्यों को संतुलित कर सकता है। लेकिन, कोई क्षमा नहीं है।

हिन्दू का अंतिम लक्ष्य पुनर्जन्म के चक्र से मुक्ति पाकर निर्वाण नामक एक शाश्वत स्थिति को पाना है। कुछ हिन्दू इस स्थिति को स्वयं के शाश्वत अस्तित्व के रूप में परिभाषित करते हैं, जबकि अन्य इसे समुद्र में गिरने वाले पानी की बूंद की तरह ब्रह्म में अवशोषण के रूप में देखते हैं। कई हिंदुओं का मानना है कि जब वह ब्रह्म में लीन हो जाता है तो व्यक्ति एक सचेत व्यक्ति के रूप में अस्तित्व में नहीं रहता है।

***मसीही विश्वासी का लक्ष्य स्वर्ग में परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत् सम्बन्ध में अनन्तकाल तक रहना है, प्रकाशितवाक्य 21:3 देखें।***

► निर्वाण की हिन्दू अवधारणा और स्वर्ग के सन्दर्भ में मसीहियों की अवधारणा के बीच क्या अंतर हैं?

**हिन्दू जीवन शैली**

हिन्दू मान्यता के अनुसार, जो लोग दुनिया को पूरी तरह से त्याग चुके हैं, उन्हें भोजन का उत्पादन, तैयारी या भंडारण नहीं करना चाहिए। उन्हें हर दिन अपने भोजन के लिए भीख मांगनी चाहिए। इसलिए कुछ रिश्तेदारों पर निर्भर करते हैं; अन्य लोग घर-घर भीख मांगने जाते हैं। हिन्दू अनुयायियों का सबसे अच्छा उदाहरण खुद का समर्थन करने के लिए काम नहीं करता है।

***बाइबल कहती है कि एक व्यक्ति को किसी अन्य व्यक्ति पर निर्भर नहीं होना चाहिए और न ही काम करने से इनकार करना चाहिए; 2 थिस्सलुनीकियों 3:10 देखें।***

कई हिन्दू शाकाहारी होते हैं। और जो लोग मांस खाते हैं, उनमें से अधिकांश गोमांस नहीं खाते हैं क्योंकि वे गायों में श्रद्धा रखते हैं। भोजन अक्सर खाने से पहले मूर्तियों को चढ़ाया जाता है, यहां तक कि घरों में भी।

***बाइबल कहती है कि सब प्रकार का मांस खाना चाहिए 1 तीमुथियुस 4:3-4 देखें।***

हिंदुओं में धार्मिक महत्व के साथ बहुत विस्तृत मंदिर कला और वास्तुकला, वेशभूषा और व्यक्तिगत अलंकरण हैं।

हिंदुओं का मानना है कि उन्हें जीवन के हर रूप के बारे में समान रूप से ध्यान रखना चाहिए। उनका मानना है कि एक व्यक्ति को पीड़ित कुत्ते की देखभाल करनी चाहिए जैसे वह अपने बेटे की देखभाल करेगा। उनका मानना है कि किसी भी रिश्ते में किसी व्यक्ति को किसी की जरूरत के बारे में भावनाएं नहीं रखनी चाहिए। उनका मानना है कि रिश्ते की वजह से किसी की देखभाल करना एक गलत प्रेरणा है। उनका मानना है कि ब्रह्म में किसी भी चीज के बारे में कोई भावना नहीं है, कोई दुःख नहीं है और कोई खुशी नहीं है। एक हिन्दू को उस स्तर तक पहुंचने की कोशिश करनी चाहिए।

जब हिन्दू सभी के बारे में समान रूप से देखभाल करने की बात करते हैं, तो उन्हें ऐसा लग सकता है कि उनके पास मसीहियों के समान विचार हैं। वास्तव में यह बिल्कुल भी समान नहीं है। मसीही मानते हैं कि उन्हें अपने समान दूसरों से प्यार करना चाहिए। हिंदुओं का मानना है कि आपको दूसरों या खुद के बारे में चिंता नहीं करनी चाहिए।

एक हिन्दू के लिए, ध्यान करने का अर्थ है अपने मन पर पूर्ण नियंत्रण रखना, ताकि कोई भी विचार आपकी अनुमति के बिना न आए। उनकी पूजा मन को खाली करने के लिए तैयार गई है। यही कारण है कि मंत्रो का जाप, ध्वनियों और शब्दों और अभ्यासों का उपयोग करते हैं। ध्यान का उद्देश्य कुछ भी नहीं सोचना है। योग मन को साफ करने के लिए व्यायाम की एक हिन्दू प्रणाली के रूप में शुरू हुआ।

हिन्दू मन को केंद्रित करने के तरीके के रूप में देवताओं से प्रार्थना करते हैं। यदि एक हिन्दू पूर्ण ध्यान प्राप्त कर लेता है, तो उसे अब देवताओं और प्रार्थना करने की आवश्यकता नहीं होगी। वे सीधे ब्रह्म से प्रार्थना नहीं करते हैं।

► अब वापस जाएं और ***बोल्ड और इटैलिक किए गए*** पाठ और प्रत्येक पवित्रशास्त्र को पढ़ें।

## सुसमाचार प्रचार

क्योंकि हिन्दू बाइबल पर विश्वास नहीं करते, इसलिए उनके विश्वास का खंडन करने के लिए ग्रंथों का उपयोग करने से उनका मन नहीं बदलेगा। इसके बजाय, बाइबल के सुसमाचार को इस तरह से प्रस्तुत करें जो उनकी आवश्यकता को पूरा करता है। ईश्वर के साथ संबंध की मसीही की व्यक्तिगत गवाही हिन्दू की ईश्वर को जानने की आवश्यकता को छूने में मदद करती है।

सृष्टिकर्ता परमेश्वर और संसार को सँभालने वाले परमेश्वर, एक ऐसा व्यक्ति है जो हिन्दू ब्रह्म के विपरीत सोचता और बोलता है।

परमेश्वर धर्मी और प्रेमी है, उसके स्वभाव में कोई बुराई नहीं है। हिन्दू देवताओं के के अपने चरित्र में स्वार्थी उद्देश्य और संघर्ष होता है लेकिन इसके विपरीत, परमेश्वर पर हमेशा भरोसा किया जा सकता है।

परमेश्वर मानव जाति से प्रेम करते हैं और उसने हमें उसके साथ संबंध में रहने के उद्देश्य से बनाया है। उसके पास हमारे जीवन के लिए एक रूपरेखा और हमारे लिए स्वर्ग में उसके साथ अनन्तकाल तक रहने की योजना है। हम में से प्रत्येक व्यक्तिगत रूप से परमेश्वर को पिता के रूप में जान सकता है।

लोग व्यक्तिगत रूप से परमेश्वर से अलग हो गए हैं क्योंकि उन्होंने उसकी इच्छा के विरुद्ध पाप किया है। प्रत्येक व्यक्ति का पाप निमित परमेश्वर के द्वारा व्यक्तिगत रूप से न्याय किया जाएगा। यह अवैयक्तिक कर्म की हिन्दू अवधारणा से अलग है जो प्रकृति के नियम के रूप में कार्य करता है।

यीशु हमारे पापों के लिए बलिदान के रूप में मरने के लिए परमेश्वर की देहधारण करके आए ताकि हमें क्षमा किया जा सके। प्रत्येक व्यक्ति यीशु के बलिदान के आधार पर क्षमा माँगकर परमेश्वर के साथ पुन: सम्बन्ध बना सकता है।

क्षमा के द्वारा हम दूरस्थ, परवाह न करने वाले देवताओं की आराधना करने की बजाय जिन्होंने हमसे कोई प्रतिज्ञा नहीं की है, परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत् सम्बन्ध में आ जाते हैं, जो हमसे प्रेम करते और जिन्होंने ने हमें अपनी सन्तान के रूप में अपनाने की प्रतिज्ञा की है।

## एक गवाही

जब अमित पहली बार एक मसीही से मिला, तो वह इस विचार से नाराज था कि परमेश्वर तक पहुँचने का केवल एक ही मार्ग है। जब उसने बाइबल में यीशु के दृष्टांतों को पढ़ा, तो वह यह देखकर चकित रह गया कि वे उसके जीवन पर कैसे लागू होते हैं। जब उसने बाइबल की सटीकता पर शोध किया, तो उसने पाया कि बाइबल अपने मूल लेखन से अच्छी तरह से संरक्षित है। एक दिन उसने यीशु के क्रूस पर चढ़ने के बारे में एक फिल्म देखी और मसीह में अपना विश्वास रखने का निर्णय लिया। अमित कहता है, "अगर मसीही धर्म केवल दूसरे मान्य धर्मों में से एक है, तो मैंने जो बलिदान किए, जिसमें मेरे परिवार की शांति का नुकसान भी शामिल था, मूर्खतापूर्ण था। मैं अपने हिन्दू धर्म में सहज था और एक सक्रिय पूजा पाठ के जीवन का आनंद ले रहा था; लेकिन मैंने धीरे-धीरे एक खालीपन महसूस किया और कलीसिया के भीतर से परमेश्वर की बुलाहट का हठपूर्वक विरोध किया। यह सच्चाई और प्रेम ही था जिसने अंततः मुझे मसीह को प्रभु के रूप में स्वीकार करने के लिए मजबूर किया।

## वचन का अध्ययन – भाग 2

► अब यशायाह 46 को फिर से पढ़ें। प्रत्येक छात्र एक अनुच्छेद लिखे जिसमें इस अंश का संदेश हिंदुओं के लिए समझाया गया हो। कुछ छात्र अपनी लिखी बातें साझा कर सकते हैं।

## प्रत्येक पाठ के लिए निर्धारित कार्य

इस धार्मिक समूह के किसी व्यक्ति के सामने सुसमाचार प्रस्तुत करने का अवसर ढूँढ़ना याद रखें। अपने सहपाठियों के साथ हुई बातचीत के बारे में बताने के लिए तैयार रहें। अपना 2-पृष्ठ वाला प्रतिवेदन लिखकर अपनी कक्षा के अगुवे को सौंप दें।

# पाठ 9
# बौद्ध धर्म

## पहली मुलाकात

यो का पालन पोषण फिलिपीन्स के एक बौद्ध परिवार में हुआ था । वह उस समय को याद करते हैं जब बाजार जाना सुरक्षित नहीं था क्योंकि मुसलमान बौद्धों को उनके धर्म के लिए मार रहे थे। यो कभी-कभी अपनी माँ के साथ बौद्ध मंदिर में धूप जलाने जाता था। एक दिन उसकी बहन बीमार थी और मर रही थी। एक डॉक्टर वहां मौजूद था लेकिन वह कोई मदद नहीं कर सका। यो की माँ ने बड़ी लौ लगाकर बुद्ध भगवान से मदद करने के लिए प्रार्थना की।

## वचन का अध्ययन – भाग 1

► उत्पत्ति 3 को ऊँची आवाज में मिलकर पढ़ें। प्रत्येक छात्र एक अनुच्छेद लिखे जो इस पवित्रशास्त्र के अंश का सारांश प्रस्तुत करे। यह अंश हमें परमेश्वर, मनुष्य, पाप और संसार के बारे में क्या बताता है? प्रत्येक छात्र कथनों की एक सूची बनाए। जो आपने लिखा है उस पर सामूहिक रूप से चर्चा करें।

## बौद्ध धर्म

### बौद्ध धर्म का मूल

बौद्ध धर्म का विकास सिद्धार्थ गौतम ने किया था। सिद्धार्थ गौतम के जीवन के बारे में उनकी मृत्यु के 400 साल बाद तक कुछ भी नहीं लिखा गया था, इसलिए उनके जीवन के बारे में विवरण निश्चित नहीं हैं।

गौतम का जन्म लगभग 563 ईसा पूर्व हुआ था। वह भारत के एक छोटे से हिस्से के राजा का बेटे थे। युवावस्था में वह दुनिया को देखने के लिए अपने रखवालों से बचकर बाहर निकल जाया करते थे। उन्होंने लोगों को गरीबी और बीमारी में देखा, और निष्कर्ष निकाला कि जीवन दुःख और पीडाओं से भरा हुआ है।

गौतम को एक अनुभव हुआ जिसने उन्हें वास्तविकता की प्रकृति के बारे में बताया। बुद्ध शब्द का अर्थ “ प्रकाशमान” होता है। गौतम को अक्सर "बुद्ध" कहा जाता है।

***बाइबल हम से कहती है कि उस आत्मा के संदेश पर भरोसा न करें जो यीशु मसीह को स्वीकार नहीं करता है, 1 यूहन्ना 4:3 देखें। गौतम को मिला प्रकाश झूठा था।***

### वर्तमान प्रभाव

आज बौद्ध धर्म के कई अलग-अलग संप्रदाय हैं। वे एक विश्वव्यापी संगठन में एकजुट नहीं हैं।

बौद्धों द्वारा पवित्र ग्रंथ माने जाने वाले ग्रन्थ में हजारों खंड हैं। इसलिए, प्रत्येक संप्रदाय उन सभी का अध्ययन करने की कोशिश करने के बजाय कुछ लोगों पर ध्यान केंद्रित करता है।

► एक मसीही द्वारा बाइबल को देखना बौद्ध धर्म के अनुयायियों द्वारा अपने धर्मग्रंथ को देखने से कैसे अलग है ?

दुनिया में बौद्ध शिक्षाओं का पालन करने वालों की संख्या कम से कम 350 मिलियन है। एक अरब से अधिक लोगों ने बौद्ध धर्म की शिक्षा प्राप्त की है इसलिए वे अपने आपको बौद्ध कहते हैं और वे किसी दूसरे धर्म के प्रति वफादार नहीं हैं।

बहुत से लोग स्वयं को बौद्ध कहते हैं क्योंकि वे बौद्ध लेखन की कुछ शिक्षाओं पालन करते हैं। वे बौद्ध धर्म के मूलभूत सिद्धांतों को नहीं समझ सकते हैं और न ही संगठित समूहों में भाग ले सकते हैं।

> निश्चय ही परमेश्वर वहाँ है। वह वहाँ है क्योंकि वह हर जगह है, वह किसी पेड़ या पत्थर तक ही सीमित नहीं है, लेकिन सारे जगत में स्वतंत्र, सब कुछ के पास, हर किसी के बगल में, और यीशु मसीह के माध्यम से हर प्यार करने वाले दिल के लिए उपलब्ध है।
>
> - एडब्ल्यू टोज़र
>
> दी नॉलेज ऑफ़ दी होली

### ईश्वर और समय के बारे में विश्वास

बौद्ध व्यक्ति के रूप में सर्वोच्च ईश्वर में विश्वास नहीं करते हैं। वे एक परम वास्तविकता में विश्वास करते हैं जो मौजूद हर चीज का कुल योग है। इसलिए, बौद्ध ध्यान करते हैं, लेकिन वे प्रार्थना नहीं करते, क्योंकि वे नहीं मानते कि कोई बोलने या सुनने वाला ईश्वर है है। बौद्धों के पास ऐसी लेख हैं जिन्हें प्रार्थना कहा जाता है, लेकिन वे किसी को संबोधित नहीं करते हैं। बौद्ध धर्म में किसी भी प्रकार का कोई देवता महत्वपूर्ण नहीं है।

***मसीहियों के लिए यह एक विशेषाधिकार है कि वे आत्मविश्वास के साथ प्रार्थना करें क्योंकि परमेश्वर सुनते हैं, मत्ती 6:6-8 और 1 यूहन्ना 5:14-15 देखें।***

बौद्ध समय के अंतहीन चक्रों में विश्वास करते हैं, जिसकी कोई शुरुआत नहीं है, कोई अंत नहीं है, और कोई ऐसी घटना नहीं है जो चीजों को स्थायी रूप से बदल दे।

***बाइबल कहती है की कुछ महत्वपूर्ण घटनाएँ होंगी और समय हमेशा ऐसा नहीं रहेगा जैसा वर्तमान में है, 2 पतरस 3:10 देखें।***

### पुनर्जन्म और निर्वाण

गौतम और उनकी संस्कृति के अधिकांश लोग पहले से ही पुनर्जन्म में विश्वास करते थे, इससे पहले कि गौतम ने अपना नया धर्म विकसित किया। पुनर्जन्म का अर्थ है कि किसी व्यक्ति

> अपने पहले ही पृष्ठों में, बाइबल दार्शनिक सर्वेश्वरवाद (यह शिक्षा कि परमेश्वर और पूरा जगत एक समान है) और देववाद (यह सिद्धान्त कि परमेश्वर ने जगत का संचालन आरम्भ किया और तत्पश्चात् इसे उसके अवैयक्तिक नियमों पर छोड़ दिया) को अस्वीकार कर देती है। ईश्वर की पहचान जगत से नहीं है। यह उसकी रचना है। दूसरी ओर, जगत परमेश्वर की रचनात्मक और बनाए रखने की शक्ति के बिना मौजूद नहीं हो सकता है।
>
> - डब्ल्यू.टी. पुरकिसर
>
> *गॉड मैन एंड साल्वेशन*

की मृत्यु के बाद वह किसी अन्य व्यक्ति या प्राणी जैसे जानवर या कीट के रूप में फिर से जन्म लेता है। पुनर्जन्म से एक व्यक्ति कई जीवन जीता है।

बौद्धों का मानना है कि यदि किसी व्यक्ति के अच्छे कर्म (अच्छे कर्म) उसके बुरे कर्मों (बुरे कर्मों) से अधिक हैं, तो वह अगली बार बेहतर जीवन में जन्म ले सकता है।

***बाइबल कहती है कि हमारे काम परमेश्वर के साथ स्वीकृति अर्जित या हमारे पापों का भुगतान नहीं करते हैं, रोमियों 3:20 देखें।***

गौतम के अनुसार, एक व्यक्ति के आत्म चेतन का पुनर्जन्म नहीं होता है। केवल कुछ सामग्री जिससे मनुष्य बना था, का उपयोग एक नया प्राणी बनाने के लिए किया जाता है। इसका मतलब है कि एक जीवन में मृत्यु वास्तव में एक व्यक्तित्व का अंत है।

***यीशु उस पर विश्वास करने वाले लोगों को अनन्त जीवन देते, यूहन्ना 10:27-28 देखें।***

कभी-कभी लोग पुनर्जन्म की अवधारणा को पसंद करते हैं, लेकिन जीवन के कष्टदायी होने के कारण, गौतम ने महसूस किया कि कई जीवन जीना अच्छी बात नहीं है। उनका मानना था कि एक व्यक्ति के जीवन का लक्ष्य पुनर्जन्म के चक्र से बचना होना चाहिए।

> "मैं प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करता हूं ... जिसके द्वारा सब कुछ बनाया गया, जो हम मनुष्यों के लिए और हमारे उद्धार के लिए स्वर्ग से नीचे आया ... और मनुष्य बनाया गया और हमारे लिए क्रूस पर चढ़ाया गया।
> - निसीन पंथ

एक गंभीर बौद्ध सभी इच्छाओं से छुटकारा पाने के लिए बौद्ध जीवन शैली का अनुसरण करता है। यदि वह सफल होता है, तो वह किसी भी चीज या किसी मानवीय रिश्ते की इच्छा या आनंद नहीं लेता।

***मसीहियों के लिए, मानवीय रिश्ते बहुत महत्वपूर्ण हैं और खुशी लाते हैं, 1 थिस्सलुनीकियों 3:12 देखें।***

एक बौद्ध का मानना है कि जब वह मर जाता है, तो वह एक और जीवित चीज के रूप में पैदा होने के बजाय निर्वाण में प्रवेश करेगा। यह एक प्रतिबद्ध बौद्ध का अंतिम लक्ष्य है। कभी-कभी लोग मानते हैं कि निर्वाण मसीहियों की स्वर्ग की अवधारणा की तरह है। लेकिन निर्वाण का अर्थ है शून्यता, स्वयं का अंत, जैसे मोमबत्ती को बुझाना। यदि कोई व्यक्ति निर्वाण तक पहुंचता है, तो वह अब एक विचारशील प्राणी के रूप में मौजूद नहीं है।

बौद्ध धर्म में, एक व्यक्ति को अपने वर्तमान जीवन के अंत में तब तद निर्वाण तक पहुंचने की संभावना नहीं होती जब तक कि वह बौद्ध भिक्षु न बन जाए। एक महिला को निर्वाण प्राप्त करने की संभावना तब तक नहीं होती जब तक कि एक पुरुष के रूप में फिर से जन्म लेकर एक भिक्षु नहीं बन जाता है।

**बौद्ध धर्म के चार आर्य सत्य**

गौतम बुद्ध ने ज्ञान प्राप्ति के बाद जो मान्यताएं सिखाईं, उन्हें बौद्ध धर्म के चार आर्य सत्यों में संक्षेप में प्रस्तुत किया गया है।

1. जीवन दुःख और पीड़ा से भरा है और कोई वास्तविक खुशी नहीं है।
2. दुख इच्छाओं का परिणाम है, क्योंकि हम जो कुछ भी चाहते हैं वह स्थायी नहीं है।
3. सभी इच्छाओं का त्याग दुख से बचने का तरीका है।
4. जीवन के लिए बौद्ध नैतिकता के आठ सिद्धांत एक व्यक्ति को सभी इच्छाओं से अलग और निर्वाण की ओर ले जाते हैं।

► क्या चार आर्य सत्यों में कुछ ऐसा है जिससे एक मसीही सहमत हो सकता है?

गौतम के अनुसार, सभी दुखों का कारण इच्छाएँ होती हैं। यदि कोई व्यक्ति अपनी इच्छाओं को शून्य कर देता है तो वह पीड़ित नहीं होगा। एक प्रतिबद्ध बौद्ध होने के लिए, मनुष्य को शून्य में आनंद लेना सीखना चाहिए।

संगमजी नाम के एक बौद्ध भिक्षु के बारे में एक कहानी बताई गई है। वह एक भिक्षु बन गया और अपने परिवार को छोड़कर अपना सारा समय भटकने और ध्यान करने में बिताने लगा। एक बार जब उसकी पत्नी ने उसे पाया, तो अपने बच्चे को उसके सामने रखा, और उससे उनकी मदद करने की भीख माँगी। जब तक वह चली नहीं गई तब तक संगमजी बिना जवाब दिए बैठे रहे। गौतम ने कहा कि यह आदमी बौद्ध धर्म के लक्ष्य तक पहुंच गया था क्योंकि पत्नी के आने पर उसे कोई खुशी नहीं हुई और न ही उसके जाने पर दुःख।

***मसीही लोग विवाह को आनंद लाने वाले सम्बन्ध के रूप में मानते है, इफिसियों 5:28 देखें।***

► एक आदर्श जीवन की बौद्ध अवधारणा मसीही अवधारणा से कैसे भिन्न है?

**बौद्धों की जीवन शैली**

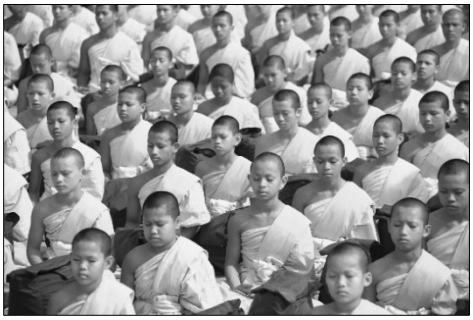

बौद्ध धर्म सदाचार के जीवन पर जोर देता है। बौद्धों का मानना है कि एक कार्य अगर खुद को और दूसरों को लाभ पहुंचाता है,और किसी को नुकसान नहीं पहुंचाता तो वह पुण्य कार्य है। किसी व्यक्ति की इच्छा को उसकी कार्रवाई के वास्तविक परिणामों से अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है।[19]

बौद्ध मानसिक और आध्यात्मिक अभ्यास किसी व्यक्ति को आत्म-केंद्रितता से स्थानांतरित करने में मदद करने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं। बौद्धों का मानना है कि सभी चिंताएं स्वयं के बारे में बहुत अधिक देखभाल करने से आती हैं। वे स्वयं को भूलना चाहते हैं और सभी चेतन प्राणियों (जिनके पास दिमाग है) से प्यार करना चाहते हैं। समस्या यह है कि परमेश्वर के साथ सम्बन्ध के बिना, निःस्वार्थता और प्रेम का कोई आधार नहीं है।

► कोई व्यक्ति परमेश्वर के साथ संबंध के बिना वास्तव में निःस्वार्थ और प्रेममय क्यों नहीं हो सकता है?

---

[19] द्वारा छवि Honey Kochphon Onshawee from Pixabay, https://pixabay.com/photos/buddhists-monks-meditate-thailand-453393/ से लिया गया।

बहुत से लोग जो स्वयं को बौद्ध कहते हैं, बौद्ध संस्कृति में पले-बढ़े हैं और उन्होंने कभी किसी अन्य चीज़ पर गंभीरता से विचार नहीं किया है। उनके धर्म की धारणाएं उन्हें एकमात्र वास्तविकता लगती हैं। अनुष्ठान उनके दैनिक जीवन का हिस्सा हैं।

आमतौर पर, जो लोग दूसरे धर्म से बौद्ध धर्म में परिवर्तित होते हैं, वे धर्म के जीवन दर्शन से आकर्षित होते हैं। वे शामिल नहीं होते क्योंकि वे निर्वाण की तलाश करना चाहते हैं। वे शामिल होते हैं क्योंकि बौद्ध धर्म एक ऐसा जीवन प्रदान करता है जो चिंता और संघर्ष से मुक्त है। बहुत से लोग महसूस करते हैं कि बौद्ध धर्म में उन्हें तनाव से मुक्ति मिलती है और उनका जीवन पहले की तुलना में अधिक व्यवस्थित है।

► अब वापस जाएं और ***बोल्ड और इटैलिक किए गए*** पाठ और प्रत्येक पवित्रशास्त्र को पढ़ें।

## सुसमाचार प्रसार/सिद्धान्त की हस्तपुस्तिका का उपयोग करना

क्योंकि बौद्ध मसीही होने का दावा नहीं करते हैं और न ही बाइबल को अंतिम अधिकार के रूप में मान्यता देते हैं, इसलिए उन्हें केवल यह दिखाना पर्याप्त नहीं है कि उनकी मान्यताएँ बाइबल के अनुरूप नहीं हैं। वे पहले से ही जानते हैं कि बाइबल उनके अपने धर्म से भिन्न धर्म का समर्थन करती हैं।

सुसमाचार साझा करना अभी भी महत्वपूर्ण और प्रभावी है। जब आप किसी बौद्ध के साथ बातचीत कर रहे हों, तो उसे बताएं कि आप अपने विश्वासों की नींव की व्याख्या करना चाहते हैं। सुसमाचार को सरलता से साझा करें। भले ही बौद्ध बाइबल पर विश्वास करने का दावा नहीं करता है, पवित्र आत्मा के कार्य के कारण परमेश्वर की सच्चाई में शक्ति है।

आपको अपनी गवाही भी साझा करें। बताएं कि कैसे सुसमाचार आपको परमेश्वर के साथ संबंध में लाया, आपको क्षमा और पाप से छुटकारा दिलाया, और आपके जीवन को अर्थ दिया।

सुसमाचार प्रस्तुति और व्यक्तिगत गवाही की मूल बातों से परे, आप सुसमाचार की सच्चाई के साथ बौद्ध की विशेष आवश्यकताओं से बात कर सकते हैं। बौद्ध धर्म जीवन के कष्टों और दुःख को समझाने के लिए संघर्ष करता है। यह अच्छी चीजों की वास्तविकता और मौजूद आनंद की व्याख्या करने में विफल रहता है। बौद्ध धर्म की शिक्षाएं मानवीय संबंधों सहित जीवन में महत्वपूर्ण लगने वाली हर चीज के महत्व को नकारती हैं। यह एक ऐसा धर्म है जिसमें कोई व्यक्तिगत ईश्वर नहीं है जिसका अपने उपासकों के साथ संबंध है। यह न तो अनन्त जीवन प्रदान करता है और न ही महत्वपूर्ण व्यक्तिगत नियति।

### पीड़ा

बौद्ध का मानना है कि दुख अर्थहीन और अवास्तविक है। यह एक असंतोषजनक व्याख्या है।

मसीही धर्म दुनिया में दुख की स्थिति की व्याख्या करता है। संसार परमेश्वर के द्वारा सिद्ध बनाया गया था, परन्तु मनुष्य ने पाप किया और संसार पर एक अभिशाप लाया। यह बताता है कि उम्र बढ़ने, बीमारी और मृत्यु क्यों है। लोगों के निरंतर बुरे कार्यों में भी पाप प्रदर्शित होता है।

## ख़ुशी

बौद्धों का मानना है कि जीवन में कोई वास्तविक खुशी नहीं है, और इसलिए हमें कुछ भी नहीं चाहिए। यह लोगों के आनंद और आनंद के अनुभवों का खंडन करता है, खासकर व्यक्तिगत संबंधों में।

सच्चाई तो यह है कि संसार परमेश्वर के द्वारा रचा गया था, यह बताता है कि क्यों जीवन में अभी भी बहुत अधिक आनन्द और आनन्द है, यद्यपि संसार उस तरह परिपूर्ण नहीं है, जैसा कि परमेश्वर ने मूल रूप से इसे तैयार किया था।

बौद्धों की तरह, मसीही महसूस करते हैं कि सांसारिक चीजें स्थायी नहीं हैं। हमें ऐसे नहीं रहना चाहिए जैसे कि हमारे पास जो कुछ है उसे हम हमेशा के लिए यहां रखेंगे। यद्यपि, एक मसीही विश्वासी जीवन का आनन्द ले सकता है, क्योंकि वह जानता है कि वह परमेश्वर के साथ सदैव जीवित रहेगा। यद्यपि बातें स्थायी नहीं हैं, लेकिन वे वास्तविक हैं, और हमारे चुनावों के अनन्तकालीन परिणाम हैं। इससे मानव जीवन को उद्देश्य और महत्व मिलता है।

## दूसरों के साथ संबंध

यदि पूरी उम्र जीवित रहे, तो बौद्ध धर्म की शिक्षाएं व्यक्ति को रिश्तों से दूर ले जाएंगी क्योंकि रिश्तों को अर्थहीन माना जाता है। लेकिन मानव स्वभाव को प्रतिबद्ध रिश्तों की गहरी आवश्यकता है।

ईश्वर ने हमें अन्य मनुष्यों के साथ सम्बन्ध बनाने के लिए बनाया है। हम दूसरों के द्वारा मूल्यवान होने की इच्छा रखते हैं। हम दूसरों के प्रति प्रतिबद्धता बनाने की इच्छा रखते हैं। रिश्ते विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं क्योंकि हम जानते हैं कि सभी लोगों को विशेष रूप से अनन्त नियति के साथ शाश्वत प्राणियों के रूप में बनाया गया है।

## ईश्वर के साथ संबंध

बौद्ध धर्म ईश्वर के बिना एक धर्म है। लेकिन हम में से प्रत्येक को परमेश्वर को जानने और उसकी आराधना करने की गहरी आवश्यकता है।

परमेश्वर ने हमें उसके साथ संबंध में रहने के लिए तैयार किया है। एक व्यक्ति तब तक पूर्ण और संतुष्ट नहीं होता जब तक कि वह परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत् सम्बन्ध में न हो। हमारे सृष्टिकर्ता के साथ संबंध शाश्वत होगा, हम परमेश्वर के साथ स्वर्ग में रहेंगे।

## पापों के लिए क्षमा

बौद्ध धर्म में पापों के लिए क्षमा की कोई अवधारणा नहीं है। गलत करने के लिए मनुष्य को जवाबदेह ठहराने वाला कोई नहीं है, और गलत कार्यों का प्रायश्चित करने वाला भी कोई नहीं है। इन बातों के कारण, बौद्धों के पास क्षमा का कोई आश्वासन नहीं है।

बाइबल हमें दिखाती है कि प्रत्येक व्यक्ति दोषी है और उसे पाप की क्षमा की आवश्यकता है। क्योंकि यीशु ने हमारे लिए प्रायश्चित किया है, हमें आश्वस्त किया गया है कि हमें क्षमा किया जा सकता है।

बौद्ध के साथ साझा करने के लिए *सिद्धान्त की हस्तपुस्तिका* से निम्नलिखित अनुभागों का उपयोग करें:

(9) उद्धार केवल मसीह के प्रायश्चित से ही है।

(11) हम विश्वास के द्वारा उद्धार पाते हैं।

(12) हमें उद्धार का व्यक्तिगत आश्वासन मिल सकता है।

## एक गवाही

यो की माँ ने भगवान् बुद्ध से अपनी मरती हुई बेटी को ठीक करने के लिए गहन प्रार्थना की, लेकिन ऐसा लग रहा था कि उसे कोई मदद नहीं मिली। तभी उसे पास में प्रचार कर रहे वोंग नाम के एक मसीही मिशनरी की याद आई। उसने यो को उसे लाने के लिए भेजा। जब वोंग आया, तो उसने कहा, "बुद्ध से नहीं; यीशु से प्रार्थना करो। वोंग प्रार्थना करने लगा, और लड़की ठीक हो गई। यो की माँ उस दिन मसीही बन गई, और बाद में यो भी एक मसीही बन गई।

## वचन का अध्ययन – भाग 2

► अब उत्पत्ति 3 को फिर से पढ़ें। प्रत्येक छात्र एक अनुच्छेद लिखे जिसमें इस अंश का संदेश बौद्धों के लिए समझाया गया हो। कुछ छात्र अपनी लिखी बातें साझा कर सकते हैं।

## प्रत्येक पाठ के लिए निर्धारित कार्य

इस धार्मिक समूह के किसी व्यक्ति के सामने सुसमाचार प्रस्तुत करने का अवसर ढूँढ़ना याद रखें। अपने सहपाठियों के साथ हुई बातचीत के बारे में बताने के लिए तैयार रहें। अपना 2-पृष्ठ वाला प्रतिवेदन लिखकर अपनी कक्षा के अगुवे को सौंप दें।

# पाठ 10
# ताओ धर्म

## पहली मुलाकात

चिंग शान मलेशिया में एक ताओवादी परिवार में पले-बढ़े। उनके परिवार के पास पूर्वजों की पूजा के लिए मूर्तियाँ और एक वेदी थी। चिंग शान मूर्तियों से डरते थे, लेकिन उन्हें बलि भी चढ़ाते थे क्योंकि उन्हे डर था कि अगर वह ऐसा नहीं करेंगे तो वे उन्हे सज़ा देंगी। उन्होने यीशु के बारे में सुना था, लेकिन उन्हे लगता था कि यीशु केवल पश्चिमी लोगों के परमेश्वर थे।

## वचन का अध्ययन – भाग 1

► भजन संहिता 16 को ऊँची आवाज में मिलकर पढ़ें। प्रत्येक छात्र एक अनुच्छेद लिखे जो इस पवित्रशास्त्र के अंश का सारांश प्रस्तुत करे। परमेश्वर अपने लोगों के लिए क्या कर सकते हैं, उसके विषय में यह अंश क्या कहता है? प्रत्येक छात्र कथनों की एक सूची बनाए। जो आपने लिखा है उस पर सामूहिक रूप से चर्चा करें।

## ताओ धर्म

### ताओवाद का परिचय

ताओ धर्म की शुरुआत *ताओ ते चिंग* नामक पुस्तक से हुई जिसे लाओजी नामक एक चीनी व्यक्ति ने 350 ईसा पूर्व से पहले लिखा था। यह निश्चित नहीं है कि लाओजी एक व्यक्ति था या फिर यह कई लेखकों से एकत्र किया गया लेखन था। झुआंगज़ी नामक व्यक्ति के लेखन ने भी धर्म को प्रभावित किया।

ताओवाद को दाओवाद भी कहा जाता है।

ताओवाद के धर्मग्रंथों के संग्रह में 1,000 से ज़्यादा पुस्तकें सम्मलित हैं। इस संग्रह को *ताओ ज़ांग* कहा जाता है।

ताओवाद की प्रथाएँ और अवधारणाएँ कन्फ्यूशीवाद और स्थानीय चीनी धर्मों और संस्कृति के पहलुओं से प्रभावित हैं। ताओवादी प्रथाएँ एक स्थान से दूसरे स्थान पर व्यापक रूप से भिन्न होती हैं।[20]

[20] छवि को Julian Tong के Unsplash से लिया गया हैं, https://unsplash.com/photos/ng7f_jtgbCc से निकाली गई.

ताओवादियों की संख्या का अनुमान लगाना कठिन है क्योंकि बहुत से लोग इसे व्यक्तिगत रूप से मानते हैं और चूंकि यह विभिन्न धर्मों के साथ भी मिश्रित है। यह अनुमान लगाया गया है कि चीन में 400 मिलियन ताओवादी हैं। सिंगापुर और ताइवान जैसे संसार के विभिन्न हिस्सों में चीनी आबादी के बीच ताओवाद उपस्थित है। वियतनाम और कोरिया में भी बहुत से लोग हैं।

ताओवाद के लिए कई तरह के विधालय और मठ भी उपस्थित हैं, जो किसी एक संगठन में एकजुट नहीं हैं। ताओवादी ऐसे अनुष्ठान करते हैं जिनका उद्देश्य देवताओं और आत्माओं को प्रभावित करना है। कई ताओवादी मठों में भिक्षुओं को शाकाहारी होना आवश्यक है। अनुष्ठानों में सूअरों, बत्तखों, या फलों की बलि सम्मलित हो सकती है। कभी-कभी चित्रों वाले विशेष कागज़ को इस विचार के साथ जला दिया जाता है, कि चित्र में उपस्थित वस्तु आत्मा के संसार में एक वास्तविक वस्तु बनकर उनके उपयोग में आए।

"हम एक परमेश्वर में विश्वास करते हैं, जो सर्वशक्तिमान पिता हैं, स्वर्ग और पृथ्वी, तथा सभी दृश्यमान और अदृश्य चीजों के निर्माता है।"
- नाइसिया का विश्वास

***बाइबल हमें बताती है कि हमें ऐसे काम नहीं करने चाहिए जो दूसरे धर्मों के लोग आत्मिक संसार को प्रभावित करने के लिए करते हैं, व्यवस्थाविवरण 18:10-12 देखें। परमेश्वर एक व्यक्ति है, और वह हमारा पिता है, और हम उससे बात कर सकते हैं, देख सकते हैं मत्ती 6:7-9।***

► एक मसीही को आत्मिक संसार में किस प्रकार सम्मलित होना चाहिए?

ताओवादियों के अलग-अलग समूह अलग-अलग देवताओं में विश्वास करते हैं। वे देवताओं, आत्माओं और पूर्वजों से प्रार्थना करते हैं और उनके साथ बातचीत करते हैं।

"यह वो स्वतंत्र परमेश्वर हैं जो सृष्टि के साथ घनिष्ठता से जुड़े हैं, यह वह अनंत परमेश्वर हैं जो हर स्तर पर सीमाओं को प्रायोजित और पोषित करते हैं, यह वो विशाल परमेश्वर हैं जो पूरे ब्रह्मांड और सबसे छोटी चिड़िया की भी परवाह करते हैं, यह वह अनंत परमेश्वर हैं जो समय और लौकिक प्रवाह को देते और बनाए रखते हैं।"
- थॉमस ओडेन;
जीवित परमेश्वर

***बाइबल कहती है कि जो लोग दूसरे देवताओं का अनुसरण करते हैं, उन्हें अपनी इच्छित वस्तुओं के बजाय दुःख मिलेगा, भजन संहिता 16:4 देखें।***

वे भाग्य-कथन और विभिन्न प्रकार की भविष्यद्वाणी का अभ्यास करते हैं। कुछ लोग माध्यमों में विश्वास करते हैं; ऐसे व्यक्ति जिसके माध्यम से आत्माएं संवाद करती हैं। चीन और अन्य स्थानों पर जहाँ बहुत से ताओवादी हैं, वे हर साल कई परेड करते हैं। प्रतिभागी विभिन्न देवताओं या आत्माओं का प्रतिनिधित्व करने वाली वेशभूषा में प्रदर्शन करते हैं। माना जाता है कि प्रतिभागी उस देवता या आत्मा से ग्रस्त है जिसका वह प्रतिनिधित्व कर रहे हैं।

***कुछ धर्मों में किसी व्यक्ति पर आत्मा का कब्ज़ा होना अच्छी बात मानी जाती है, लेकिन बाइबल कहती है कि आत्मा द्वारा प्रयोग किया गया व्यक्ति गुलाम है और उसे मुक्ति की आवश्यकता है, प्रेरितों 16:16-18 देखें।***

संसार पर राज करने वाले ईश्वर को यू-हुआंग, जेड सम्राट कहा जाता है। कहानी के अनुसार वह एक सम्राट के घर पैदा हुआ था, और बड़ा होकर वह एक ईश्वर बन गया। वह अन्य सभी देवताओं और आत्माओं पर शासन करता है। हालाँकि यू-हुआंग शासक देवता है,

लेकिन उसके ऊपर एक और देवता है, जो संसार से असंबंधित है, जिसके पास पूर्ण गुण हैं। युआन-शिह तिएन-त्सुन को प्रथम प्रमुख कहा जाता है, और माना जाता है कि उसका कोई आरंभ या अंत नहीं है, वह बाकी सभी से पहले उपस्थित है। माना जाता है कि वह स्वयं-अस्तित्व वाला, असीम, अपरिवर्तनीय, अदृश्य, सभी गुणों से युक्त, हर जगह उपस्थित और सभी सत्य का स्रोत है।

► ताओवादी ईश्वर की अवधारणा में क्या कमी है?

ताओवादी शब्द का ताओ उस वास्तविकता के लिए है जिसमें उपस्थित हर वस्तु सम्मलित है और उसे बनाए रखती है। ताओ शब्द का अनुवाद "मार्ग" के रूप में भी किया जाता है क्योंकि यह उस माध्यम को संदर्भित करता है जिससे वस्तुओं को बनाए रखा जाता है और उन्हें नया आकार दिया जाता है।

***बाइबल कहती है कि यीशु ही वह है जिसने सब कुछ बनाया और बनाए रखा है, कुलुस्सियों 1:16-17 देखें।***

ताओवादियों का मानना है कि ताओ को समझाया या समझा नहीं जा सकता। वे कहते हैं कि ताओ ऐसा कुछ नहीं है जिसके बारे में कुछ कहा जा सके।

***हम परमेश्वर के बारे में सब कुछ नहीं समझ सकते क्योंकि वह अनंत है, लेकिन उन्होने अपने बारे में सच्चाई प्रकट की है। यीशु हमें यह दिखाने आए कि परमेश्वर कैसे हैं, यूहन्ना 1:18 और यूहन्ना 14:6-9 देखें।***

*"यिन और यांग" चित्र ताओवादी अवधारणा को दर्शाता है कि अच्छाई और बुराई जैसे सभी विपरीत वास्तव में वास्तविकता के विभिन्न पहलू हैं।*

► मसीही वचन ताओवादी के ताओ के कथनों से किस तरह भिन्न है? क्या हम ईश्वर को समझ सकते हैं?

ताओवादियों का मानना है कि सभी विपरीत चीजें भ्रम हैं या वास्तविकता के पूरक पहलू मात्र हैं।[21] ताओवादी का लक्ष्य ब्रह्मांड की शक्तियों के साथ खुद को सामंजस्य में लाना है। उसका उद्देश्य अपने स्वास्थ्य को बेहतर बनाना और अपने जीवन को लंबा करना है। ताओवादी मानते हैं कि अगर कोई व्यक्ति ब्रह्मांड की शक्तियों से पूरी तरह समानता में आ जाए तो वह अमर हो सकता है। ताओवादियों का मानना है कि कुछ लोगों ने यह हासिल किया है और उन्हें ईश्वर के रूप में पूजा जाना चाहिए। ताओवादियों का मानना है कि यीशु एक ऐसे व्यक्ति थे जो आत्मिक रूप से उन्नत थे और उन्होंने लोगों को ईश्वर बनने का मार्ग दिखाया।

***बाइबल हमें बताती है कि हमें परमेश्वर के अलावा किसी की उपासना नहीं करनी चाहिए; मत्ती 4:10 और प्रकाशितवाक्य 22:8-9 देखें।***

---

[21] छवि: "Traditional yin and yang with dots", by Klem, से ली गई है https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Traditional_yin_and_yang_with_dots.png.

बौद्धों और हिंदुओं की तरह, ताओवादी समय के अंतहीन चक्रों में विश्वास करते हैं, जिनकी कोई शुरुआत नहीं है, कोई अंत नहीं है, और ऐसी कोई घटना नहीं है जो चीजों को स्थायी रूप से बदल दे। हिन्दू धर्म और बौद्ध धर्म के विपरीत, ताओवादी पुनर्जन्म, कर्म और मोक्ष की प्रणाली में विश्वास नहीं करते हैं।

► अब वापस जाएं और ***बोल्ड और इटैलिक किए गए*** पाठ और प्रत्येक पवित्रशास्त्र को पढ़ें।

## सुसमाचार प्रचार

क्योंकि ताओवादी बाइबल पर विश्वास नहीं करते, इसलिए उनके विश्वास का खंडन करने के लिए ग्रंथों का उपयोग करने से उनका मन नहीं बदलेगा। इसके बजाय, बाइबल के सुसमाचार को इस तरह से प्रस्तुत करें जो उनकी आवश्यक्ता को पूरा करे। एक विश्वासी की परमेश्वर के साथ सम्बंध की व्यक्तिगत गवाही, ताओवादी को परमेश्वर को जानने की आवश्यक्ता को पूरा करने में सहायता कर सकती है।

हम ताओवाद की कुछ नैतिकताओं से सहमत हो सकते हैं। वे सिखाते हैं कि लोगों को दूसरों से प्रेम करना चाहिए, नम्र होना चाहिए, स्वार्थीपन त्यागना चाहिए, दूसरों का न्याय करने से बचना चाहिए और धन-दौलत के पीछे नहीं भागना चाहिए।

उनका मानना है कि ताओ सभी वस्तुओं का स्रोत है और सभी वस्तुओं में उपस्थित है। हमारा मानना है कि परमेश्वर सभी के निर्माता हैं और हर जगह उपस्थित हैं। अंतर यह है कि हम मानते हैं कि परमेश्वर एक मन और उद्देश्य वाले हैं, और हम उनके साथ संबंध में रह सकते हैं।

उनका मानना है कि ताओ सभी प्राणियों की देखभाल करता है। हमारा मानना है कि परमेश्वर अपनी सृष्टि में सम्मलित हैं और उसकी देखभाल करते हैं, लेकिन वह यह सब सचेत रूप से करते हैं, एक पिता के रूप में जो हमसे प्रेम रखते हैं।

ताओवादियों का मानना है कि एक ऐसा ईश्वर होना चाहिए जो सर्वगुण हों, जो सब कुछ जानता हो, हर जगह उपस्थित हो और जिसमें सभी योग्यताएँ हों। यह परमेश्वर में मसीही विश्वास से मेल खाता है, और हम उनके साथ यह साझा कर सकते हैं कि वो जीवित परमेश्वर ही है जिसने सम्बंध स्थापित करने हेतु मनुष्य को अपनी छवि में बनाया। उन्हे यह समझाएँ कि जिस परमेश्वर तक हम नहीं पहुँच सकते, वह मसीह के रूप में हम तक पहुँच गए हैं। समझाएँ कि हम पाप के कारण उनसे अलग हो गए हैं, लेकिन यीशु के कारण उनसे फिर संबंध बना सकते हैं।

विश्वासी मानते हैं कि अनंत, निरपेक्ष परमेश्वर ने मनुष्य को अपना संदेश बाइबल के रूप में दिया है। ताओवादी के साथ सुसमाचार साझा करने की पेशकश करें, ताकि वह यह तय कर सके कि उसे यह परमेश्वर का संदेश मानना है या नहीं।

## एक भ्रामक विविधता

► एक छात्र को इस भाग को पढ़ना और समझाना चाहिए। एक समूह के रूप में, उन धर्मों की शाखाओं की सूची बनाएँ जिनके बारे में आपने सुना है।

हिन्दू धर्म, बौद्ध धर्म और ताओवाद की कई शाखाएँ हैं जिनके अलग-अलग नाम हैं। उदाहरण के लिए, फालुन गोंग इन तीनों पर आधारित एक धर्म है, लेकिन खास तौर पर बौद्ध धर्म पर। फालुन गोंग की तरह, कोई धार्मिक आंदोलन एक व्यक्तिगत शिक्षक से शुरू हो सकता है जो कुछ चीजों को बदलता है और धर्म का अभ्यास करने का अपना तरीका सिखाता है। ऐसा आसानी से हो सकता है क्योंकि इन धर्मों में उनकी मौलिक मान्यताओं का स्पष्ट विवरण नहीं है।

पूर्वी धर्मों की शाखाओं के अनुयायियों में बहुत कुछ समान है और वे अपनी शाखा को ही एकमात्र सच्चा धर्म नहीं मानते। वे अन्य धार्मिक समूहों से भी विवरण उधार लेते हैं।

कुछ शाखाएँ शारीरिक स्वास्थ्य या जीवन के तनाव का उत्तर देने के तरीकों पर ज़ोर देती हैं। बहुत से लोग व्यावहारिक लाभ के लिए मानसिक और शारीरिक व्यायाम करते हैं और धार्मिक मान्यताओं के बारे में ज़्यादा नहीं सोचते। वे यह भी सोच सकते हैं कि वे जो करते हैं वह धर्म नहीं है। हालाँकि, ये अभ्यास वचन और ब्रह्मांड विज्ञान पर आधारित हैं जो बाइबल की सच्चाई का खंडन करते हैं।

## वचन का अध्ययन – भाग 2

► अब भजन संहिता 16 को फिर से पढ़ें। प्रत्येक छात्र एक अनुच्छेद लिखे जिसमें इस अंश का संदेश ताओवादियों के लिए समझाया गया हो। कुछ छात्र अपनी लिखी बातें साझा कर सकते हैं।

## प्रत्येक पाठ के लिए निर्धारित कार्य

इस धार्मिक समूह के किसी व्यक्ति के सामने सुसमाचार प्रस्तुत करने का अवसर ढूँढ़ना याद रखें। अपने सहपाठियों के साथ हुई बातचीत के बारे में बताने के लिए तैयार रहें। अपना 2-पृष्ठ वाला प्रतिवेदन लिखकर अपनी कक्षा के अगुवे को सौंप दें।

# पाठ 11
# इस्लाम

## पहली मुलाकात

डैनियल एक चैंपियन हैवी-वेट बॉक्सर था। तुर्की की यात्रा के दौरान उसने प्रार्थना के लिए इस्लामी आह्वान सुना, और उसमें उसकी बहुत रुचि थी। उसने इस्लाम का अध्ययन करना शुरू किया और महसूस किया कि यह उसके लिए सही धर्म है। उसने पहले मसीही होने का दावा किया था लेकिन उसे यह लगने लगा कि बाइबल में कुछ गलतियाँ हैं।

## वचन का अध्ययन – भाग 1

► 1 यूहन्ना 1 को ऊँची आवाज में मिलकर पढ़ें। प्रत्येक छात्र एक अनुच्छेद लिखे जो इस पवित्रशास्त्र के अंश का सारांश प्रस्तुत करे। यह अंश परमेश्वर के साथ विश्वासी के सम्बंध के बारे में क्या कहता है? प्रत्येक छात्र कथनों की एक सूची बनाए। जो आपने लिखा है उस पर सामूहिक रूप से चर्चा करें।

## इस्लाम

### इस्लाम की उत्पत्ति

इस्लाम विश्व का दूसरा सबसे बड़ा धर्म है, जिसके लगभग 1.9 अरब अनुयायी हैं।[22] इनके सभी राष्ट्र इस्लाम के सिद्धांतों द्वारा शासित हैं। इस्लाम शब्द का अर्थ है "आज्ञापालन", जो अल्लाह के प्रति समर्पण को दर्शाता है। इस्लाम के अनुयायी को मुसलमान कहा जाता है। मुसलमान शब्द का अर्थ है "आज्ञापालन करने वाला।" मुसलमान खुद को "आस्थावान" कहते हैं, और जो लोग मुसलमान नहीं हैं उन्हें वे "काफिर" (अविश्वासी) कहते हैं।

मुहम्मद इस्लाम धर्म के संस्थापक थे। उनका जीवनकाल 570-632 ई. था।

मुहम्मद ने प्रकाशनों को प्राप्त करने का दावा किया। कई लोगों ने उनके प्रकाशनों के बारे में लिखा, और उनकी मृत्यु के बहुत बाद में इन्हें कुरान के रूप में सम्मलित किया गया। कुरान को सुरा नामक खंडों में विभाजित किया गया है।

► कुरान की उत्पत्ति बाइबल की उत्पत्ति से किस प्रकार भिन्न है?

मुहम्मद का धर्म उनके आस-पास के अधिकतर धर्मों से अलग था क्योंकि यह एकेश्वरवादी था और मूर्ति पूजा के विरुद्ध था। वह यहूदी और मसीही धर्म के बारे में जानते थे, लेकिन उन्हें अस्वीकार करते थे।

---

[22] Joshua Project, "रिलीजन: इस्लाम,"https://joshuaproject.net/religions/6, 11 अप्रैल 2023 को एक्सेस किया गया।

मुहम्मद एक गरीब परिवार से थे, लेकिन उन्होंने एक अमीर विधवा से शादी करी। उसकी मृत्यु के बाद, उन्होंने 12 और पत्नियाँ कीं। कुरान के अनुसार, पुरुषों को चार पत्नियाँ रखने की अनुमति है।

जब मुहम्मद को पर्याप्त अनुयायी मिल गए, तो उन्होंने मदीना शहर पर कब्ज़ा कर लिया, जो अब सऊदी अरब के आधुनिक देश में स्थित है। कई लड़ाइयों के बाद, उन्होंने मक्का पर भी कब्ज़ा कर लिया और वहाँ चले गए। उन्होंने और उनके अनुयायियों ने उनके आस-पास के इलाकों पर हमला किया और उन्हें जीत लिया। उन्होंने अंततः कई देशों पर कब्ज़ा कर लिया और लोगों को मुसलमान बनने के लिए मजबूर किया।

आज अधिकतर मुसलमान हिंसक नहीं हैं। वे अपने गैर-मुस्लिम पड़ोसियों के साथ शांति से रहने का प्रयास करते हैं। हालाँकि, कुरान में हिंसा के लिए आदेश दिए गए हैं। कुरान मुसलमानों को मूर्तिपूजकों पर हमला करने और उन्हें मारने का आदेश देती है।[23] कुरान में कहा गया है कि जो लोग इस्लाम के खिलाफ लड़ते हैं उन्हें मार दिया जाना चाहिए या उनके हाथ-पैर काट दिए जाने चाहिए।[24] कट्टरपंथी इस्लामवादी इन आदेशों को गंभीरता से लेते हैं। मुहम्मद ने यहूदी गांवों को नष्ट कर दिया, पुरुषों को मार डाला और उनके परिवारों को गुलामी में बेच दिया।

► इस्लाम का प्रसार मसीही धर्म के प्रसार से किस प्रकार भिन्न था?

**इस्लाम की मान्यताएं**

इस्लाम की सबसे अधिक दोहराई जाने वाली मान्यता, जिसे *शहादा* कहा जाता है: "अल्लाह के अलावा कोई ईश्वर नहीं है, और मुहम्मद उनके पैगम्बर हैं।"

मुसलमानों का मानना है कि अल्लाह ही एकमात्र ईश्वर है, जो संसार के निर्माता हैं। उनका मानना है कि उन्ही ने नूह, अब्राहम और मूसा जैसे बाइबल के लोगों को प्रकाशन दिया था।

"मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर पिता, स्वर्ग और पृथ्वी के निर्माता, तथा उनके एकमात्र पुत्र, हमारे प्रभु यीशु मसीह में विश्वास करता हूँ; जो पवित्र आत्मा द्वारा गर्भ में आये तथा कुँवारी मरियम से जन्मे।"
- प्रेरितों का विश्वास

मुसलमान त्रिएक में विश्वास नहीं करते, न ही यह मानते हैं कि परमेश्वर का कोई अवतार संभव है।

► मुहम्मद के बारे में मुसलमानों का दृष्टिकोण, विश्वासियों के मसीह के बारे में दृष्टिकोण से किस प्रकार भिन्न है?

मुसलमानों का मानना है कि यीशु ईश्वर के पैगम्बर थे जिन्होंने चमत्कार किए, वे मसीह थे और पाप रहित थे। वे यह नहीं मानते कि उनकी मृत्यु क्रूस पर हुई, बल्कि यह कि जब यहूदियों ने उन्हें मारने का प्रयास किया

"आज मैं इस बात से पूरी तरह आश्वस्त हूँ कि जिस प्रकार चमकता हुआ सूर्य उनका है, वैसे ही वचन भी परमेश्वर के हैं। और यह विश्वास (हर अच्छे उपहार की तरह) ज्योतियों के पिता से आता है।"
- जॉन वेसली
(1747 में पत्र)

[23]सुरा 9:5
[24]सुरा 5:33

तो अल्लाह ने उन्हें उठा लिया।[25] वे यह नहीं मानते कि वह परमेश्वर के पुत्र या परमेश्वर के अवतार थे।[26] वे यह विश्वास नहीं करते कि वह संसार के उद्धारकर्ता हैं।

मुसलमानों का मानना है कि बाइबल परमेश्वर की ओर से है, लेकिन उनका मानना है कि अगर इसमें और उनकी पवित्र पुस्तक कुरान में विरोधाभास है, तो कुरान ही अंतिम अधिकार है क्योंकि यह अंतिम प्रकाशन है। उनका मानना है कि बाद का प्रकाशन पिछले प्रकाशन का खंडन कर सकता है।[27]

***बाइबल कहती है कि परमेश्वर का वचन कभी नहीं मिटेगा बल्कि हमेशा कायम रहेगा, यशायाह 40:8 और 1 पतरस 1:25 देखें।***

मुसलमानों का मानना है कि उद्धार कुछ खास दायित्वों को पूरा करके प्राप्त किया जा सकता है जिन्हें इस्लाम के पाँच स्तंभ कहा जाता है। इस्लाम के पाँच स्तंभ हैं:

1. *शहादा:* मुसलमान आस्था के वचन को ईमानदारी से पढ़ना
2. *सलत:* प्रतिदिन पांच बार धार्मिक प्रार्थना करना
3. *जकात:* गरीबों को दान देना
4. *सवाम:* रमज़ान के महीने में रोज़ा रखना
5. *हज:* अपने जीवनकाल में एक बार मक्का की तीर्थ यात्रा करना

**इस्लाम के कठिन सिद्धांत**

यह देखने के लिए कि मुसलमान किस तरह की जीवनशैली में विश्वास करते हैं, हम उन देशों को देख सकते हैं जो इस्लामी व्यवस्था द्वारा नियंत्रित हैं। इस्लामी व्यवस्था को *शरिया* व्यवस्था कहा जाता है। कई अरब देश कुछ हद तक *शरिया* व्यवस्था का पालन करते हैं। इस्लामी व्यवस्था बोलने की स्वतंत्रता, धर्म की स्वतंत्रता, सभा की स्वतंत्रता या प्रेस की स्वतंत्रता की अनुमति नहीं देती है, जैसा कि पश्चिमी संसार समझती है और ऐसी स्वतंत्रताओं का अभ्यास करती है।[28]

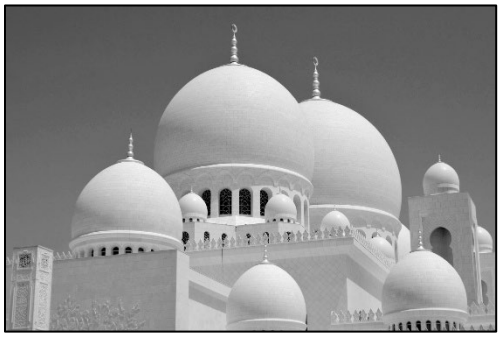

[25]सुरा 4:157-158

[26]सुरा 9:30-31, 18:4-5

[27]सुरा 2:106, 13:39

[28]छवि, Juan Camilo Guarin P के Unsplash से ली गई है, https://unsplash.com/photos/njEXjDmYn8w से निकाली गई.

कुछ इस्लामी समाजों में किसी व्यक्ति को मसीही धर्म अपनाने या अन्य लोगों को मसीही धर्म का प्रचार करने के प्रयास के लिए मार दिया जाता है। हालाँकि, अधिकतर मामलों में किसी व्यक्ति की हत्या अनियंत्रित भीड़ के कारण होती है, न कि राज्य की आधिकारिक कार्रवाई के कारण।

*शरिया* व्यवस्था के अनुसार, कोई भी पुरुष किसी भी कारण से अपनी पत्नी को तुरंत तलाक दे सकता है। कोई भी महिला अपने पति की सहमति के बिना तलाक नहीं दे सकती। कुरान के अनुसार, पुरुषों को अपनी पत्नियों को पीटने की अनुमति है।[29] एक पुरुष चार पत्नियों से विवाहित हो सकता है।[30] अगर कोई महिला इस्लामी नियमों का पालन नहीं करती है तो उसके सम्बंधी उसे मार सकते हैं। कुछ देशों में महिलाओं को कार चलाने, स्कूल जाने या बिना चेहरा ढके सार्वजनिक स्थानों पर जाने की अनुमति नहीं है। अगर कोई महिला नियमों का उल्लंघन करती है तो उसे सार्वजनिक रूप से पीटा जा सकता है।

> "अच्छी खबर यह है कि परमेश्वर ने मसीह के माध्यम से वह किया जो व्यवस्था नहीं कर सकी: उन्होने अपने पुत्र को पाप के लिए बलिदान के रूप में भेजा। मसीह ने अपने बलिदान के द्वारा पाप का प्रायश्चित किया।"
> - थॉमस ओडेन
> *जीवन का वचन*

***मसीहियों को अपनी पत्नियों के साथ नम्रता से पेश आने को कहा गया है, 1 पतरस 3:7 देखें। एक पुरुष को अपनी पत्नी से उतना ही प्रेम करना चाहिए जितना खुद से, इफिसियो 5:28-29 देखें।***

मुसलमानों का यह मानना होता है कि सही और गलत सिर्फ़ अल्लाह की मर्ज़ी से होता है। अगर अल्लाह चाहे तो सही को बदल सकते हैं, क्योंकि उनकी मर्ज़ी ही मायने रखती है, न कि उनका अपरिवर्तनीय चरित्र।

***बाइबल हमें बताती है कि परमेश्वर भला है और हर भली वस्तु का स्रोत है। परमेश्वर कभी नहीं बदलता, याकूब 1:17 देखें।***

कुरान यह नहीं बताती कि लोगों को अल्लाह की छवि में बनाया गया है। अल्लाह को सर्वोपरि, अज्ञेय और पूरी तरह से अलग बताया गया है।

***मनुष्य को परमेश्वर की छवि में बनाया गया है। इसलिए, हम परमेश्वर की प्रकृति के बारे में कुछ बातें समझ सकते हैं और उनके साथ सम्बंध बना सकते हैं, उत्पत्ति 1:27 देखें।***

मुसलमान अल्लाह के साथ व्यक्तिगत संबंध रखने की आशा नहीं करते हैं। अल्लाह को "सर्व-प्रेमी" कहा जाता है, लेकिन अन्यथा कुरान में कभी नहीं कहा गया है कि वह लोगों से प्रेम करते हैं। कुरान अक्सर कहती है कि अल्लाह उन लोगों के लिए क्षमाशील और दयालु है जो इस्लाम में विश्वास करते हैं। लोगों को पश्चाताप करना चाहिए और इस उम्मीद के साथ न्याय से बचने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए कि अल्लाह दयालु हैं, लेकिन इसमे कोई मुक्ति का अनुभव या क्षमा का आश्वासन नहीं है।

---

[29]सुरा 4:34

[30]सुरा 4:3

***बाइबल हमें वादा करती है कि परमेश्वर उस व्यक्ति को क्षमा करते हैं जो अंगीकार और विश्वास करता है, 1 यूहन्ना 1:9 देखें।***

► एक विश्वासी का परमेश्वर के साथ संबंध और एक मुसलमान के अल्लाह के साथ संबंध, किस प्रकार भिन्न है?

इस्लाम के लाभ अधिकतर पुरुषों को दिए जाते हैं, और कुरान हर मुद्दे को पुरुषों के नज़रिए से संबोधित करता है। महिलाएँ सिर्फ़ पुरुषों की संपत्ति हैं। मृत्यु के बाद इस्लामी जन्नत पुरुषों के लिए है, जहाँ उनके आनंद के लिए महिलाओं को रखा जाता है।[31]

► अब वापस जाएं और ***बोल्ड और इटैलिक किए गए*** पाठ और प्रत्येक पवित्रशास्त्र को पढ़ें।

## सुसमाचार प्रसार

मसीही सिद्धांतों को केवल बाइबल से प्रमाणित करना पर्याप्त नहीं है, क्योंकि मुसलमानों का मानना है कि कुरान सर्वोच्च प्रमाण के रूप में बाइबल का स्थान ले लेती है।

हम कुछ महत्वपूर्ण इस्लामी मान्यताओं से सहमत हो सकते हैं। विश्वासी इस बात पर सहमत हैं कि परमेश्वर एक हैं जिन्होने संसार को बनाया। विश्वासी इस बात पर भी सहमत हैं कि एक अंतिम न्याय है, और हर व्यक्ति को या तो स्वर्ग या नरक भेजा जाएगा।

बाइबल से अन्य महत्वपूर्ण सत्य दिखाए जाने चाहिए। मुसलमानों का मानना है कि बाइबल परमेश्वर की ओर से है, लेकिन कुरान ने इसे पीछे छोड़ दिया है। हालाँकि, आप यह बात कह सकते हैं कि कुछ सत्य इतने बुनियादी हैं कि उन्हें बदला नहीं जा सकता। साथ ही, ऐतिहासिक तथ्य भी नहीं बदले जा सकते।

परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप में बनाया (उत्पत्ति 1:27)। वह उनसे प्रेम करते हैं और उनके साथ सम्बंध बनाना चाहते हैं।

मसीही समुदाय इस्लाम से सहमत हैं कि यीशु एक मसीह थे और वे पाप रहित थे। उन्हे यह दिखाएँ कि मसीह ने उन लोगों को अनन्त जीवन देने का वादा किया था जो उन पर विश्वास करते थे (यूहन्ना 10:28), उन्होने अपनी आवाज़ से मृतकों को जीवित करने का वादा किया (यूहन्ना 5:28-29), और कहा कि उनके बिना कोई भी पिता के पास नहीं आ सकता (यूहन्ना 14:6)।

वचन से दिखाइए कि वह एक पापरहित व्यक्ति से कहीं अधिक थे; इसके लिए *सिद्धान्त की हस्तपुस्तिका* देखें

(5) यीशु परमेश्वर हैं।

वह तब तक एक भले मनुष्य और परमेश्वर के पैगम्बर नहीं हो सकते थे, जब तक कि उनके अपने बारे में किए गए दावे सच न हों। इस्लाम सिखाता है कि यीशु परमेश्वर के पैगम्बर थे, लेकिन या तो वह वही थे जिसका उन्होने दावा किया था और जो अनंत जीवन देने में सक्षम थे, या फिर वह एक दुष्ट या खुद को धोखा देने वाले व्यक्ति थे जिन्होने लोगों को उन पर विश्वास करने के लिए मजबूर किया।

---

[31]सुरा 55:56

यीशु परमेश्वर के प्रेम को दिखाने के लिए आए थे। उन्होंने दिखाया कि परमेश्वर हर व्यक्ति से प्रेम करते हैं, जिसमें महिलाएँ और निम्न वर्ग के लोग भी सम्मलित हैं। लोग अपने लिंग या सामाजिक वर्ग के कारण परमेश्वर से अलग नहीं होते। लोग परमेश्वर से केवल अपने पाप के कारण अलग होते हैं, पर परमेश्वर क्षमा प्रदान करते हैं। परमेश्वर पापी को क्षमा किए जाने और उसके साथ व्यक्तिगत संबंध बनाने के लिए उसे आमंत्रित करते हैं।

## एक गवाही

जलाल सऊदी अरब में रहता था। बचपन में वो इस्लामी धर्म के प्रति आस्थावान था। उसने कुरान के बड़े हिस्से याद कर लिए थे और मस्जिद में सहायता करता था। जब वो 16 साल का था, तो उसने एक पवित्र युद्ध में सम्मलित होने की इच्छा जताई और इस्लाम के लिए लड़ना चाहा, लेकिन उसके माता-पिता ने कहा कि वो बहुत छोटा है। बाद में उसे नौकरी मिल गई और वो उसमे व्यस्त हो गया और धर्म की उपेक्षा करने लगा। वो एक समस्या में फंस गया और सहायता के लिए प्रार्थना करना चाहता था, लेकिन उसे डर था कि धर्म की उपेक्षा के कारण अल्लाह उससे नाराज़ हो सकते हैं। उसने सहायता के लिए मसीह से प्रार्थना की और दो दिन बाद समस्या हल हो गई। उसने एक स्वप्न भी देखा कि मसीह लोगों को स्वर्ग का मार्ग दिखा रहे हैं। उसने उद्धार के लिए मसीह पर अपना विश्वास रखा। जलाल कहता है, "मैं अपने मन में प्रेम महसूस करता हूँ, और मैं यीशु को जानकर बहुत खुश हूँ। जब मैं मुसलमान था, तो मैं कभी नहीं सोच सकता था कि मसीह लोग सही होते थे। उसके बाद, मुझे पता चला कि परमेश्वर मुझसे कितना प्रेम करते हैं, और मैं विश्वासी बन गया। हाँ, वह मुझसे प्रेम करते हैं, वह आपसे भी प्रेम करते हैं, और वह पूरे संसार से प्रेम करते हैं। यीशु मसीह ने हमसे प्रेम किया, और वह अब भी करते हैं। और यह न भूलें कि अंतिम दिन में कोई भी हमें नहीं बचा सकता, केवल यीशु मसीह ही बचा सकते हैं।"

## वचन का अध्ययन – भाग 2

► अब 1 यूहन्ना 1 को फिर से पढ़ें। प्रत्येक छात्र एक अनुच्छेद लिखे जिसमें इस अंश का संदेश मुसलमानों के लिए समझाया गया हो। कुछ छात्र अपनी लिखी बातें साझा कर सकते हैं।

## प्रत्येक पाठ के लिए निर्धारित कार्य

इस धार्मिक समूह के किसी व्यक्ति के सामने सुसमाचार प्रस्तुत करने का अवसर ढूँढ़ना याद रखें। अपने सहपाठियों के साथ हुई बातचीत के बारे में बताने के लिए तैयार रहें। अपना 2-पृष्ठ वाला प्रतिवेदन लिखकर अपनी कक्षा के अगुवे को सौंप दें।

# पाठ 12
# यहूदी धर्मसब्त

## पहली मुलाकात

**हांस** एक जर्मन व्यक्ति था जो अमेरिका चला गया। कॉलेज में उसने यहूदी मित्र बनाए। वह यहूदियों के इतिहास से परिचित हुआ और उसने जाना कि हिटलर के शासन में लाखों यहूदियों को जर्मनों ने मार डाला था। उसे जर्मन होने पर शर्म महसूस हुई और उसने सोचा कि क्या उसे यहूदी धर्म अपनाकर अपने देश के किए का कुछ बदला चुकाना चाहिए।

## वचन का अध्ययन – भाग 1

► यशायाह 52:13–53:12 को ऊँची आवाज में मिलकर पढ़ें। प्रत्येक छात्र एक अनुच्छेद लिखे जो इस पवित्रशास्त्र के अंश का सारांश प्रस्तुत करे। यदि आप यीशु के बारे में नहीं जानते, तो इस वचन से उस व्यक्ति के बारे में क्या देख सकते हैं जिसे "दास" कहा गया है? प्रत्येक छात्र कथनों की एक सूची बनाए। जो आपने लिखा है उस पर सामूहिक रूप से चर्चा करें।

## यहूदी धर्म

जो मसीही होने का दावा नहीं करते, उनमे से यहूदी धर्म किसी और की तुलना में मसीह धर्म से अधिक निकटता से जुड़ा हुआ है। यहूदी धर्म प्राचीन इस्राएल के परमेश्वर, पुराने नियम के परमेश्वर की आराधना करने का दावा करता है, जो मसीही धर्म के परमेश्वर ही हैं। यहूदी धर्म के वचन मसीही बाइबल में पुराने नियम से हैं।

***यहूदी धर्म के अनुयायी पुराने नियम पर विश्वास करते हैं, लेकिन वे मसीह के बारे में पुराने नियम में दिए गए सबसे महत्वपूर्ण सत्य को नहीं समझते, यूहन्ना 5:39-40, 2 कुरिन्थियों 3:14-16 देखें।***

जैसा कि पुराने नियम में वर्णित है, आधुनिक यहूदी धर्म की उत्पत्ति प्राचीन इस्राएल के धर्म और इतिहास से हुई है। प्रथाओं और मान्यताओं में सदियों से बदलाव हुए हैं और वे मूल मान्यताओं के समान नहीं हैं।

यहूदी धर्म के लगभग 14 मिलियन अनुयायी हैं। उनमें से लगभग आधे लोग इस्राएल राष्ट्र में रहते हैं।

यहूदी धर्म इस्राएल राष्ट्र का प्राथमिक धर्म है, और यहूदी धर्म के अधिकांश अनुयायी चाहे वे इस्राएल में रहते हों या कहीं और, जातीय रूप से यहूदी हैं।

> "चुनाव परमेश्वर के प्रेम का स्वभाव है। यह दूसरों को त्यागने के लिए नहीं बल्कि एक ऐसा पुल बनाने के लिए है जिससे समस्त मानवजाति के लिए परमेश्वर का प्रेम पहचाना जा सके। परमेश्वर का प्रेम विशेष रूप से इस्राएल के लिए प्रकट किया गया था ताकि यह सभी के लिए प्रदर्शित हो सके।"
>
> - डब्ल्यू.टी. पर्किसर
>
> गॉड, मैन एंड साल्वेशन

किसी को यहूदी कहना आमतौर पर उसके धर्म और उसकी जातीयता और कभी-कभी उसकी राष्ट्रीयता की पहचान कराता है।

हालाँकि, परिभाषाएँ कठिन हैं। यहूदी धर्म के अधिकांश अनुयायी यहूदी जातीयता के हैं, लेकिन अन्य जातीय समूहों से भी लोग यहूदी धर्म में परिवर्तित हुए हैं। यहूदी धर्म एक राष्ट्रीय धर्म है, लेकिन इस्राएल में 25% लोग धर्म या जातीयता में यहूदी नहीं हैं। बहुत से यहूदी इस्राएल में नहीं रहते हैं, और कुछ जो इस्राएल में रहते हैं वे किसी भी धर्म का गंभीरता से पालन नहीं करते हैं। एक व्यक्ति जो जातीय रूप से यहूदी है, चाहे वह इस्राएल में हो या कहीं और, वह किसी दूसरे धर्म में परिवर्तित हो सकता है, या नास्तिक भी हो सकता है।

► यहूदी क्या है, इसे पहले जातीय परिभाषा के साथ, फिर धार्मिक परिभाषा के साथ समझाइए।

## यहूदी धर्म की विशेषताएँ

### इब्रानी वचन

*तोराह* एक इब्रानी शब्द है जिसका अर्थ है शिक्षण, निर्देश या व्यवस्था। इस शब्द का प्रयोग खास तौर पर पुराने नियम की पहली पाँच पुस्तकों को संदर्भित करने के लिए किया जाता है। इसे कभी-कभी इब्रानी बाइबल को संदर्भित करने के लिए अधिक व्यापक रूप से प्रयोग किया जाता है, जो प्रोटेस्टेंट मसीही बाइबल में पुराना नियम है। *तोराह* शब्द का प्रयोग शुरुआती यहूदी विद्वानों द्वारा लिखे गए इब्रानी शास्त्रों की व्याख्याओं को सम्मलित करने के लिए और भी व्यापक रूप से किया गया है।

यहूदियों में परमेश्वर द्वारा प्रेरित वचनों के प्रति बहुत अधिक श्रद्धा है। प्राचीन समय में *तोराह* (पांच पुस्तकों का संदर्भ) की नकल बहुत सावधानी से की जाती थी ताकि गलतियाँ न हों। *तोराह* वाले प्राचीन शास्त्रों को बहुत सम्मान के साथ माना जाता था।

तल्मूड प्राचीन यहूदी रब्बियों के लेखन का संग्रह है। पुस्तक के रूप में छपा यह 6,000 से ज़्यादा पन्नों का संग्रह है। यहूदी धर्म अपनी परंपराओं और प्रथाओं के लिए तल्मूड पर निर्भर करता है।

### खतने की प्रथा

उत्पत्ति 17:9-14 अब्राहम को दिए गए परमेश्वर के आदेश का अभिलेख है कि उसके घराने के सभी पुरुषों का खतना किया जाएगा। खतना परमेश्वर और इस्राएल के बीच वाचा का प्रतीक है। इस्राएलियों ने अन्य राष्ट्रों के लोगों को “खतनारहित” कहा - वे लोग जिनके पास परमेश्वर का नियम या वाचा नहीं थी। आधुनिक समय में, बहुत से लोग जो यहूदी नहीं हैं, वे खतना को एक चिकित्सा प्रक्रिया के रूप में करते हैं, लेकिन यहूदी अभी भी इसे एक धार्मिक प्रथा मानते हैं।

### सब्त का दिन

सब्त सप्ताह का सातवाँ दिन है। सब्त उस दिन का स्मरण कराता है जब परमेश्वर ने सृष्टि के छह दिनों के बाद अपने काम से विश्राम किया था (उत्पत्ति 2:2-3)। परमेश्वर ने कहा कि लोगों को सब्त के दिन विश्राम करना चाहिए (निर्गमन 20:8-11)। यहूदियों ने काम से विश्राम करने के सिद्धांत को लागू करने हेतु सब्त के लिए कई प्रतिबंध विकसित किए। सब्त प्रतिबंधों का सख्ती से पालन

करने वाले यहूदी, अगर इसे टाला जा सके, तो सब्त पर कोई भी व्यवसाय या कोई भी काम नहीं करते। वे प्राचीन सब्त प्रतिबंधों के आधुनिक अनुप्रयोग बनाने का प्रयास करते हैं। उदाहरण के लिए, प्राचीन यहूदियों को सब्त पर अपने घर में आग नहीं जलानी चाहिए थी (निर्गमन 35:3), हालांकि अगर आग पहले से जलाई गई हो तो वे उसे जलाए रख सकते हैं। कुछ आधुनिक यहूदी सब्त पर बिजली की रोशनी या हीटर चालू नहीं करेंगे, लेकिन वे पहले से चालू की गई रोशनी और हीटर का उपयोग कर सकते हैं।

## यहूदी धर्म और सुसमाचार

इस्राएल राष्ट्र ने सामान्य रूप से यीशु को मसीह के रूप में अस्वीकार कर दिया। यीशु में विश्वास करने वाले यहूदी मसीही कलीसिया के पहले सदस्य थे, फिर सुसमाचार के प्रसार ने गैर-यहूदियों को कलीसिया में सम्मलित कर लिया।

***परमेश्वर चाहते हैं कि सभी यहूदी बचाए जाएँ, रोमियो 9:31, रोमियो 10:1, और रोमियो 11:1 देखें।***

आज ज्यूस फ़ॉर जीसस जैसे संगठन हैं जो विश्वासी बनते हुए भी यहूदी विरासत को बनाए रखने का प्रयास करते हैं। उन्हें "मसीही यहूदी" कहा जाता है क्योंकि वे यीशु को मसीह के रूप में स्वीकार करते हैं जबकि खुद को यहूदी के रूप में पहचानना भी जारी रखते हैं। वे यहूदी धर्म का हिस्सा नहीं हैं।

यहूदी धर्म उन यहूदियों का धर्म है जिन्होंने पुराने नियम के धर्म को बनाए रखने का प्रयास किया और दूसरी ओर यीशु को पुराने नियम की आशाओं की पूर्ति के रूप में अस्वीकार कर दिया। आधुनिक यहूदी धर्म के भीतर तीन मुख्य समूह हैं: रूढ़िवादी यहूदी धर्म, सुधारवादी यहूदी धर्म और परंपरावादी यहूदी धर्म।

सदियों से यहूदी धर्म ने अपनी परंपराओं को विकसित करते हुए कुछ प्राचीन परंपराओं को बरकरार रखा है। कई यहूदी पहनावे की परंपराओं का पालन करते हैं जिससे उन्हें यहूदी के रूप में पहचाना जा सके। वे आहार के पुराने नियम के प्रतिबंधों का भी पालन करते हैं, जैसे सूअर का मांस खाने से परहेज़ करना।

***विश्वासी लोग पुराने नियम के विशेष दिनों और आहार संबंधी आवश्यकताओं से मुक्त हैं क्योंकि वे चीजें आने वाले मसीह के प्रतीक थे, पर अब मसीह ने उन्हें पूरा कर दिया है, कुलुस्सियों 2:16-17 देखें।***

यहूदी धर्म में, उद्धार किसी व्यक्ति के धर्म परिवर्तन के अनुभव के रूप में नहीं होता। यहूदी मानते हैं कि वे परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करके उसके साथ एक धन्य वाचा के सम्बंध में रह सकते हैं। उद्धार का अर्थ है उत्पीड़न की स्थितियों या ऐसी परिस्थितियों से मुक्ति जो उन्हें परमेश्वर की सेवा करने से रोकती हैं। उद्धार एक व्यक्तिगत मामले से ज़्यादा एक राष्ट्रीय या समूह का मामला है।

► यहूदी धर्म में उद्धार की अवधारणा क्या है?

बाइबल मसीही धर्म के अनुसार, उद्धार का अर्थ है पाप से व्यक्तिगत मुक्ति। जो कोई भी बचाया जाता है वह विश्वास के द्वारा अनुग्रह से बचाया जाता है, चाहे वह यहूदी हो या गैर-यहूदी। सभी ने पाप किया है और उन्हें क्षमा की आवश्यकता है। पुराने नियम की व्यवस्था

के विवरण को रखने से उद्धार प्राप्त नहीं होता, बल्कि विश्वास के द्वारा अनुग्रह प्राप्त करने से होता है। कोई भी व्यक्ति व्यवस्था का पालन करके न्यायोचित नहीं है, क्योंकि सभी ने पहले ही पाप किया है और व्यवस्था को तोड़ा है (रोमियो 3:20-23)।

मसीही धर्म पुराने नियम में प्रकट किए गए इस्राएल के धर्म की निरंतरता और पूर्ति है। परमेश्वर यहूदियों और अन्यजातियों दोनों का परमेश्वर है, और सभी के लिए उद्धार की एक ही योजना रखता है (रोमियो 3:29-30)।

इस्राएल के भविष्यद्वक्ताओं ने यीशु के आने की भविष्यद्वाणी की थी। पुराने नियम के विश्वास का सार परमेश्वर के साथ संबंध था, जो उनकी क्षमा और अनुग्रह से संभव हुआ। इसलिए, विश्वासी पुराने नियम के लेखन को अपनी विरासत मानते हैं।[32] विश्वासी उन लोगों के उदाहरण का अनुसरण करते हैं जो मानव जाति की शुरुआत से ही परमेश्वर के साथ सही संबंध में थे। एक अर्थ में, सच्चा यहूदी वह है जिसने अपने हृदय में परमेश्वर के अनुग्रह के कार्य को प्राप्त किया (रोमियो 2:28-29)। अब्राहम की आशीष अन्यजातियों के लिए भी उपलब्ध है (गलातियों 3:14)।

► यह कहना क्यों सही है कि मसीही धर्म कोई नया धर्म नहीं है?

यहूदी धर्म के सभी अनुयायियों के लिए कोई एक संगठन नहीं है, सभी के पास कोई एक ही विश्वास कथन नहीं है, और सभी के पास कोई अंतिम अधिकार नहीं है जिसे सभी मान्यता देते हों। उनके कुछ संगठन बहुत रूढ़िवादी हैं, जो वचन के अधिकार को बहुत महत्व देते हैं, और प्राचीन परंपराओं और विश्वासों को बनाए रखने का प्रयास करते हैं। अधिक उदार यहूदी संगठनों ने अपनी मान्यताओं और प्रथाओं को आधुनिक संस्कृति के अनुकूल बनाने के लिए बद्लाव किया है, और परंपरा और वचन से जो वे रखना चाहते हैं उसे चुना है।

यहूदी धर्म यह नहीं मानता कि परमेश्वर त्रिएक हैं या उनका कोई अवतार हुआ है। यहूदियों का मानना है कि यीशु एक विवादास्पद शिक्षक थे जो न मसीह थे और न परमेश्वर थे।

***पुराने नियम में भविष्यद्वाणी की गई थी कि मसीह सर्वशक्तिमान परमेश्वर होगा, यशायाह 9:6 देखें। नया नियम घोषित करता है कि यीशु परमेश्वर के पुत्र और मसीह है, रोमियो 1:1-4 देखें।***

यहूदी धर्म में यह आशा बहुत प्रबल है कि मसीह आयेंगे। वे यह नहीं मानते कि मसीह आ चुके हैं। उनका मानना है कि मसीह परमेश्वर का अवतार नहीं होंगे, बल्कि विशेष रूप से एक अभिषिक्त व्यक्ति होंगे, जो संसार में शांति स्थापित करेंगे।

रूढ़िवादी यहूदी मानते हैं कि मसीह एक वास्तविक व्यक्ति होंगे। उदारवादी यहूदी मसीह को शांति के प्रतीक के लिए एक प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति मानते हैं, जो कोई समूह या संगठन हो सकता है।

---

[32] छवि nellyaltenburger के Pixabay से ली गई है; https://pixabay.com/photos/torah-scroll-israel-jewish-4299038/ से निकाली गई।

► यहूदी धर्म में मसीह की अवधारणा का वर्णन करें।

बाइबल हमें बताती है कि वह समय आएगा जब इस्राएल मसीह को स्वीकार करेगा। (देखें रोमियो 11:23-26)। प्रेरित पौलुस ने कहा कि अभी सुसमाचार अन्यजातियों में फैल रहा है, और यहूदी अधिकांशतः सुसमाचार के प्रति अंधे हैं। लेकिन वह आगे कहता है, "सारा इस्राएल उद्धार पाएगा" (रोमियो 11:26)। इसका मतलब यह नहीं है कि हर यहूदी बचेगा, लेकिन चूंकि एक राष्ट्र के रूप में उन्होंने यीशु को अस्वीकार किया, तो एक राष्ट्र के रूप में ही वे पश्चाताप करेंगे और उन्हे स्वीकार करेंगे। अभी भी, कई व्यक्तिगत यहूदी परिवर्तित हो रहे हैं।

► अब वापस जाएं और ***बोल्ड और इटैलिक किए गए*** पाठ और प्रत्येक पवित्रशास्त्र को पढ़ें।

## सुसमाचार प्रचार

कुछ यहूदी मसीही धर्म के प्रति पूर्वाग्रही हैं क्योंकि कभी-कभी यहूदियों को अतीत में, मसीही होने का दावा करने वालों द्वारा गंभीर रूप से सताया गया है। हम उन्हें उत्पीड़न के बारे में कुछ सच्चाईयों को समझने में सहायता करने का प्रयास कर सकते हैं। सबसे पहले, यीशु ने कभी उत्पीड़न को प्रोत्साहित नहीं किया, और जो लोग दूसरों से घृणा करते हैं वे उनके उदाहरण का अनुसरण नहीं कर रहे हैं। उत्पीड़न राजनीतिक होने के साथ-साथ धार्मिक भी है, और विश्वासी धर्म के सिद्धांतों के विपरीत कारणों से प्रेरित है। विश्वासियों के लिए मसीह का प्रेम दिखाना, एक यहूदी के लिए यह आश्वस्त होने का सबसे अच्छा तरीका होगा कि मसीही उनके शत्रु नहीं हैं।

एक यहूदी का धर्म उसके विस्तृत परिवार, जीवन शैली और प्राचीन विरासत से दृढ़ता से जुड़ा हुआ है। एक यहूदी को यह लग सकता है कि अगर वह किसी दूसरे धर्म में परिवर्तित हो गया तो वह वो सब कुछ खो देगा जो मायने रखता है। विश्वासी को यह दिखाना चाहिए कि यीशु यहूदी धर्म की स्वाभाविक पूर्ति हैं। वह मसीह हैं जिनकी उन्हें आशा थी। उन्होंने पुराने नियम में वर्णित उद्धार प्रदान किया।

> "रोमियो 9:4-5 में पौलूस मूलतः कहता है कि मसीह मानवीय दृष्टि से यहूदी थे, लेकिन वास्तव में परमेश्वर थे।"
>
> - विलार्ड टेलर से रूपांतरित
>
> परमेश्वर, मनुष्य और उद्धार

यीशु मसीह हैं, यह तथ्य उनके द्वारा मसीह के बारे में पुराने नियम की भविष्यद्वाणी को पूरा करने से प्रदर्शित होता है। उदाहरण के लिए यह भविष्यद्वाणी कि मसीह बेथलहम में पैदा होंगे (मीका 5:2) और वह यहूदा के गोत्र से होंगे (उत्पत्ति 49:10)। यशायाह 52:13-53:12 से यह दिखाना और भी अधिक महत्वपूर्ण है कि उन्होने वह उद्धार पूरा किया जिसकी अपेक्षा मसीह से की गई थी। यीशु ने अभी तक विश्व शांति की मसीही भविष्यद्वाणी को पूरा नहीं किया, लेकिन यह तर्कसंगत है कि पाप से उद्धार पहले आना चाहिए क्योंकि युद्ध लोगों के पापी हृदय से आता है।

सुसमाचार को साझा करना और इस बात पर ज़ोर देना महत्वपूर्ण है कि जो व्यक्ति उद्धार पाया हुआ है, वह परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत संबंध में आता है। यहूदी परमेश्वर में विश्वास करते हैं, लेकिन उनके साथ उनका कोई व्यक्तिगत संबंध नहीं है।

केवल पुराने नियम का उपयोग करके सुसमाचार की व्याख्या करना संभव है। सभी ने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया है (भजन संहिता 143:2)। पाप लोगों को परमेश्वर से अलग कर देता है (यशायाह 59:2)। मसीह ने हमारे पापों के लिए बलिदान के रूप में कष्ट सहे

और मारे गए (यशायाह 53:5)। परमेश्वर ने प्रतिज्ञा करी कि जो पश्चाताप और विश्वास करेगा, उसे वह क्षमा और शुद्ध करेंगे (यशायाह 1:16-18)।

भजन संहिता 51 पश्चाताप और विश्वास की प्रार्थना है। दाऊद ने क्षमा और शुद्धिकरण के लिए प्रार्थना करी। यह परमेश्वर की आत्मा से प्रेरित एक प्रार्थना है, जो हमें बताती है कि परमेश्वर इस तरह से क्षमा प्रदान करते हैं। यदि कोई व्यक्ति यह मानता है कि परमेश्वर ने यीशु को पाप के लिए बलिदान के रूप में दे दिया, तो वह विश्वास से प्रार्थना करके परमेश्वर का अनुग्रह प्राप्त कर सकता है।

## एक गवाही

डेविड एक यहूदी व्यक्ति है जिसका परिवार जर्मनी से आया था। उसके दादा-दादी व सभी नाजी जेल शिविरों में मार दिए गए थे। वह कहता है कि यहूदियों को लगा कि उन्हें मसीही समुदाय द्वारा मारा जा रहा है क्योंकि जर्मनी और बाकी संसार की कलीसियाओं ने ऐसा होने दिया। उसके माता-पिता ने उसे कभी भी क्रूस को न देखने के लिए कहा क्योंकि वह मृत्यु का प्रतीक है। हर दिन उसकी स्कूल बस एक क्रूस वाली कलीसिया के पास से गुजरती थी, और वह उसे न देखने का प्रयास करता था। एक दिन एक यहूदी मित्र ने उसे नया नियम देने का प्रयास किया, लेकिन उसने यह कहते हुए मना कर दिया कि यह यहूदियों के लिए नहीं है। बाद में एक और मित्र ने उसे पुराने नियम और नए नियम के पद दिखाए जो उसने पहले कभी नहीं देखे थे। डेविड के मन में इस बारे में कई सवाल थे कि संसार ऐसा क्यों है, और उसे बाइबल में उत्तर मिलने लगे। उसे विश्वास हो गया कि यीशु ही मसीह है।

## वचन का अध्ययन – भाग 2

► अब यशायाह 52:13–53:12 को फिर से पढ़ें। प्रत्येक छात्र एक अनुच्छेद लिखे जिसमें इस अंश का संदेश यहूदियों के लिए समझाया गया हो। कुछ छात्र अपनी लिखी बातें साझा कर सकते हैं।

## प्रत्येक पाठ के लिए निर्धारित कार्य

इस धार्मिक समूह के किसी व्यक्ति के सामने सुसमाचार प्रस्तुत करने का अवसर ढूँढ़ना याद रखें। अपने सहपाठियों के साथ हुई बातचीत के बारे में बताने के लिए तैयार रहें। अपना 2-पृष्ठ वाला प्रतिवेदन लिखकर अपनी कक्षा के अगुवे को सौंप दें।

# पाठ 13
# नये युग का धर्म

## पहली मुलाकात

ईथन एक रोमन कैथोलिक परिवार में पला-बढ़ा था, लेकिन वयस्क होने पर उसने कलीसिया छोड़ दी। वह कई वर्षों तक मौज-मस्ती में जीता रहा, लेकिन फिर उसे लगने लगा कि उसे जीवन का उद्देश्य तुरंत खोजना होगा। एक मित्र ने उसे ड्रग्स लेना शुरू करवा दिया, और ईथन को लगा कि उसे ब्रह्मांड और खुद के बारे में एक नया नज़रिया मिल गया है। उसे दिशा-निर्देश देने वाली आवाज़ें भी सुनाई देने लगीं।

## वचन का अध्ययन – भाग 1

► भजन संहिता 19 को ऊँची आवाज में मिलकर पढ़ें। प्रत्येक छात्र एक अनुच्छेद लिखे जो इस पवित्रशास्त्र के अंश का सारांश प्रस्तुत करे। यह अंश हमें परमेश्वर की सच्चाई के प्रभावों के बारे में क्या दिखाता है? प्रत्येक छात्र कथनों की एक सूची बनाए। जो आपने लिखा है उस पर सामूहिक रूप से चर्चा करें।

## नये युग का धर्म

### नये युग के धर्म का परिचय

नये युग के धर्म में कई तरह के समूह, संगठन और व्यक्ति हैं। नये युग के धर्म के अनुयायी किसी खास नाम या विश्वास के कथन के तहत एकजुट नहीं हैं। कुछ बहुत धार्मिक लगते हैं, और दूसरे धार्मिक के बजाय वैज्ञानिक लगते हैं। वे सभी यह नहीं कहेंगे कि वे नए युग के धर्म का हिस्सा हैं, लेकिन वे सभी कुछ खास विशेषताओं को साझा करते हैं।[33]

*स्टोनहेंज, इंग्लैंड में एक प्राचीन पत्थर स्मारक, विभिन्न धार्मिक गतिविधियों का स्थल है।*

नए युग के अनुयायी सभी समस्याओं को हल करने की मानवीय क्षमता में विश्वास करते हैं। उनका मानना है कि व्यक्ति एक ऐसे प्राणी के रूप में विकसित हो सकता है जिसके पास अब तक सामान्य मानी जाने वाली शक्तियों से कहीं अधिक शक्तियाँ हैं। उनका मानना है कि सभी उत्तर हमारे भीतर हैं। उनका मानना है कि शिक्षा का उद्देश्य हमें यह बताना नहीं है कि क्या सच है, बल्कि हमें यह दिखाना है कि हम अपनी क्षमता को कैसे खोलें।

[33]छवि, Dyana Wing So के Unsplash से ली गई है, https://unsplash.com/photos/NxvP54MX4no से निकाली गई।

***बाइबल कहती है कि जब तक परमेश्वर द्वारा हृदय को नहीं बदला जाता, तब तक यह वास्तव में धोखेबाज़ और दुष्ट होता है। एक व्यक्ति अपने भीतर जीवन के उत्तर नहीं पा सकता। समस्याएँ भीतर ही हैं, यिर्मयाह 17:9 देखें।***

► नया युग, मनुष्य के किस मसीही सिद्धांत की उपेक्षा करता है?

मानव क्षमता को खोलने के लिए, नए युग के लोग प्राचीन ज्ञान की खोज बुतपरस्त धर्मों और गुप्त प्रथाओं में करते हैं। वे ज्योतिष, प्रेतात्मवाद और सभी प्रकार की भविष्यद्वाणी का अभ्यास करते हैं। नए युग के अनुयायी सभी प्रकार के जादू का उपयोग करके अलौकिक के साथ बातचीत करते हैं। वे आत्माओं और अतीत में रहने वाले लोगों के साथ संवाद करने का प्रयास करते हैं। वे चैनलिंग का अभ्यास करते हैं, जिसमे अतीत में रहने वाले व्यक्ति की आत्मा अस्थायी रूप से जीवित व्यक्ति के शरीर और आवाज पर कब्जा कर लेती है।

***लोग परमेश्वर को अस्वीकार करते हैं और अलौकिक सहायता के अन्य स्रोतों की खोज करते हैं क्योंकि वे पाप का पश्चाताप नहीं करना चाहते हैं। जिस व्यक्ति को मार्गदर्शन और सामर्थ की आवश्यकता है, उसे परमेश्वर की खोज करनी चाहिए, यशायाह 8:19 देखें।***

> "कभी-कभी यह तर्क दिया जाता है कि हम एक अलग संस्कृति के तहत रहते हैं और सही या गलत बदलते समय के कारण बदल गया है.... मानवीय परिवर्तन के बीच अनंत सत्य की एक चट्टान खड़ी है जो परमेश्वर का वचन और उसका मानक है जो कभी नहीं बदलता है।"
>
> - लेस्ली विलकॉक्स
>
> वेस्लेयन धर्मशास्त्र में प्रोफाइल, खंड 3

वे यह नहीं मानते कि किसी भी धर्म में पूर्ण सत्य हैं। उनका मानना है कि सभी धर्म मूलतः एक जैसे हैं, लेकिन उनमें अलग-अलग मान्यताएँ और प्रथाएँ हैं जो सहायक हैं। भले ही कुछ मान्यताएँ एक-दूसरे का खंडन करती हों, लेकिन उन्हें लगता है कि दोनों ही गैर-तर्कसंगत माध्यम से सत्य हो सकती हैं। वे किसी भी ऐसे दावे को अस्वीकार करते हैं कि कोई सिद्धांत पूर्णतः सत्य हो। वे यह नहीं मानते कि कोई भी सिद्धांत इस अर्थ में सत्य हो सकता है कि परस्पर विरोधी सिद्धांत झूठे होंगे। नए युग के लोग किसी भी धार्मिक समूह को बर्दाश्त कर लेते हैं, सिवाय उन लोगों के जो यह दावा करें कि उनके पास पूर्ण सत्य है जिस पर सभी को विश्वास करना चाहिए। वे मसीही धर्म को अस्वीकार करते हैं क्योंकि यह सही होने का दावा करता है और कहता है कि अन्य धर्म गलत हैं।

***बाइबल उन लोगों पर निर्णय सुनाती है जो बुराई और भलाई में अंतर नहीं करते और सही और गलत के मानक को अस्वीकार करते हैं, यशायाह 5:20 देखें।***

► नये युग के लोग किन अन्य धर्मों को पसंद नहीं करेंगे?

नए युग के लोग अलौकिक शक्तियों को अच्छी और बुरी शक्तियों के बीच अंतर करने के किसी भी सिद्धांत के बिना स्वीकार करते हैं। वे मानते हैं कि किसी भी आत्मा की भागीदारी अच्छी है।

***संसार में दुष्ट आत्माएँ सम्मलित हैं, और उन्हें पहले से ही अनन्त दंड की सजा दी गई है। जो लोग उनका अनुसरण करते हैं, वे उनकी सजा में भागीदार होंगे, मत्ती 25:41 देखें।***

नए युग के अनुयायी खुद को दूसरे धर्मों से अलग नहीं मानते। उन्हें लगता है कि कुछ धर्म उनकी कई मान्यताओं को साझा करते हैं, खासकर बौद्ध धर्म, हिन्दू धर्म और ताओवाद जैसे पूर्वी धर्म। उन्हें प्रकृति के धर्म भी पसंद हैं, जो प्रकृति में आत्माओं के साथ बातचीत करते हैं (पाठ 14 देखें)।

नए युग के लोग मृत्यु की वास्तविकता को नकारते हैं। उन्हें लगता है कि मृत्यु तब होती है जब कोई व्यक्ति अस्तित्व के किसी दूसरे स्तर पर चला जाता है। कुछ लोग कहते हैं कि मृत्यु के बाद का जीवन लगभग इस प्राकृतिक जीवन जैसा ही होता है। जैसा कि हिन्दू धर्म में है, उनमें से कई लोग पुनर्जन्म और कर्म के सिद्धांत में विश्वास करते हैं। जैसा कि हिन्दू और बौद्ध मानते हैं, पुनर्जन्म को एक बुरी वस्तु के रूप में देखने के बजाय, नए युग के लोगो को लगता है कि कई बार जीना अच्छा है। उनमें से कुछ को लगता है कि वे जानते हैं कि वे पिछले जन्म में कौन थे।

परमेश्वर के बारे में नए युग का दृष्टिकोण सर्वेश्वरवादी है। इसका मतलब है कि नए युग के लोग मानते हैं कि सभी वास्तविकता एक सार है, और सब कुछ मिलकर परमेश्वर है। हर वस्तु और हर व्यक्ति परमेश्वर का हिस्सा है। वे यह नहीं मानते कि परमेश्वर कोई व्यक्ति है जो सोचता या बोलता है, और वे इस बात से इनकार करते हैं कि परमेश्वर सृष्टिकर्ता है।

► क्या नये युग का अनुयायी प्रार्थना करेगा?

नए युग के अनुयायियों का मानना है कि यीशु एक ऐसे व्यक्ति थे जो विशेष शक्तियों का उपयोग करना जानते थे और दूसरों को भी ऐसा करना सिखाने का प्रयास करते थे। उनका मानना है कि यीशु नैतिक मानकों की परवाह नहीं करते थे और किसी के गलत कामों का न्याय नहीं करते थे।

नए युग के लोग पाप की वास्तविकता पर विश्वास नहीं करते, क्योंकि वे ऐसे परमेश्वर में विश्वास नहीं करते जो मानक निर्धारित करता हो और न्याय करता हो। उनका मानना है कि संसार में बुराई सिर्फ़ ज्ञान के अभाव से है और समायोजन से दूर हो सकती है। नया युग सभी तरह के पापपूर्ण विकृतियों को उचित ठहराता है।

***परमेश्वर लोगों को वास्तविक समाधान खोजने के लिए आमंत्रित करते हैं - क्षमा और शुद्धिकरण, यशायाह 1:18 देखें।***

नए युग के लोग बाइबल की उद्धार अवधारणा को अस्वीकार करते हैं। वे विश्वास नहीं करते कि पाप वास्तविक है, बल्कि उनका मानना है कि मानवीय समस्याओं का समाधान आत्मिक जागरूकता और आत्मिक शक्तियों का विकास है।

"शैतान का उद्देश्य आपको स्वयं केंद्रित बनाना है; आपको अपनी नज़रों में ईश्वर और उनकी सभी वाणी से ज़्यादा बुद्धिमान बनाना है। ऐसा करने के लिए, उसे अपने रूप में प्रकट होने की आवश्यक्ता नही है। इससे उसकी योजना विफल हो जाएगी। इसके बजाय, वह अपनी सारी कुशलता का प्रयोग करके आपको उसके अस्तित्व से तब तक इनकार करवाता है जब तक कि वह आप पर पूर्णत: नियंत्रण न कर ले।"

- जॉन वेस्ले

"अ कौशन अगैंस्ट बिगोटरी"

नए युग के अनुयायियों का मानना है कि मानवता एक विशेष युग में प्रवेश कर रही है, जब नए युग के सिद्धांतों को समझने वाले लोग पूरे समाज को बदल देंगे। उनका मानना है कि सभी के लिए शांति और आर्थिक सुरक्षा होगी।

***बाइबल हमें चेतावनी देती है कि हम ऐसे समाज में शांति और सुरक्षा की उम्मीद न करें जो परमेश्वर के अधीन नहीं है, 1 थिस्सलुनीकियों 5:3 देखें।***

► बाइबल आधारित उद्धार की अवधारणा के बजाय नया युग किस पर विश्वास करता है?

**नए युग के प्रतिनिधियों को मान्यता देना**

ऐसी कई चीज़ें हैं जो किसी समूह, संगठन या लेखक को नए युग के रूप में पहचानने में सहायता करती हैं। कुछ उदाहरण हैं:

- धार्मिक या दार्शनिक कारणों से शाकाहारी होना
- रहस्यमय स्वास्थ्य विधियाँ जिन्हें वैज्ञानिक रूप से समझाया नहीं जा सकता
- कर्म का संदर्भ
- प्रकृति या ब्रह्मांड के साथ एकता में रहने के बारे में शब्दों का प्रयोग
- अतार्किक समझ के साधन के रूप में ध्यान
- असीमित मानव क्षमता से संबंधित शब्दों का प्रयोग
- अजीब प्रकार की मनोवैज्ञानिक या रहस्यमय ऊर्जा और शक्ति
- मृतकों या आत्माओं के साथ संचार
- भविष्यद्वाणी के लिए विभिन्न चीजों का उपयोग
- ज्योतिष
- जादू टोना और विक्का
- प्रकृति के साथ धार्मिक जुड़ाव
- पिरामिड और क्रिस्टल में रुचि
- यूएफओ और पृथ्वी से बाहर के प्राणियों में रुचि
- आत्मिक मार्गदर्शकों और उच्चतर अस्तित्व पर भरोसा
- पूर्वी धर्मों से प्राप्त अवधारणाएँ और प्रथाएँ

► नये युग की प्रथाओं के कौन से उदाहरण आपने देखे या सुने हैं?

**विश्वासी प्रतिक्रिया**

नये युग के धर्म में कुछ भी नया नहीं है। यशायाह 47:10-14 एक विशिष्ट राष्ट्र को संबोधित है जो सभी प्रकार के जादू-टोने का अभ्यास करता था, और यह

> "मैं पापों की क्षमा के लिए एक बपतिस्मा स्वीकार करता हूँ; और मैं मृतकों के पुनरुत्थान; और आने वाले संसार के जीवन की आशा करता हूँ।"
> - निसीन मत

बिल्कुल नए युग जैसा लगता है। लोग दुष्टता का अभ्यास करते हुए विशेष ज्ञान की खोज करते थे। उन्होंने ईश्वर बनने का प्रयास किया। उन्होंने आत्मिक शक्ति बनाने के कई माध्यम ईजाद किए।

बाइबल हर प्रकार के जादू और टोने-टोटके की उपेक्षा करती है, इसलिए नहीं कि यह वास्तविक नहीं है, बल्कि इसलिए कि यह बुरा है और परमेश्वर की सामर्थ का विरोध करती है (लैव्यव्यवस्था 19:26,31, लैव्यव्यवस्था 20:6, व्यवस्थाविवरण 18:9-12)। परमेश्वर ने इस्राएल राष्ट्र को जादूगरों को मारने की आज्ञा दी थी (निर्गमन 22:18, लैव्यव्यवस्था 20:27)। आज मसीहियों को किसी पर भी मृत्युदंड देने की जिम्मेदारी नहीं है, लेकिन यह आदेश उस पाप के लिए परमेश्वर के पूर्ण न्याय को दर्शाता है। नए नियम में, जब लोग मसीह में परिवर्तित हो गए तो उन्होंने अपनी जादू की पुस्तकें नष्ट कर दीं (प्रेरितों 19:19)।

लोग परमेश्वर को अस्वीकार करते हैं लेकिन फिर भी आध्यात्मिक शक्ति की खोज करते हैं। परमेश्वर की सामर्थ अधिक है, और वह अपनी सामर्थ का उपयोग उन लोगों के लिए करते हैं जो उन पर भरोसा करते हैं, लेकिन वह अपनी सामर्थ को लोगों के नियंत्रण में नहीं रखते हैं। एक व्यक्ति जो जादुई तरीकों से शक्ति और ज्ञान की खोज करता है, वह परमेश्वर को अस्वीकार करते हुए इसे खोजने का प्रयास कर रहा है। आत्माओं के साथ बातचीत और शक्ति की खोज एक व्यक्ति को गहरी बुराई में ले जाती है।

► अब वापस जाएं और ***बोल्ड और इटैलिक किए गए*** पाठ और प्रत्येक पवित्रशास्त्र को पढ़ें।

## सुसमाचार प्रसार

नए युग के अनुयायी के साथ सुसमाचार साझा करना प्राथमिकता है। ऐसे तर्कों में न फंसें जो आपको सुसमाचार साझा करने से रोकते हैं। वह सोच सकते हैं कि वह कलीसियाओं से परिचित हैं, इसलिए उन्होने कलीसिया को अस्वीकार किया, लेकिन वह वास्तव में यह नहीं समझ सके कि सुसमाचार क्या है।

यीशु ने चंगा करने, भविष्यद्वाणी करने और सत्य को समझने की महान सामर्थ को प्रदर्शित किया। वह किसी भी नए युग के अगुवे से महान थे। वह किसी ऐसे व्यक्ति के उदाहरण नहीं हैं जिन्होने खुद को विकसित किया और प्रकृति से मिली आत्मिक शक्तियों का उपयोग किया। यीशु पिता के अधीन थे और पूर्ण सत्य में विश्वास करते थे। वह उन लोगों के साथ संघर्ष में थे जो परमेश्वर के अधिकार, पाप और न्याय की सच्चाई को नकारते थे।

मसीही एक ऐसे नए युग में विश्वास करते हैं जो परमेश्वर के राज्य के साथ आ रहा है। यह सभी दुखों का अंत होगा, और शांति और समृद्धि लाएगा। केवल वे ही लोग उस नए युग में प्रवेश कर सकते हैं जो परमेश्वर के साथ सही संबंध में हैं।

## एक गवाही

ईथन सुनी हुई आवाज़ों का अनुसरण करने का प्रयास कर रहा था। उन्होंने उसे बताया कि वह परमेश्वर का पुत्र मसीह है, लेकिन उसने इसे भ्रम समझकर विरोध किया। कभी-कभी उसे अलौकिक शक्ति और ज्ञान का एहसास होता था। उसके कुछ मित्रों ने उसे बताया कि यीशु पर विश्वास करने और बुद्ध या किसी और वस्तु पर विश्वास करने के बीच कोई गलत बात नहीं है। ईथन को लगने लगा कि जो वस्तु उसे शक्ति दे रही थी, वही उसे अपने वश में करने का प्रयास भी कर रही हैं। वह मसीहियों के एक समूह से मिला जो उसके मित्र बन गए। उसे समझ में आने लगा कि वह उन सभी आवाज़ों पर भरोसा नहीं कर सकता जो वह सुन रहा था। कभी-कभी परमेश्वर उससे बात कर रहे थे, लेकिन कभी-कभी बुरी आत्माएँ भी उसे गलत दिशा में ले जाने का प्रयास कर रही थीं। उसने ठोस सत्य के साथ विचारों का परीक्षण करना सीखा। उसने पाया कि मसीह के साथ वास्तविक संबंध उसके द्वारा अनुभव किए गए सभी अनुभवों से अधिक संतोषजनक था।

## वचन का अध्ययन – भाग 2

► अब भजन संहिता 19 को फिर से पढ़ें। प्रत्येक छात्र एक अनुच्छेद लिखे जिसमें इस अंश का संदेश न्यू एज के अनुयायियों के लिए समझाया गया हो। कुछ छात्र अपनी लिखी बातें साझा कर सकते हैं।

## प्रत्येक पाठ के लिए निर्धारित कार्य

इस धार्मिक समूह के किसी व्यक्ति के सामने सुसमाचार प्रस्तुत करने का अवसर ढूँढ़ना याद रखें। अपने सहपाठियों के साथ हुई बातचीत के बारे में बताने के लिए तैयार रहें। अपना 2-पृष्ठ वाला प्रतिवेदन लिखकर अपनी कक्षा के अगुवे को सौंप दें।

# पाठ 14
# प्रकृति धर्म

## पहली मुलाकात

मीरी पापुआ न्यू गिनी के एक गांव में रहना वाला एक छोटा बच्चा था। उसके पास कम खिलौने थे लेकिन कभी-कभी वह अपने दादा की खोपड़ी के साथ खेलता था। खोपड़ी को अपने पूर्वज का सम्मान करने और बुरी आत्माओं को दूर रखने के लिए घर में रखा जाता था।

## वचन का अध्ययन – भाग 1

► भजन संहिता 147 को ऊँची आवाज में मिलकर पढ़ें। प्रत्येक छात्र एक अनुच्छेद लिखे जो इस पवित्रशास्त्र के अंश का सारांश प्रस्तुत करे। यह अंश सृष्टि के साथ परमेश्वर की भागीदारी के बारे में क्या कहता है? प्रत्येक छात्र कथनों की एक सूची बनाए। जो आपने लिखा है उस पर सामूहिक रूप से चर्चा करें।

## प्रकृति धर्म

प्रकृति धर्म एक धार्मिक विश्वास प्रणाली या विश्वदृष्टि है जो अधिकांश आदि संस्कृतियों की खासियत और अधिकांश आदि समाजों में धार्मिक अभ्यास का आधार है। प्रकृति धर्मों की कई मान्यताएँ और प्रथाएँ हिन्दू धर्म, बौद्ध धर्म, वुडूवाद और रोमन कैथोलिक धर्म सहित अन्य प्रमुख विश्व धर्मों के उपासकों के बीच भी पाई जा सकती हैं। नए युग के धर्म में कई लोग अलौकिक के साथ बातचीत करने के तरीके खोजने के लिए प्रकृति धर्मों का अध्ययन करते हैं।

> "परमेश्वर असृजित, अनिवार्य, एक, अनंत, अपार, व अनंत जीवन हैं, वह सभी जीवित प्राणियों का जीवन हैं।"
> - थॉमस ओडेन
> द लिविंग गॉड

प्रकृति धर्म को कभी-कभी एनिमिज्म कहा जाता है। एनिमिज्म एक ऐसा शब्द है जो इस विश्वास पर जोर देता है कि प्रकृति के तत्वों में आत्माएं होती हैं। इसमें पशु, पेड़, पहाड़ और नदियाँ सम्मलित हैं। एनिमिस्ट मानते हैं कि फसल उगाने, घर बनाने और स्वस्थ रहने में सफल होने के लिए उन्हें उन आत्माओं को स्वीकार करना चाहिए और उनके साथ बातचीत करनी चाहिए।

***एनिमिस्ट लोग उन आत्माओं में विश्वास करते हैं जो कुछ निश्चित स्थानों पर रहती हैं, लेकिन परमेश्वर के पास हर जगह समस्त सामर्थ है, 1 राजा 20:28 देखें।***

एनिमिस्ट ऐसी आत्माओं में भी विश्वास करते हैं जो किसी भौतिक शरीर या स्थान से जुड़ी हों। वे यह भी मानते हैं कि उनके पूर्वजों की आत्माएँ संसार और उनके जीवन में सम्मलित हैं।

एनिमिस्ट अपने विश्वासों को धर्म नहीं कहते। उनके लिए एनिमिज्म सिर्फ वास्तविकता है। आम तौर पर एनिमिज्म का कोई आधिकारिक वचन या लिखित सिद्धांत नहीं है।

► प्रकृति धर्मों और हमारे द्वारा अध्ययन किये गये अन्य धर्मों के बीच आप क्या समानताएं देखते हैं?

प्रकृति धर्मों में मनुष्य संसार से अलग नहीं है, बल्कि संसार का हिस्सा है, तथा उसकी कोई विशेष स्थिति नहीं है।

> "यह परमेश्वर की सर्वोच्च सामर्थ है जो बाइबल के संसार में भविष्यद्वाणी और चमत्कारों को पूरी तरह से सुगम बनाती है। परमेश्वर को कभी भी उनकी सृष्टि से अलग नहीं रखा जा सकता।"
> - डब्ल्यू.टी. पर्किंसर
> गॉड मैन एंड साल्वेशन

***परमेश्वर मनुष्यों को विशेष महत्त्व देते हैं और उनकी विशेष देखभाल करते हैं, मत्ती 10:31 देखें।***

प्राकृतिक धर्मों का पालन करने वाले लोग आत्माओं से बातचीत करने के लिए विशेष शब्द, वस्तुएँ या क्रियाएँ करते हैं। ये रीति-रिवाज़ अलग-अलग समाजों में विभिन्न हैं। माना जाता है कि रीति-रिवाज़ आत्माओं को नाराज़ करने से बचने में सहायता करते हैं और संभवतः उनसे अच्छी प्रतिक्रियाएँ प्राप्त करते हैं। एक व्यक्ति अपने साथ ऐसी वस्तु ले जाता है जिसके बारे में माना जाता है कि उसमें शक्ति है। अक्सर, एक एनिमिस्ट यह नहीं समझा पाता कि कोई प्रथा क्यों प्रचलित है।

***परमेश्वर चाहते हैं कि हम ऐसी हर चीज़ से छुटकारा पा लें जो आत्माओं पर निर्भर रहने के लिए सहायक है। अगर हमारे पास ऐसी चीज़ें हैं, तो हम पूरी तरह से परमेश्वर पर भरोसा नहीं कर रहे हैं, प्रेरितों 19:19 देखें।***

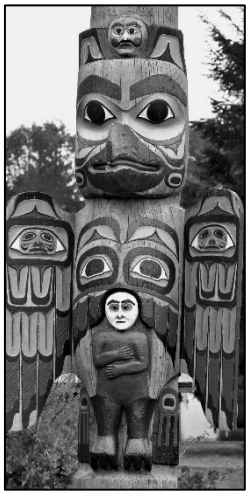

एनिमिस्टों का मानना है कि कोई व्यक्ति किसी अन्य वस्तु या व्यक्ति से शक्ति प्राप्त कर सकता है। उनका मानना है कि व्यक्ति को विशेष वस्तुओं या स्थानों से सावधान रहना चाहिए क्योकि उन शक्तियों से हानिकारक प्रभाव होते हैं।[34]

अंधविश्वास कहलाने वाली अधिकांश प्रथाएँ एनिमिस्ट अवधारणाओं से आती हैं। अंधविश्वास वह विचार है जिसके अनुसार किसी व्यक्ति को कुछ प्रथाओं का पालन करना चाहिए क्योंकि विशेष वस्तुओं, कार्यों या स्थानों में आध्यात्मिक शक्ति होती हैं। मसीही लोग अलौकिक शक्तियों की वास्तविकता जानते हुए भी अंधविश्वासी नहीं होते क्योंकि वे परमेश्वर की सर्वोच्च सामर्थ पर भरोसा करते हैं।

► बाइबल हमें अंधविश्वास से जुड़ी चीज़ों का प्रयोग न करने के लिए क्यों कहती है?

एनिमिस्ट मानते हैं कि संसार आध्यात्मिक जोखिमों से भरा हुआ है, और उन्हें सावधान रहना चाहिए कि वे प्रकृति आत्माओं या अपने पूर्वजों को नाराज़ न करें। उनका जीवन निरंतर भय से निर्देशित होता है। कभी-कभी लोग सोचते हैं कि आरम्भिक समाज तब तक खुश और चिंता मुक्त था जब तक कि मिशनरी संगठित धर्मप्रचार के लिए नहीं आये, लेकिन यह सच नहीं है। आरम्भिक लोग

[34] चित्र Bruce Warrington, के Unsplash से लिया गया है https://unsplash.com/photos/8Or5Z9-sH0Q.

सुसमाचार के न होने के कारण आत्माओं के डर की गुलामी में रहते थे। सुसमाचार मुक्ति के एक अद्भुत संदेश के रूप में आता है। वे सीखते हैं कि वे एक ऐसे परमेश्वर की सेवा कर सकते हैं जो उनसे प्रेम करते हैं और उन्हें आत्माओं से डरने की आवश्यक्ता नहीं है।

***बाइबल हमें कई बार बताती है कि हमें डरने की आवश्यक्ता नहीं है क्योंकि हम परमेश्वर पर भरोसा कर सकते हैं, यशायाह 41:10 देखें।***

प्रकृति धर्मों का पालन करने वाले लोगों के पास ऐसे धार्मिक विशेषज्ञ हो सकते हैं जिन्हें आत्माओं के मामलों से निपटने में विशेषज्ञ माना जाता है। प्रत्येक संस्कृति में इन धार्मिक विशेषज्ञों के लिए अपना नाम होता है।

एनिमिस्ट सृष्टि करने वाले एक सर्वोच्च परमेश्वर में विश्वास कर सकते हैं, लेकिन वे उससे प्रार्थना नहीं करते क्योंकि उन्हें लगता है कि उसके साथ संपर्क करना असंभव है। उन्हें लगता है कि उनके आस-पास की आत्माएँ ही वे माध्यम हैं जिनसे उन्हें अपने जीवन में सहायता पाने के लिए बुलाया जा सकता है।

> "और मैं जीवनदाता प्रभु के पवित्र आत्मा पर विश्वास करता हूँ, जो पिता और पुत्र से मिलता है।"
> - निसीन मत

आत्माओं के साथ संपर्क करने का प्रयास प्रायः एनिमिस्ट को दुष्टात्माओं के साथ संपर्क करने की ओर ले जाता है।

► अब वापस जाएं और ***बोल्ड और इटैलिक किए गए*** पाठ और प्रत्येक पवित्रशास्त्र को पढ़ें।

## सुसमाचार प्रसार

बहुत से एनिमिस्ट पहले से ही एक सर्वोच्च ईश्वर में विश्वास करते हैं, लेकिन यह नहीं मानते कि वे उन तक पहुँच सकते है या वो ईश्वर उनमें रुचि रखता है। सुसमाचार उन्हें बताता है कि परमेश्वर उनसे प्रेम करते हैं और उन्होने यीशु को भेजकर अपने प्रेम को दर्शाया।

कई एनिमिस्ट सोचते हैं कि उन्होंने एक आध्यात्मिक प्राणी को ठेस पहुँचाई है: जैसे कोई ईश्वर, उनके सम्बंधी जो दिव्य बन गए हैं, या कोई और। सुसमाचार बताता है कि परमेश्वर हमारे पापों को क्षमा करने के लिए तैयार हैं ताकि हम उनके साथ संबंध में आ सकें।

एनिमिस्ट आत्माओं के डर में जीते हैं। हम उन्हें आश्वस्त कर सकते हैं कि अगर वे परमेश्वर को जान लेते हैं, तो वे उनकी सुरक्षा में रहेंगे और आत्माओं के बजाय वे जीवित परमेश्वर के साथ सम्बंध बना सकते हैं।

## एक गवाही

हाटो पापुआ न्यू गिनी में एक जनजाति का मुखिया था। वह आत्माओं और पूर्वजों के डर में रहता था। अक्सर विभिन्न गाँवो के बीच लड़ाईयाँ होती रहती थी। फिर एक मिशनरी उसके गाँव में रहने आए। हाटो ने देखा कि जब मिशनरी के बेटे खतरे में थे तो उन्होने कैसे संकट के समय परमेश्वर पर भरोसा रखा। यह देखकर हाटो ने आत्माओं की बजाय परमेश्वर की सेवा करने का निर्णय लिया।

## वचन का अध्ययन – भाग 2

► अब भजन संहिता 147 को फिर से पढ़ें। प्रत्येक छात्र एक अनुच्छेद लिखे जिसमें इस अंश का संदेश एनिमिस्टों के लिए समझाया गया हो। कुछ छात्र अपनी लिखी बातें साझा कर सकते हैं।

## प्रत्येक पाठ के लिए निर्धारित कार्य

इस धार्मिक समूह के किसी व्यक्ति के सामने सुसमाचार प्रस्तुत करने का अवसर ढूँढ़ना याद रखें। अपने सहपाठियों के साथ हुई बातचीत के बारे में बताने के लिए तैयार रहें। अपना 2-पृष्ठ वाला प्रतिवेदन लिखकर अपनी कक्षा के अगुवे को सौंप दें।

# पाठ 15
# वुडू

## पहली मुलाकात

नादिन वुडू की दुकान पर जाकर कुछ प्रश्न पूछने लगा। उस व्यक्ति ने कहा कि वुडू कैथोलिक धर्म के विरुद्ध नहीं है और कोई व्यक्ति कैथोलिक होने के साथ-साथ वुडू का अभ्यास भी कर सकता है। उसने कहा कि आत्माएं लोगों की सहायता करती हैं, लेकिन लोगों को उन आत्माओं के वश में होकर उनका दाम चुकाना चाहिए।

## वचन का अध्ययन – भाग 1

► भजन संहिता 145 को ऊँची आवाज में मिलकर पढ़ें। प्रत्येक छात्र एक अनुच्छेद लिखे जो इस पवित्रशास्त्र के अंश का सारांश प्रस्तुत करे। यह अंश परमेश्वर की सामर्थ और भलाई के बारे में क्या कहता है? प्रत्येक छात्र कथनों की एक सूची बनाए। जो आपने लिखा है उस पर सामूहिक रूप से चर्चा करें।

## वुडू

### वुडू का परिचय

वुडू की उत्पत्ति अफ्रीकी प्रकृति धर्मों में हुई थी, लेकिन उनमें से विश्वास और प्रथाओं को अन्य स्रोतों की विशेषताओं के साथ मिलाया गया है। कई आधुनिक अभ्यासकर्ता *वोडुन* शब्द को पसंद करते हैं।

वुडू के अनुसार, ईश्वर का अस्तित्व तो है, लेकिन लोग सहायता के लिए उससे संपर्क नहीं कर सकते। इसके बजाय, लोग संसार में मौजूद आत्माओं से बातचीत कर सकते हैं।

> "यीशु स्वर्ग में चढ़ गए, वह पिता, सर्वशक्तिमान परमेश्वर के दाहिने हाथ पर बैठे हैं, जहाँ से वो ज़िंदो और मुर्दो का न्याय करने के लिए फिर आयेंगे। उनके आने पर सभी मनुष्य अपनी देह के साथ फिर से जी उठेंगे और अपने-अपने कामों का हिसाब देंगे। और जिन्होंने अच्छा किया है वे अनन्त जीवन में जाएँगे; और जिन्होंने बुरा किया है वे अनन्त आग में जाएँगे।"
> - अथानासियन पंथ

***बाइबल हमें बताती है कि परमेश्वर हम में से हर एक के बहुत निकट है, और हम उसे पा सकते हैं, प्रेरितों 17:27 देखें।***

► यह किस अन्य धर्म जैसा लगता है?

जो लोग वुडू का अभ्यास करते हैं, वे वास्तव में शैतान और दुष्ट आत्माओं की पूजा कर रहे हैं। बहुत से लोग यह स्वीकारते भी हैं कि वे शैतान की सेवा कर रहे हैं।

वुडू प्रथा को हमेशा बाहरी लोग मान्यता नहीं देते क्योंकि इसमें अक्सर रोमन कैथोलिक रीति-रिवाजों, छवियों और संत के नामों का प्रयोग किया जाता है। वुडू के उपासक क्रूस और अन्य मसीही प्रतीकों का भी प्रयोग करते हैं। वुडू के अनुयायियों का आँकड़ा ढूँढ़ना कठिन है क्योंकि कई वुडू प्रतिभागी मसीही धर्म सहित अन्य धर्मों से भी जुड़े हुए हैं।

***परमेश्वर की सेवा करना और अन्य आत्माओं की उपासना करना असंभव है, 1 कुरिन्थियों 10:20-22 देखें।***

कभी-कभी जो लोग खुद को मसीही कहते हैं, लेकिन वास्तव में धर्मांतरित नहीं होते, वे वुडू और मसीही धर्म के बीच अंतर देख ही नही पाते। कलीसिया जाने वाला व्यक्ति किसी समस्या के समाधान के लिए वुडू जादूगर के पास भी जा सकता है। कोई व्यापारी अधिक माल बेचने में सहायता के लिए जादू की सहायता ले सकता है। कोई माता-पिता बीमार बच्चे को ठीक करने के लिए उनके पास जा सकते हैं।

> "हमें याद रखना चाहिए कि जैसे परमेश्वर ज्योति की संतानो में वास और कार्य करते हैं, वैसे ही शैतान अंधकार की संतानो में वास और काम करता है। जैसे पवित्र आत्मा भले लोगों की आत्माओं पर नियंत्रण रखता है, वैसे ही दुष्ट आत्मा दुष्टों की आत्माओं पर नियंत्रण रखती है। सांसारिक लोगों पर उसकी अनियंत्रित शक्ति के कारण प्रेरित उसे 'इस संसार का इश्वर' कहते हैं।"
> - जॉन वेस्ले "अ कौशन अगैंस्ट बिगोट्री"

► वुडू उपासक का सच्चा मसीही होना असंभव क्यों है?

वुडू के उपासक वेदियों, प्रसाद, नृत्य और समारोहों का उपयोग करके आत्माओं से संपर्क करते हैं। वे पूर्वजों से भी प्रार्थना करते हैं।

आत्माएँ *(लोआ)* पाँच राष्ट्रों, एक ही उपनाम वाले व्यक्तियों के कई परिवारों में विभाजित हैं। कुछ आत्माएँ या आत्माओं के परिवार जीवन के कुछ पहलुओं, जैसे कृषि, सेना या प्रेम से जुड़े हैं। यह उसी तरह है जैसे रोमन कैथोलिकों ने जीवन के विभिन्न पहलुओं के लिए संतों की नियुक्ति की है।

पुजारी और पुजारिन पूजा-अर्चना के कार्यक्रमों का नेतृत्व करते हैं और उन्हें जादू-टोना करने या जादू-टोने से बचाने के लिए काम पर रखा जाता है। उनके पास एक मण्डली होती है जिसका वे नियमित रूप से पूजा-पाठ में नेतृत्व करते हैं और अन्य आध्यात्मिक सेवाएँ प्रदान करते हैं। बोकोर नामक अन्य जादूगर भी होते हैं जो पुजारी हो भी सकते हैं और नहीं भी, पर वे दुष्ट जादू-टोने से अधिक जुड़े होते हैं। उदाहरण के लिए, किसी को श्राप देने के लिए बोकोर का प्रयोग किया जाता है।[35]

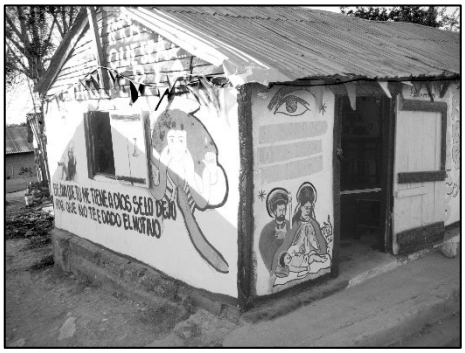

*एक जादूगरी कार्यालय*

***शमौन नाम का एक आदमी शक्तिशाली जादूगर था, लेकिन परमेश्वर की सामर्थ उससे भी बड़ी थी, प्रेरितों 8:9-13 देखें।***

वुडू धर्म का कोई केंद्रीय संगठन या अधिकार नहीं है। प्रत्येक पुजारी या पुजारिन की अपनी पसंदीदा प्रथाएँ होती हैं। प्रत्येक वुडू उपासक वुडू परिवार का सदस्य होता है।

[35]चित्र Stephen Gibson से लिया गया है https://www.flickr.com/photos/sgc-library/52352524591, पब्लिक डोमेन।

***मसीहियों के रूप में, हम एक आत्मिक परिवार में हैं, जिसमें भाई-बहन हमारे साथ जीवन साझा करते हैं और व्यावहारिक जरूरतों में सहायता करते हैं, याकूब 2:15-16 और गलातियों 6:10 देखें।***

वुडू क्रियायें आमतौर पर शुक्रवार या शनिवार की रात को होती हैं। वुडू क्रिया में परिवार से जुड़ी विभिन्न आत्माओं के सम्मान में पढ़ी जाने वाली कविताएँ, कई गाने और प्रार्थनाएँ सम्मलित होती हैं। उपासक अपनी क्रियायों में ड्रम, डफ और बांसुरी का उपयोग करते हैं जो पूरी रात चल सकती हैं। वुडू क्रिया के दौरान, आत्माएँ विभिन्न उपासकों पर कब्ज़ा कर लेती हैं, उनके माध्यम से बोलती और काम करती हैं। वुडू उपासना में किसी आत्मा द्वारा कब्ज़ा किया जाना एक महत्वपूर्ण लक्ष्य है। ऐसा माना जाता है कि इस तरह से कब्ज़ा किए गए लोगों के परिवारों को विशेष लाभ मिलते हैं। कभी-कभी आत्माएँ सलाह या इलाज देती हैं।

***कलीसिया पवित्र आत्मा से निर्देश पाती है और उस पर भरोसा किया जा सकता है क्योंकि वह परमेश्वर है, प्रेरितों 13:2, प्रेरितों 15:28 और गलातियों 3:5 देखें।***

► एक मसीही को आत्माओं से सहायता की उम्मीद क्यों नहीं करनी चाहिए?

विशेष वुडू समारोहों में मुर्गियों या सूअरों की बलि दी जाती है और खून पीया और छिड़का जाता है। एक पुजारी मुर्गे का सिर काटता है। उपासक आग के चारों ओर या पेड़ के चारों ओर नृत्य करते हैं। वे गाते हैं और आत्माओं से अपने अंदर प्रवेश करने के लिए प्रार्थना करते हैं। वे आत्माओं के लिए भोजन रखते हैं। वे फर्श पर ऐसे चित्र बनाते हैं जो माना जाता है कि आत्मा शक्ति को नियंत्रित करते हैं। वे समारोहों में सांपों का उपयोग करते हैं। कभी-कभी वे सफेद कपड़े पहनते हैं। कभी-कभी वे अपने चेहरे को विभिन्न रंगों से रंगते हैं, लेकिन विशेष रूप से सफेद रंग से।

कभी-कभी अलौकिक शक्ति का प्रदर्शन किया जाता है। कुछ लोग आत्माओं द्वारा चंगे होने का दावा करते हैं। वे बीमारी पैदा करने वाली आत्मा को भगाने का प्रयास करते हैं। कुछ लोग जलती हुई लकड़ी को दांतों से काटते हैं और अपने मुंह में जलते हुए अंगारों को पकड़ लेते हैं।

कभी-कभी शापित व्यक्ति को दर्शाने के लिए एक छोटी सी गुड़िया का प्रयोग किया जाता है। गुड़िया में पिन या चाकू भी ठूंस दिए जाते हैं। शाप से लोगों की मृत्यु हुई है, लेकिन सच्चे मसीहियों ने गवाही दी है कि वुडू शाप उन्हें नुकसान नहीं पहुँचा सकते।

एक उपासक के अपने घर में आत्माओं और पूर्वजों के लिए एक वेदी होती है। वेदी पर आत्माओं की तस्वीरें और मूर्तियाँ रखी जाती हैं, और उन्हें पसंद आने वाली चीज़ें जैसे फूल, मोमबत्तियाँ, इत्र या भोजन भी रखे जाते हैं। एक सफ़ेद मोमबत्ती और एक गिलास पानी एक साधारण भेंट हो सकती है।

कुछ वुडू साधक ऐसी वस्तुएं पहनते हैं जो उन्हें हानिकारक आत्माओं से बचाती हैं। वे इन्हें अपने बच्चों और शिशुओं को भी पहनाते हैं।

उनका मानना है कि मृत्यु के बाद आत्मा प्रकृति के किसी हिस्से जैसे पेड़ पर निवास करती है।

कुछ वुडू उपासक हमेशा शैतान के कब्जे में रहते हैं और उन पर उनका प्रभुत्व रहता है। कुछ पागल, हिंसक और आत्म-विनाशकारी हो जाते हैं।

***दुष्टात्मा से ग्रस्त व्यक्ति में भय और पागलपन रहता है, तथा वह स्वयं को हानि पहुंचाता है, मरकुस 5:2-5 देखें।***

► अब वापस जाएं और ***बोल्ड और इटैलिक किए गए*** पाठ और प्रत्येक पवित्रशास्त्र को पढ़ें।

## सुसमाचार प्रसार

वुडू उपासकों का परमेश्वर के साथ कोई संबंध या उद्धार का आश्वासन नहीं होता। इसका अर्थ है कि उनके पास ऐसी आत्मिक आवश्यक्ता है जिसे सुसमाचार द्वारा संबोधित किया जा सकता है। एक मसीही सुसमाचार और अपने मन परिवर्तन की गवाही साझा कर सकता है और यह बता सकता है कि परमेश्वर के साथ सम्बंध में रहने का उसके लिए क्या अर्थ है।

वुडू के उपासक डर के साये में जीते हैं। वे ऐसे ईश्वर की सेवा नहीं करते जो उनसे प्रेम करता हो। वे आत्माओं से अच्छे और बुरे दोनों तरह के कामों की अपेक्षा करते हैं। उन्हें अपने लिए की गई हर धार्मिक सेवा के लिए वुडू पुजारी को दाम चुकाना पड़ता है। कुछ देशों में लोग वुडू अगुवों की गुलामी में हैं।

जो व्यक्ति आत्माओं की पूजा करना चुनता है, वह ऐसा इसलिए करता है क्योंकि उसे लगता है कि उसे उनकी सहायता और सुरक्षा की आवश्यक्ता है। इसके परिणाम पाप की खोज के समान ही होते हैं; वह अच्छाई जिसे पाने का प्रयास व्यक्ति कर रहा है, वह फीकी पड़ जाती है, और पाप उसके जीवन में मौजूद हर अच्छी चीज़ को नष्ट कर देता है, जिसमें पारिवारिक सम्बंध भी सम्मलित हैं।

जो व्यक्ति सुसमाचार को अस्वीकार करता है, वह पाप में बने रहना चाहता है और परमेश्वर को नियंत्रण देने के बजाय अपने जीवन पर स्वयं नियंत्रण रखना चाहता है। हालाँकि, दुष्ट आत्माओं के साथ संबंध रखने वाला व्यक्ति खुद पर नियंत्रण खो देता है और गुलामी में पड़ जाता है।

सुसमाचार दुष्ट शक्तियों से मुक्ति का संदेश है। यह क्षमा का प्रस्ताव है। यह परमेश्वर के साथ सम्बंध का प्रस्ताव है जो हमसे प्रेम और हमारी परवाह करते हैं।

## एक गवाही

जाक़ हैती में एक वुडू जादूगर था। उसने कई लोगों को शाप देकर मार डाला था। वह कई महिलाओं के साथ रहता था। एक दिन एक मिशनरी ने उससे कहा कि वह जिन आत्माओं की सेवा करता है, वे एक दिन उसे नष्ट कर देंगी। बाद में जाक़ ने मिशनरी से आग्रह किया कि वह आकर उसके लिए प्रार्थना करें। जाक़ ने पश्चाताप किया और अपने सभी वुडू उपकरण नष्ट कर दिए।

## वचन का अध्ययन – भाग 2

► अब भजन संहिता 145 को फिर से पढ़ें। प्रत्येक छात्र एक अनुच्छेद लिखे जिसमें इस अंश का संदेश वूडू के अनुयायियों के लिए समझाया गया हो। कुछ छात्र अपनी लिखी बातें साझा कर सकते हैं।

## प्रत्येक पाठ के लिए निर्धारित कार्य

इस धार्मिक समूह के किसी व्यक्ति के सामने सुसमाचार प्रस्तुत करने का अवसर ढूँढ़ना याद रखें। अपने सहपाठियों के साथ हुई बातचीत के बारे में बताने के लिए तैयार रहें। अपना 2-पृष्ठ वाला प्रतिवेदन लिखकर अपनी कक्षा के अगुवे को सौंप दें।

# पाठ 16
# सेवेंथ डे एड्वैंटिस्म को समझना

## पहली मुलाकात

लिडिया यह देखकर हैरान थी कि उसकी गली में हर शनिवार को बहुत से लोग कलीसिया जाते हैं। उसने अपने पड़ोसियों से इस बारे में पूछा, और उन्होंने उसे बताया कि शनिवार का दिन विश्राम और आराधना के लिए उपयुक्त है। उन्होंने बताया कि शनिवार को वे व्यापार या खरीदारी या ज़्यादा मनोरंजन नहीं करते। लिडिया ने सोचा कि उनका धर्म अन्य कलीसियाओं से बहुत अलग होगा, लेकिन वे परमेश्वर और उद्धार के बारे में एक जैसी बातें मानते थे।

## वचन का अध्ययन – भाग 1

► 1 तीमुथियुस 1 को ऊँची आवाज में मिलकर पढ़ें। प्रत्येक छात्र एक अनुच्छेद लिखे जो इस पवित्रशास्त्र के अंश का सारांश प्रस्तुत करे। यह अंश सिद्धांत सिखाने के बारे में क्या कहता है? प्रत्येक छात्र कथनों की एक सूची बनाए। जो आपने लिखा है उस पर सामूहिक रूप से चर्चा करें।

## सेवेंथ डे एड्वैंटिस्म

### सेवेंथ डे एड्वैंटिस्म की उत्पत्ति

*विलियम मिलर*

1830 के दशक में, विलियम मिलर,[36] एक बैपटिस्ट उपदेशक ने यह प्रचार करना शुरू किया कि यीशु जल्द ही वापस आएंगे। उनके अनुयायियों को कई वर्षों तक मिलराइट्स कहा जाता था। 1844 में, मिलराइट्स ने 22 अक्टूबर, 1844 को मसीह की वापसी की भविष्यद्वाणी की। हज़ारों लोग इस पर यकीन कर चुके थे। यीशु के प्रकट न होने के बाद कई मिलराइट्स ने आंदोलन त्याग दिया। हीराम एडसन ने दावा किया कि उन्हें एक प्रकाशन प्राप्त हुआ था कि उस तारीख को यीशु ने स्वर्गीय स्थानों में एक नई सेवकाई शुरू करी। जो लोग आंदोलन के साथ बने रहे वे सेवेंथ-डे एडवेंटिस्ट कलीसिया बन गए।

ऐसी अन्य कलीसिया भी हैं जो इस बात पर ज़ोर देती हैं कि शनिवार का दिन मसीही आराधना के लिए उपयुक्त है। इस संगठन से पहले भी कई अन्य कलीसिया थी जो इस सिद्धांत को सिखाती थी, लेकिन सेवेंथ-डे एडवेंटिस्ट सबसे बड़े और सबसे प्रभावशाली हैं।

[36] चित्र: "William Miller", J. H. Bufford Lithography Company से लिया गया the National Portrait Gallery, Smithsonian Institution https://npg.si.edu/object/npg_NPG.80.107.

**वर्तमान प्रभाव**

दिसंबर 2020 में, सेवेंथ-डे एडवेंटिस्ट ने दावा किया कि उनके पास 92,000 से ज़्यादा कलीसिया और 21 मिलियन से ज़्यादा सदस्य हैं। उन्होंने 212 देशों में काम किया और 535 भाषाओं में सेवा की। उनके पास 229 अस्पताल और 9,400 स्कूल थे।[37]

**सेवेंथ डे एड्वैंटिस्म का सिद्धांत**

एडवेंटिस्ट लोग परमेश्वर के बुनियादी मसीही सिद्धांतों जैसे कि त्रिएकता, मसीह और पवित्र आत्मा के प्रभुत्व में विश्वास करते हैं। वे बाइबल के अधिकार और विश्वास के माध्यम से अनुग्रह द्वारा उद्धार में भी विश्वास करते हैं।

एडवेंटिस्ट कहते हैं कि उनका मानना है कि अच्छे कामों से किसी व्यक्ति का उद्धार नहीं होता, बल्कि एक सच्चा मसीही, परिवर्तन के बाद परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता का जीवन जीता है। उनका मानना है कि परमेश्वर का नियम मसीहियों को दिखाता है कि उन्हें कैसे जीना है, और एक मसीही को पाप पर विजय प्राप्त करते हुए जीना चाहिए। उनका मानना है कि अगर कोई व्यक्ति परमेश्वर के लिए नही जीता है, तो वह अपना उद्धार खो देगा।

***एडवेंटिस्ट सही हैं कि पाप परमेश्वर के साथ हमारे सम्बंध को तोड़ देता है। यीशु ने कहा कि हम उनकी आज्ञाओं का पालन करके उनके साथ प्रेम के सम्बंध में बने रहते हैं, यूहन्ना 15:10 देखें।***

एडवेंटिस्टों का मुख्य संगठन कर्मों द्वारा उद्धार में विश्वास नहीं करता। हालाँकि, एडवेंटिस्टों के कुछ व्यक्ति और समूह हैं जिन्होंने व्यवस्था पर इतना ज़ोर दिया है कि वे कहते हैं कि व्यवस्था का पालन करना ही उद्धार का साधन है। यदि कोई व्यक्ति अपने कर्मों के कारण परमेश्वर द्वारा स्वीकार किए जाने की अपेक्षा करता है, तो वह मसीह द्वारा प्रदान अनुग्रह में अपना विश्वास नहीं रख रहा है (इफिसियों 2:8-9)।

► कर्मों के बारे में सही दृष्टिकोण क्या है? हम कैसे समझा सकते हैं कि हम अनुग्रह से बचाए तो गए हैं, परंतु परमेश्वर की आज्ञाकारिता में जीना भी उतना ही आवश्यक है?

एडवेंटिस्ट मानते हैं कि मनुष्य स्वाभाविक रूप से अमर नहीं है। मृत्यु के समय लोग तब तक अचेत अवस्था में चले जाते हैं जब तक कि उन्हें पुनर्जीवित नहीं कर दिया जाता। पुनरुत्थान के समय, जो लोग बच जाते हैं उन्हें अनंत जीवन मिलता है। जो लोग नहीं बच पाते हैं उन्हें न्याय के लिए पुनर्जीवित किया जाएगा और फिर आग की झील में नष्ट कर दिया जाएगा। उनका मानना है कि शैतान और अन्य शत्रुओं को भी पूरी तरह से नष्ट कर दिया जाएगा। कोई अनंत दंड नहीं है।

***यीशु ने कहा कि अनन्त दण्ड होगा, मत्ती 25:46, प्रकाशितवाक्य 20:10, 15 देखें।***

---

[37] "Seventh-Day Adventist World Church Statistics 2021." Seventh-day Adventist Church, 14 फरवरी, 2022। https://www.adventist.org/statistics/, 11 अप्रैल 2023 को एक्सेस किया गया.

एडवेंटिस्ट मानते हैं कि मसीहियों को आहार सम्बंधी पुराने नियम के कुछ नियमों का पालन करना चाहिए। उनका मानना है कि आहार संबंधी नियम स्वास्थ्य के लिए थे। उनका दावा है कि एडवेंटिस्ट अन्य लोगों की तुलना में अधिक समय तक जीवित रहते हैं।

***मसीहियों के लिए सभी प्रकार का मांस जायज़ है, 1 तीमुथियुस 4:4 देखें।***

एडवेंटिस्ट अपने सब्त के सिद्धांत के लिए सबसे ज्यादा जाने जाते हैं। उनका मानना है कि सप्ताह का सातवाँ दिन शनिवार, मसीहियों के लिए विश्राम और आराधना का सही दिन है। उनका मानना है कि रविवार को आराधना करने वाली कलीसियाओं ने एक बुतपरस्त प्रथा का पालन किया है।

**अन्य कलीसियाओं के प्रति रवैया**

एडवेंटिस्ट मानते हैं कि वे वफादार "अवशेष" हैं, जो समझौतावादी मसीही धर्म के संसार में अभी भी परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करते हैं। उनका मानना है कि बाइबल की भविष्यद्वाणी में बेबीलोन का अर्थ धर्मत्यागी धार्मिक संगठनों और संसार की व्यवस्था में उनके सहयोगियों से है।

उनका मानना है कि विभिन्न मसीही संप्रदायों में सच्चे मसीही भी हैं जो परमेश्वर की आज्ञा का पालन कर रहे हैं, लेकिन वे परमेश्वर की सच्ची इच्छा नहीं समझते। अंत के दिनों में प्रभु के आने से पहले, हर कोई क्लेश का सामना करेगा और उसे ज्योति प्राप्त करके उसमें चलना होगा अन्यथा परमेश्वर का न्याय उनपर होगा। रविवार के अराधक जो सत्य को स्वीकार नहीं करते हैं, वे अंततः "पशु की छाप" को स्वीकार करते हैं।

एडवेंटिस्ट मानते हैं कि कलीसिया के इतिहास में कई लोग जैसे कि रिफॉर्मेशन लीडर, सच्चे मसीही थे और परमेश्वर ने उनका प्रयोग भी किया। वे धर्मशास्त्रियों और बाइबल के विद्वानों से जो एडवेंटिस्ट नहीं हैं उनसे पढ़ते और उनका उदाहरण देते हैं।

► आप अन्य कलीसियाओं के प्रति एडवेंटिस्ट के स्वभाव का वर्णन कैसे करेंगे?

**भविष्यद्वाणी का महत्व**

एडवेंटिस्ट मानते हैं कि भविष्यद्वाणी करना कलीसिया के लिए एक उपहार है, जो निरंतर उनका मार्गदर्शन करता है। उनकी सबसे महत्वपूर्ण भविष्यद्वक्ता एलेन व्हाइट थीं। उन्होंने 1844 में भविष्यद्वाणी करना शुरू किया। उन्होंने 2,000 से ज़्यादा दर्शन लिखे। उनके दर्शन और अन्य लेखन 80 किताबों में सम्मलित हैं। एडवेंटिस्ट अपने सदस्यों को नियमित रूप से उनके लेखन को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

एडवेंटिस्ट मानते हैं कि बाइबल ही अंतिम अधिकार है, और सभी भविष्यवाणियों को वचन द्वारा परखा जाना चाहिए। एलेन व्हाइट ने खुद कहा कि अगर लोग वचन का

> "[कट्टरता] को सामान्य रूप से इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है: ईश्वर के किसी झूठे कल्पित प्रभाव या प्रेरणा से उत्पन्न होने वाला धार्मिक पागलपन; ईश्वर से ऐसी किसी चीज़ की अपेक्षा करना जिसकी अपेक्षा नहीं की जानी चाहिए।"
> - जॉन वेस्ले की पुस्तक "द नेचर ओफ एंथुसिआस्म" से रूपांतरित

बारीकी से पालन करें तो उनकी पुस्तक टेस्टिमनीज़ की आवश्यक्ता ही नहीं पड़ेगी। उन्होंने कहा कि उनके लेखन का उद्देश्य बाइबल में निहित किसी भी चीज़ को प्रकट करना नहीं था।[38]

एडवेंटिस्ट अभी भी एलेन व्हाइट की पुस्तकों को अपने सिद्धांत की सबसे अच्छी व्याख्या के रूप में प्रकाशित और वितरित करते हैं। वे अपने प्रकाशनों में लगातार उनका हवाला देते हैं। हालांकि वे यह दावा नहीं करते कि उनका लेखन बाइबल के समान अधिकार वाला है।

एलेन व्हाइट के अधिकांश लेखन में ऐसे विचार व्यक्त किए गए हैं जो बाइबल में नहीं हैं, और वचन की व्याख्या ऐसे करते हैं जो सामान्य व्याख्या के बजाय नए प्रकाशन पर निर्भर करता है। एक खतरा यह है कि एडवेंटिस्ट बाइबल के अलावा अन्य लेखन को बहुत अधिक महत्व देते हैं, और बाइबल को सर्वोच्च अधिकार नहीं देते।

► पासबानों और शिक्षकों के लेखन का उचित उपयोग क्या है?

एडवेंटिस्टों का ध्यान अंत समय की भविष्यद्वाणी पर है, और उनका नाम प्रभु के आगमन को दर्शाता है। वे बाइबल के अंत समय की भविष्यद्वाणी की विस्तृत व्याख्या पर जोर देते हैं, जिसमें वचन के कई अस्पष्ट अंश सम्मलित हैं। एडवेंटिस्ट अपनी आधुनिक सेवकाई में दर्शन और चमत्कारों की भूमिका पर जोर देते हैं।

**सातवें दिन का मुद्दा**

यहूदियों की तरह एडवेंटिस्ट लोग भी अपना सब्त शुक्रवार के सूर्यास्त से शुरू करते हैं और शनिवार को सूर्यास्त के समय समाप्त करते हैं।

सेवेंथ डे एडवेंटिस्टों का मानना है कि शनिवार के बजाय रविवार को आराधना करना पशु की छाप है जिसका वर्णन प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में हैं।

***प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में पशु की छाप किसी विशेष दिन में आराधना करने जैसी प्रतीत नहीं होती, प्रकाशितवाक्य 13:16-17 देखें।***

उनका मानना है कि ऐसा समय आएगा जब संसार रविवार की आराधना को अनिवार्य बनाने का प्रयास करेगा और उन लोगों को सताएगा जो शनिवार को सब्त के रूप में पालन करने का प्रयास करते हैं। उनका मानना है कि अभी भी कलीसिया में कुछ सच्चे मसीही हैं जो रविवार को आराधना करते हैं, लेकिन भविष्य में उन्हें शनिवार सब्त की सच्चाई को अपनाना होगा या सच्चाई का विरोध करने पर अपनी आत्मा खोनी होगी। उनका मानना है कि जब संकट आएगा तो सभी सच्चे मसीही शनिवार सब्त के प्रति वफादार रहेंगे, भले ही इसका अर्थ मृत्यु हो, और जो कोई भी रविवार को प्रभु के दिन के रूप में मनाता है वह मसीही नहीं है।

---

[38]Ellen White, *Testimonies*, खंड 5, 664-665

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में इसका कोई संकेत नहीं कि सप्ताह का कोई दिन निश्चित हो। इसके बजाय, मुद्दा एक ऐसे व्यक्ति की आराधना करना है जो परमेश्वर नहीं है।

एडवेंटिस्टों के विश्वासों के निहितार्थों पर विचार करें। यदि वे सही हैं, तो लगभग सभी मसीही कलीसियायें पहली शताब्दी से ही गलत रही हैं। लाखों ईश्वरीय, आत्मिक मसीहियों में से लगभग किसी को भी यह एहसास नहीं हुआ कि वे "पशु की छाप," का अनुसरण कर रहे थे, और जाहिर है कि परमेश्वर ने उन्हें यह कभी दिखाया भी नहीं। यह कोई छोटा सिद्धांत नहीं है जिसका पालन नही किया गया, बल्कि इतना महत्वपूर्ण है कि एडवेंटिस्टों के अनुसार, यदि कोई गलत है तो वो अंत के दिनों में अपनी आत्मा खो देगा।

संसार के हर देश में मसीहियों के लिए रविवार आराधना का दिन है। संसार भर में लाखों मसीही परमेश्वर की आराधना करने और उनके वचन को सुनने के लिए इकट्ठा होते हैं। वे उनके प्रेम और अनुग्रह की गवाही देते हैं और उनकी सेवा करने के लिए प्रतिबद्ध होते हैं। उनमें से लाखों लोग परमेश्वर के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के लिए गंभीर सताव सहते हैं। क्या हम वास्तव में यह मानते हैं कि वे सब शैतानी सिद्धांत का पालन कर रहे हैं और अगर वे शनिवार के सब्त के बारे में आश्वस्त नहीं हैं तो किसी दिन अपनी आत्मा खो देंगे?

► उन सभी ईश्वरीय उदाहरणों के बारे में सोचें जो आपके जीवन के लिए आशीष का कारण रहे हैं। क्या यह मानना संभव है कि जब तक कि वे इस मुद्दे पर अपना मन नहीं बदल लेते तो वो सब व्यर्थ होंगे?

एडवेंटिस्टों का दावा है कि रविवार की आराधना की शुरुआत 325 ई. में नाइसिया की परिषद से हुई थी। सच तो यह है कि परिषद के निर्णयों ने कोई नया सिद्धांत नहीं बनाया। वे बस उन सिद्धांतों की स्थापना कर रहे थे जिनके बारे में वे मानते थे कि वे प्रेरितों से थे।

> "प्रभु के दिन में, एक साथ इकट्ठे होकर रोटी तोड़ें,
> धन्यवाद दें, लेकिन पहले
> अपने पापों को स्वीकार करें ताकि
> आपका बलिदान शुद्ध हो।"
> –डिडेचे
> (दूसरी सदी के चर्च से)

विश्वासियों ने रविवार को प्रभु के दिन के रूप में मनाना इतना पहले से शुरू कर दिया कि हम इसकी शुरुआत की तारीख नहीं जान सकते। *डिडेचे* को चर्च की दूसरी सदी की शुरुआत में लिखा गया था, लेकिन यह पहली सदी की परंपराओं और शिक्षाओं का प्रतिनिधित्व करता है। यह प्रेरितों की शिक्षा का सारांश है। इसका प्रयोग हर जगह कलीसियाओं में किया जाता था। *डिडेचे* बताती है कि मसीहियों को प्रभु के दिन प्रभु भोज के लिए मिलना चाहिए। यह लेखन कुछ नया सिखाने का प्रयास नहीं कर रहा था, बल्कि स्थापित सिद्धांत की समीक्षा कर रहा था, जिसका अर्थ है कि यह प्रथा पहले से ही आम थी, और अधिकांश मसीही पहले से ही जानते थे कि यह प्रेरितों का सिद्धांत था।

बरनबास की पत्री पहली सदी के अंत में लिखी गई थी। यह वचन नहीं है, लेकिन कलीसियाओं में आराधना सामग्री के रूप में इसका प्रयोग किया जाता था। इसमें रविवार को “आठवां दिन” कहा गया है, वह दिन जब यीशु मृतकों में से जी उठे थे। इसमें कहा गया है कि मसीही आठवें दिन का उत्सव मनाते हैं।

हमें बाइबल में ऐसा कोई स्थान नहीं मिलता जहाँ यह बताया गया हो कि सब्त का दिन बदलकर रविवार कर दिया गया है। इसके बजाय हमें यह आदेश मिलता है कि सब्त के पालन के विषय में किसी व्यक्ति पर दोष नहीं लगाया जाना चाहिए (कुलुस्सियों 2:16-

17, रोमियों 14:5-6)। हम यह भी पाते हैं कि नये नियम के मसीहियों को रविवार को भेंट चढ़ाना होता था (1 कुरिन्थियों 16:1-2), वे रविवार को सेवाओं के लिए मिलते (प्रेरितों 20:7), और वे रविवार को प्रभु का दिन कहते थे (प्रकाशितवाक्य 1:10)।

मसीहियों के लिए यहूदी सब्त अनिवार्य नहीं है, लेकिन विश्राम दिन का सिद्धांत हर काल में एक सृष्टि सिद्धांत है। इसलिए, एक मसीही को रविवार को काम करने या व्यवसाय से बचना चाहिए और इसके बजाय विश्राम और परमेश्वर की आराधना करनी चाहिए।

**सेवेंथ डे एड्वैंटिस्ट के मुद्दों का सारांश**

1. प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में इसका कोई संकेत नहीं है कि "पशु की छाप" के अनुसार सप्ताह का कोई दिन उपासना के लिए निश्चित हो।
2. यह मानना अवास्तविक है कि सभी समय और स्थानों में लगभग सभी मसीही एक ऐसे सिद्धांत पर गलत रहे हैं जिसके कारण उन्हें अपनी आत्मा खोनी पड़े।
3. बाइबल हमें बताती है कि सब्त के पालन के बारे में दूसरों पर दोष न लगाएँ।
4. रविवार को उपासना करना, पहली सदी के प्रेरितों के सिद्धान्त में ही स्थापित हो चुका था।
5. नये नियम के विश्वासी रविवार को मिलते थे और इसे प्रभु का दिन कहते थे।

► अब वापस जाएं और ***बोल्ड और इटैलिक किए गए*** पाठ और प्रत्येक पवित्रशास्त्र को पढ़ें।

**सुसमाचार प्रसार/*सिद्धान्त की हस्तपुस्तिका* का उपयोग करना**

हमें यह नहीं कहना चाहिए कि सेवेंथ-डे एडवेंटिस्ट होने के कारण कोई व्यक्ति मसीही नहीं है। यह संभव है कि जो व्यक्ति एडवेंटिस्ट सिद्धांतों पर विश्वास करता है, वह बचा हुआ हो। कुछ एडवेंटिस्टों के साथ संगति करने में समस्या यह नहीं है कि हम उन्हें अस्वीकार करते हैं, वरन यह है कि वे हमें अस्वीकार करते हैं।

हम एडवेंटिस्टों से सहमत हैं कि एक विश्वासी परमेश्वर की आज्ञाकारिता में रहता है। हम उन कलीसियाओं से सहमत नहीं हैं जो यह सिखाते हैं कि चूँकि हम अनुग्रह से बचाए गए हैं इसलिए पाप पर विजय प्राप्त करना महत्वपूर्ण नहीं है।

कुछ एडवेंटिस्ट मानते हैं कि एक व्यक्ति अनुग्रह के बजाय कर्मों से बचाया जाता है। कुछ लोग मानते हैं कि भले ही कोई व्यक्ति बाइबल को समझता हो, या उसका ईमानदारी से पालन करता हो लेकिन अगर वह व्यक्ति पुराने नियम की आवश्यकताओं का पालन नहीं करता तो वह बचाया नहीं गया है। वे एडवेंटिस्ट वचन के सुसमाचार को नहीं समझते हैं। उन एडवेंटिस्टों के लिए, *सिद्धान्त की हस्तपुस्तिका* से निम्नलिखित बिंदुओं का उपयोग करें:

(9) उद्धार केवल मसीह के प्रायश्चित से ही है।

(11) हम विश्वास के द्वारा उद्धार पाते हैं।

(12) हमें उद्धार का व्यक्तिगत आश्वासन मिल सकता है।

आप सब्त के मुद्दे पर इस पाठ "सेवेंथ डे एड्वैंटिस्ट के मुद्दे" के अनुभागों से अपना पक्ष रख सकते हैं।

अगर कोई एडवेंटिस्ट सच में मानता है कि बाइबल की शिक्षाएँ किसी अन्य प्रकाशन के बिना उद्धार के लिए पर्याप्त हैं, तो यह अच्छा है। अगर कोई एडवेंटिस्ट सोचता है कि एलेन व्हाइट जैसे अन्य प्रकाशन आवश्यक हैं, तो आपको उसे *सिद्धान्त की हस्तपुस्तिका* में संदर्भित वचन दिखाना चाहिए,

(1) बाइबल धर्मसिद्धान्त के लिए पर्याप्त है।

## एक गवाही

बेन्जामिन 12 साल तक सेवेंथ-डे एडवेंटिस्ट के सदस्य रहे। उन्होंने उनके सिद्धांतों का अध्ययन किया और एलेन व्हाइट के लेखन को पढ़ा। उनकी मुख्य चिंता यह जानना था कि एक व्यक्ति कैसे बचाया और पवित्र किया जाता है। उनका कहना है कि एडवेंटिस्ट सिद्धांत यह सिखाता है कि हम आज्ञाओं का पालन करके बचाए जाते हैं। उन्होंने गलातियों 5:4 पढ़ा, जिसमें कहा गया है कि अगर हम व्यवस्था के द्वारा न्यायोचित होने का प्रयास कर रहे हैं तो हमारे पास मसीह नहीं है। उन्होंने कहा कि एडवेंटिस्ट यह भी कहते प्रतीत होते हैं कि अंतिम दिनों में सुसमाचार बदल जाएगा, और भले ही ईमानदार लोग पहले सब्त का पालन किए बिना बचाए गए हों परंतु अब जो लोग सही सब्त का पालन नहीं करते हैं, वे बचाए नहीं जा सकते। बेन्जामिन अब मानते हैं कि हमें परमेश्वर की आज्ञा माननी चाहिए, लेकिन उन्होंने एडवेंटिस्टों को इसलिए छोड़ दिया क्योंकि उनका मानना है कि एडवेंटिस्टों के पास कर्मों का सुसमाचार है।

## वचन का अध्ययन – भाग 2

► अब 1 तीमुथियुस 1 को फिर से पढ़ें। प्रत्येक छात्र एक अनुच्छेद लिखे जिसमें इस अंश का संदेश सेवेंथ डे एड्वेंटिस्टों के लिए समझाया गया हो। कुछ छात्र अपनी लिखी बातें साझा कर सकते हैं।

## प्रत्येक पाठ के लिए निर्धारित कार्य

इस धार्मिक समूह के किसी व्यक्ति के सामने सुसमाचार प्रस्तुत करने का अवसर ढूँढ़ना याद रखें। अपने सहपाठियों के साथ हुई बातचीत के बारे में बताने के लिए तैयार रहें। अपना 2-पृष्ठ वाला प्रतिवेदन लिखकर अपनी कक्षा के अगुवे को सौंप दें।

# पाठ 17
# रोमन कैथोलिकवाद को समझना

## पहली मुलाकात

अपने बचपन में कातरीना प्रार्थना करती थी कि परमेश्वर उसे ऐसी कलीसिया में ले जाए जहाँ उसे स्वीकार किया जाए। एक जवान के रूप में वह प्रभु भोज के लिए कैथोलिक कलीसिया में गई। रोमन कैथोलिक रीति-रिवाजों में से कई उसे विचित्र लगे। उसे यह तथ्य अच्छा लगा आया कि वे समूचे संसार में एक ही तरह की आराधना रीति का पालन करते हैं। उसे लगने लगा कि यह एक अद्भुत आश्चर्यकर्म है कि हर बार प्रभु भोज यीशु की देह और लहू बन जाता है, ताकि लोग यीशु से जुड़ सकें।

## वचन का अध्ययन – भाग 1

► तीतुस 2 को ऊँची आवाज में मिलकर पढ़ें। प्रत्येक छात्र एक अनुच्छेद लिखे जो इस पवित्रशास्त्र के अंश का सारांश प्रस्तुत करे। यह अंश हमें मसीही जीवन जीने के बारे में क्या बताता है? प्रत्येक छात्र कथनों की एक सूची बनाए। जो आपने लिखा है उस पर सामूहिक रूप से चर्चा करें।

## रोमन कैथोलिकवाद

### रोमन कैथोलिकवाद की उत्पत्ति

रोमन कैथोलिकवाद के विश्वव्यापी अगुवे को पोप कहा जाता है। रोमन कैथोलिक कलीसिया का मुख्यालय रोम में स्थित है।

*कैथोलिक* शब्द का अर्थ है "सार्वभौमिक" या "पूर्ण।" रोमन कैथोलिक कलीसिया परमेश्वर की पूर्ण कलीसिया होने और अन्य सभी कलीसियाओं के झूठे होने का दावा करती है।

> "कलीसिया प्रेरिताई वाली होती है, क्योंकि यह अभी भी प्रेरितों के लेखन में जीवित प्रेरितीय अधिकार के द्वारा शासित है, और वही अधिकार मानक भी है।"
>
> - विलियम पोप
>
> मसीही ईशविज्ञान का सारसंग्रह - भाग 3

कैथोलिकवाद मसीह के द्वारा स्थापित मूल कलीसिया होने का दावा करता है। कैथोलिक लोगों का दावा है कि पतरस पहला पोप था, और पतरस का उत्तराधिकारी कैथोलिक कलीसिया के पोप के रूप में हमेशा रहा है। उनका मानना है कि उनके अगुवों का समूह जिसे "कार्डिनल" कहा जाता है, प्रेरितों के उत्तराधिकारी हैं और उनके पास मूल प्रेरितों के समान ही अधिकार हैं।

रोमन कैथोलिकवाद मान्यताओं और धार्मिक समारोहों में ईस्टर्न रूढ़िवादी के समान ही है।

**प्रभाव**

रोमन कैथोलिक कलीसिया एक विश्वव्यापी संगठन है। सन् 2021 तक, इसके 137 करोड़ से अधिक कैथोलिक सदस्य हैं।[39] कई देशों की आबादी के अधिकांश लोग कैथोलिक हैं। उन देशों में, कैथोलिक धर्म उनकी संस्कृति का हिस्सा है। ऐसे लाखों लोग हैं जो कैथोलिक होने का दावा करते हैं परन्तु धार्मिक गतिविधियों में कभी-कभार ही भाग लेते हैं।

कैथोलिक कलीसिया बहुत धनी है और राजनीतिक रूप से शक्तिशाली है। पिछली शताब्दियों में, सेनाओं का उपयोग करके इस कलीसिया ने कई बार राष्ट्रों को इस कलीसिया के अधीन होने को मजबूर किया। कैथोलिकवाद द्वारा नियंत्रित देशों में, बहुत से लोगों को इसलिए प्रताड़ित किया गया और मार डाला गया क्योंकि वे कैथोलिक सिद्धान्तों से सहमत नहीं थे।

► यह प्रश्न निम्नलिखित अनुभाग का परिचय देता है। आपने रोमन कैथोलिकवाद की धार्मिक प्रथाओं के बारे में क्या देखा है?

**रोमन कैथोलिकवाद की मान्यताएँ**

कैथोलिकवाद की आराधना की शैली बहुत औपचारिक है। कैथोलिक लोगों के पास संसारभर में ऐसे कई बड़े-बड़े गिरजाघर हैं जो अपनी शानदार वास्तुकला के लिए जाने जाते हैं। उन गिरजाघरों को इतिहास के पवित्र लोगों की तस्वीरों और मूर्तियों से सजाया गया है। उनके याजकों के पास आमतौर पर विशेष वस्त्र होते हैं। आराधना की गतिविधियाँ अधिकांश रूप से याजकों के द्वारा की जाती हैं, जिसमें मण्डली की भागीदारी बहुत कम होती है।

> "परमेश्वर की पवित्रता की मौलिक आवश्यकता को पूरा करने के लिए मसीह ने हमारे स्थान पर कष्ट सहा, ताकि दोषियों की क्षमा करने और मेल-मिलाप करने में आने वाली बाधा को दूर किया जा सके। परमेश्वर की पवित्रता की जो माँग थी, उसे परमेश्वर के प्रेम ने क्रूस पर प्रदान किया।"
>
> - थॉमस ओडेन
>
> जीवन का वचन

कई संस्कृतियों के लोग अपने पिछले धर्म की धार्मिक प्रथाओं को बनाए रखते हुए कैथोलिक बन गए। पहले मूर्तिपूजक मूर्तियों को कभी-कभी कैथोलिक पवित्र लोगों के नाम दिए जाते थे। कैथोलिकवाद के समारोह मूर्तिपूजक धर्म या प्रकृति धर्म के समारोहों के साथ मिश्रित होते थे।

परमेश्वर के बारे में कैथोलिक कलीसिया की मान्यताएँ बुनियादी मसीही सिद्धान्तों जैसे कि त्रिएकत्व, ईश्वरत्व, मृत्यु, गाड़ने और मसीह के शारीरिक पुनरुत्थान और पवित्र आत्मा के ईश्वरत्व के अनुरूप हैं।

कैथोलिक कलीसिया दावा करती है कि इस कलीसिया के पास बाइबल का अर्थ समझाने का अधिकार है, भले ही इसकी कलीसिया की व्याख्या बाइबल में कही गई बातों से अलग क्यों न हो। कैथोलिक लोगों ने अपनी बाइबल में अपोक्रिफा के नाम से जानी जाने वाली अन्य रचनाओं को भी (पवित्रशास्त्र के रूप में) शामिल किया है जिन्हें अन्य कलीसियाओं ने बाइबल में शामिल नहीं किया है।

► बाइबल के सम्बन्ध में कलीसिया के अधिकार के बारे में सही दृष्टिकोण क्या है?

---

[39] "The Numeric State of the Catholic Church Up to 2023," https://zenit.org/2023/03/06/the-numeric-state-of-the-catholic-church-up-to-2023/, 11 अप्रैल, 2023 को एक्सेस किया गया।

कैथोलिक लोग मानते हैं कि पोप इस पृथ्वी पर मसीह का प्रतिनिधि है। उनका मानना है कि जब वह धर्म के बारे में आधिकारिक निर्णय लेता है, तो वह कोई गलती नहीं कर सकता। यह अधिकार बाइबल से नहीं, बल्कि उनकी परम्परा से आता है। अतीत में कई पोप दुष्ट व्यक्ति, यहाँ तक कि हत्या के भी दोषी रहे हैं।

ईस्टर्न रूढ़िवादी और रोमन कैथोलिकवाद दोनों ही पवित्र लोगों के रूप में पहचाने जाने के लिए ऐतिहासिक लोगों का चयन करते हैं। कई पवित्र लोगों की उपाधि कलीसिया में देवताओं के समान है। सहायता के लिए लोग उनसे प्रार्थना करते हैं। और माना जाता है कि कुछ पवित्र लोग जीवन के कुछ पहलुओं या कुछ व्यवसायों में रुचि रखते हैं, इसलिए नाविकों, किसानों और शिक्षकों के पास विशेष पवित्र लोग होते हैं, जिन्हें संरक्षक पवित्र लोग कहा जाता है, जिनसे वे प्रार्थना करते हैं। कुछ जगहों पर, पवित्र लोगों ने मूर्तिपूजक देवताओं की जगह ले ली। लोग परमेश्वर और यहाँ तक कि यीशु को भी उनसे दूर और बेपरवाह मानते हैं, इसलिए उनके बजाय वे पवित्र लोगों से प्रार्थना करते हैं।

***इब्रानियों 4:16 में, परमेश्वर हमें विश्वासपूर्वक प्रार्थना में उसके पास आने के लिए आमंत्रित करता है। हमारे पास खुद में कोई योग्यता नहीं है, परन्तु यीशु ने हमें प्रायश्चित के द्वारा परमेश्वर की उपस्थिति तक पहुँच प्रदान की है, इफिसियों 2:13।***

रोमन कैथोलिक लोगों पर मूर्तिपूजा का आरोप लगाया जाता है क्योंकि वे पवित्र लोगों की तस्वीरों और मूर्तियों का उपयोग करके उनसे प्रार्थना करते हैं।

***प्रार्थना और आराधना के लिए एक चित्र बनाना ही मूर्तिपूजा है। बाइबल मूर्तिपूजा के लिए मना करती है, निर्गमन 20:4-5 और 1 यूहन्ना 5:21 देखें। जब एक पापी पश्चाताप करके परमेश्वर के साथ रिश्ते में आता है तो वह मूर्तियों को ठुकरा देता है, 1 थिस्सलुनीकियों 1:9 देखें। बाइबल कभी नहीं यह बताती कि मसीही विश्वासी परमेश्वर के अलावा किसी और से प्रार्थना करे या आराधना के लिए एक चित्र का उपयोग करे।***

पवित्र लोगों के द्वारा उपयोग की जाने वाली वस्तुओं को आदर देने के लिए कलीसियाओं में रखा जाता है। कभी-कभी दांतों या हड्डियों जैसे शारीरिक अवशेषों को कलीसिया में रखा जाता है। लोग घुटनों के बल बैठकर उन हड्डियों के द्वारा दर्शाए गए पवित्र लोगों से प्रार्थना करने आते हैं।

रोमन कैथोलिक पासबानों को विवाह करने की अनुमति नहीं है।

मरियम (यीशु की माता) को विशेष रूप से आदर दिया जाता है। **निष्कलंक गर्भाधान** का सिद्धान्त सिखाता है कि मरियम पापी स्वभाव के बिना जन्मी थी और उसने कभी पाप नहीं किया था। कई कैथोलिक लोग परमेश्वर से अधिक मरियम से प्रार्थना करते हैं। उन्हें लगता है कि यीशु मरियम की बात सुनेगा और उससे प्रभावित होगा। उपासक और मसीह के बीच मरियम ही मध्यस्थ बन गई है।

***1 तीमुथियुस 2:5 के अनुसार, परमेश्वर और मनुष्य के बीच एकमात्र मध्यस्थ यीशु ही है। यीशु में पूरी करुणा मिलती है, और हमें किसी ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता नहीं है जो हमारी परवाह करने के लिए उसे प्रभावित करे, यूहन्ना 11:35 देखें।***

► मरियम के बारे में सही मसीह दृष्टिकोण क्या है?

कैथोलिकवाद और ईस्टर्न रूढ़िवादी दोनों ही **तत्व परिवर्तन (transubstantiation)** का सिद्धान्त सिखाते हैं। यह इस बात की मान्यता है कि प्रभु भोज के दौरान, रोटी और दाखरस यीशु की वास्तविक देह और लहू में बदल जाते हैं, ताकि उद्धार पाने के लिए उपासक उन्हें ग्रहण कर सके। इस कारण, वे मानते हैं कि रोटी और दाखरस पवित्र हैं।

रोमन कैथोलिक लोग मानते हैं कि उद्धार केवल मसीह के प्रायश्चित पर ही निर्भर नहीं करता, बल्कि यह कैथोलिक कलीसिया का हिस्सा बनने, प्रभु-भोज ग्रहण करने और अच्छे काम करने पर भी निर्भर करता है।

"एक सच्चा प्रोटेस्टेंट परमेश्वर पर विश्वास करता है, उसकी दया पर पूरा भरोसा रखता है, पुत्र जैसी श्रद्धा रखते हुए उसका भय मानता है, और अपने सम्पूर्ण प्राण से उससे प्रेम करता है। वह आत्मा और सच्चाई से परमेश्वर की आराधना करता है, हर बात में उसका धन्यवाद करता है; हर समय और हर जगह अपने हृदय और होठों से उसे पुकारता है; उसके पवित्र नाम और वचन का सम्मान करता है, और अपने जीवन के सब दिनों में उसकी सच्ची सेवा करता है।"
"मैं सभी आमतौर पर शपथ खाने वालों, सब्त तोड़ने वालों, पियक्कड़ों, सभी वेश्यागामियों, झूठे लोगों, धोखेबाजों, जबरन वसूली करने वालों को; संक्षेप में, उन सभी को अस्वीकार करता हूँ जो खुलेआम पाप करते हैं। ये कोई प्रोटेस्टेंट नहीं हैं; ये मसीही विश्वासी तो बिलकुल भी नहीं हैं।"
- जॉन वेस्ली
"एक रोमन कैथोलिक व्यक्ति को लिखा गया पत्र"

कैथोलिक लोग यह सुसमाचार संदेश नहीं देते कि पापी अपने पापों का पश्चाताप कर सकता है, मसीह पर अपना विश्वास रख सकता है और उद्धार का आश्वासन प्राप्त कर सकता है। इसके बजाय, एक व्यक्ति को पास्टर के निर्देशों का ईमानदारी से पालन करना चाहिए और उद्धार की आशा करनी चाहिए।

कई कैथोलिक लोग खुले पाप में जीवन बिताते रहते हैं। वे यह अपेक्षा करते हैं कि वे मरने तक कैथोलिक ही बने रहेंगे, फिर शुद्धिकरण में समय बिताएँगे, और उसके बाद स्वर्ग जाएँगे।

***बाइबल कहती है कि एक व्यक्ति के मसीही विश्वासी होने का प्रमाण यह है कि वह धर्मी जीवन जीता है, 1 यूहन्ना 3:7-8 देखें।***

### शुद्धिकरण और क्षमादान

रोमन कैथोलिक लोग मानते हैं कि मृत्यु के बाद स्वर्ग में प्रवेश करने से पहले व्यक्ति को पापों के लिए दण्ड भुगतना चाहिए। इसे शुद्धिकरण का सिद्धान्त कहा जाता है। उनका मानना है कि पाप को दण्ड मिलना चाहिए, भले ही उसे क्षमा कर दिया गया हो। इस कारण, एक ईमानदार कैथोलिक व्यक्ति भी अपने द्वारा किए गए पापों के लिए शुद्धिकरण में कुछ समय बिताने की अपेक्षा करता है। लापरवाह पापी यह अपेक्षा करते हैं कि वे मृत्यु के बाद शुद्धिकरण में समय बिताएँगे, और उसके बाद स्वर्ग में प्रवेश करने की अनुमति पाएँगे। उनका मानना है कि शुद्धिकरण की आग जीवन में अनुभव की गई किसी भी पीड़ा से अधिक पीड़ा देती है।

***यीशु ने इसलिए दु:ख उठाया ताकि हमें पाप के लिए दण्ड न मिले, यशायाह 53:5 देखें। कैथोलिक लोग इस बात का इन्कार करते हैं कि मसीह का बलिदान हमें क्षमा किए जाने और पाप के लिए दण्ड न मिलने के लिए पर्याप्त था।***

उनका मानना है कि मसीही विश्वासियों को मरे हुए लोगों के लिए प्रार्थना करनी चाहिए और उनके लिए कलीसिया को चढ़ावा देना चाहिए, ताकि परमेश्वर उनके पापों को जल्दी से जल्दी क्षमा कर दे और उन्हें शुद्धिकरण से बाहर निकाल दे।

***बाइबल हमें कहीं भी यह नहीं बताती है कि हमें मरे हुए लोगों के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। इसके बजाय, इसका तात्पर्य है कि पापियों के लिए जो उद्धार के बिना मर गए हैं, कुछ भी नहीं किया जा सकता है, लूका 16:23-26 देखें।***

कैथोलिक लोग मानते हैं कि कलीसिया के पास मसीह और पवित्र लोगों की ओर से अतिरिक्त पुण्य का संचय है। पोप लोगों को क्षमा पाने में सहायता करने के लिए यह पुण्य दे सकता है। यह पुण्य जीवित या मरे हुए लोगों को दिया जा सकता है जो शुद्धिकरण में हैं।

***यह विचार कि पवित्र लोगों से मिला पुण्य पापियों की सहायता करने के लिए मसीह से पुण्य में जोड़ा जाता है, एक भयानक सिद्धान्त है। मानवीय कर्म क्षमा के लिए कोई पुण्य नहीं कमाते, इफिसियों 2:8-9 देखें। एक विश्वासी को किसी के कार्यों से नहीं, बल्कि अनुग्रह के आधार पर पूरी तरह से क्षमा किया जाता है, रोमियों 4:5-8 देखें।***

► शुद्धिकरण का सिद्धान्त उन लोगों की जीवनशैली को कैसे प्रभावित करता है जो इस पर विश्वास करते हैं?

कैथोलिकवाद के विशिष्ट सिद्धान्त पवित्रशास्त्र पर निर्भर नहीं हैं। उनका सिद्धान्त अधिकांश रूप से कलीसिया की परम्परा पर आधारित है।

► अब वापस जाएं और ***बोल्ड और इटैलिक किए गए*** पाठ और प्रत्येक पवित्रशास्त्र को पढ़ें।

## सुसमाचार प्रसार/सिद्धान्त की हस्तपुस्तिका का उपयोग करना

रोमन कैथोलिक लोग त्रिएकत्व और मसीह तथा पवित्र आत्मा के ईश्वरत्व के मूलभूत मसीही सत्यों पर विश्वास करते हैं।

ऐसे कई कैथोलिक लोग हैं जिन्होंने उद्धार के लिए मसीह पर अपना विश्वास रखा है, परन्तु कैथोलिकवाद में सुसमाचार का संदेश स्पष्ट नहीं है। कई कैथोलिक लोगों ने पश्चाताप, क्षमा और उद्धार के आश्वासन का अनुभव नहीं किया है, और वे परमेश्वर के साथ रिश्ते में नहीं रह रहे हैं। इस कारण, एक मसीही विश्वासी के लिए सुसमाचार साझा करना महत्वपूर्ण है। कैथोलिकवाद में उपेक्षित सुसमाचार के आवश्यक तत्वों को *सिद्धान्त की हस्तपुस्तिका* से निम्नलिखित खंडों से साबित किया जा सकता है:

(9) उद्धार केवल मसीह के प्रायश्चित से ही है।

(10) केवल परमेश्वर की ही उपासना करनी चाहिए।

(11) हम विश्वास के द्वारा उद्धार पाते हैं।

(12) हमें उद्धार का व्यक्तिगत आश्वासन मिल सकता है।

क्योंकि रोमन कैथोलिक लोगों ने ऐसी परम्पराएँ जोड़ी हैं जिन्हें वे मसीही धर्म के लिए आवश्यक मानते हैं, इसलिए एक मसीही विश्वासी को उन्हें *सिद्धान्त की हस्तपुस्तिका* में उद्धृत पवित्रशास्त्र दिखाने चाहिए

(1) बाइबल धर्मसिद्धान्त के लिए पर्याप्त है।

## गवाही

कई वर्षों के अध्ययन के बाद बार्थोलोम्यू रोमन कैथोलिक पासबान बन गए। उन्होंने कैलिफ़ोर्निया में एक पैरिश पासबान के रूप में सेवा की और बाद में नौसेना में पासबान के रूप में सेवा की। उनकी माता एक सुसमाचार सुनानेवाली मसीही विश्वासिनी बन गईं। उन्होंने अपनी माता में एक अद्भुत परिवर्तन देखा और उनके हृदय परिवर्तन के बारे में उनसे कई बार बातचीत की। उनकी माता ने उन्हें अपने विश्वासों के लिए अंतिम अधिकार के रूप में बाइबल पर निर्भर रहने के लिए राजी किया। उन्हें एहसास होने लगा कि कैथोलिकवाद के कई महत्वपूर्ण सिद्धांत बाइबल के विपरीत हैं। उन्होंने रोमन कैथोलिक कलीसिया छोड़ दी। और अंत में उन्हें समझ में आ गया कि उद्धार कार्यों या कलीसिया के संस्कारों से नहीं, बल्कि मसीह के कार्य के माध्यम से होता है।

## वचन का अध्ययन – भाग 2

► अब तीतुस 2 को फिर से पढ़ें। प्रत्येक छात्र एक अनुच्छेद लिखे जिसमें इस अंश का संदेश रोमन कैथोलिकों के लिए समझाया गया हो। कुछ छात्र अपनी लिखी बातें साझा कर सकते हैं।

## प्रत्येक पाठ के लिए निर्धारित कार्य

इस धार्मिक समूह के किसी व्यक्ति के सामने सुसमाचार प्रस्तुत करने का अवसर ढूँढ़ना याद रखें। अपने सहपाठियों के साथ हुई बातचीत के बारे में बताने के लिए तैयार रहें। अपना 2-पृष्ठ वाला प्रतिवेदन लिखकर अपनी कक्षा के अगुवे को सौंप दें।

# पाठ 18
# ईस्टर्न रूढ़िवादी धर्म को समझना

## पहली मुलाकात

जैसे-जैसे निकोलस ईस्टर्न रूढ़िवाद से परिचित होते गए, वे इस बात से प्रभावित हुए कि कैसे उन्होंने कई देशों में मुसलमानों और कम्युनिस्टों (साम्यवादियों) से उत्पीड़न सहा है। उनके नायक बड़ी कलीसिया के पासबान या संगीत के अगुवे नहीं हैं। उनके नायक शहीद हैं। निकोलस के विचार से यदि हर जगह उत्पीड़न बहुत ही बुरा हो जाए, तो ईस्टर्न रूढ़िवादी विश्वासी ही वे लोग हैं जो इसे सहेंगे।

## वचन का अध्ययन – भाग 1

► 1 थिस्सलुनीकियों 1 को ऊँची आवाज में मिलकर पढ़ें। प्रत्येक छात्र एक अनुच्छेद लिखे जो इस पवित्रशास्त्र के अंश का सारांश प्रस्तुत करे। जब ये लोग मसीही विश्वासी बने तो उस समय क्या हुआ प्रत्येक छात्र कथनों की एक सूची बनाए। जो आपने लिखा है उस पर सामूहिक रूप से चर्चा करें।

## ईस्टर्न रूढ़िवाद

### ईस्टर्न रूढ़िवाद का परिचय

*रूढ़िवाद* शब्द यूनानी भाषा के शब्दों से आया है जिसका अर्थ है "सही आराधना।" ईस्टर्न रूढ़िवाद कलीसिया का मानना है कि वही सच्ची कलीसिया है जिसके सिद्धान्त और प्रथाएँ परमेश्वर की सही आराधना प्रदान करते हैं।

ईस्टर्न रूढ़िवाद और रोमन कैथोलिकवाद आधिकारिक तौर पर सन् 1054 में अलग हो गए। इनमें से प्रत्येक का दावा है कि वे ही यीशु और प्रेरितों के द्वारा स्थापित मूल कलीसिया हैं। इनमें से प्रत्येक का दावा है कि वे ही पृथ्वी पर परमेश्वर की कलीसिया हैं और प्रारम्भिक मसीही विश्वासियों की परम्परा के आधार पर सच्चे सिद्धान्त वाली हैं। वे कई समान सिद्धान्तों पर विश्वास करते हैं। उनकी आराधना उन लोगों को बहुत अच्छी लगेगी जो उनसे परिचित नहीं हैं।

ईस्टर्न रूढ़िवाद में 15 स्वयं-शासित कलीसियाई संगठन पाए जाते हैं। वे भौगोलिक रूप से विभाजित हैं। कुछ देशों में यह कलीसिया उस राष्ट्र के नाम का उपयोग कलीसिया का नाम बनाने के लिए करती है जैसे कि रूसी रूढ़िवादी कलीसिया या सर्बियाई रूढ़िवादी कलीसिया। इन 15 में से बाकी में अन्ताकिया की यूनानी रूढ़िवादी कलीसिया, रोमानियाई रूढ़िवादी कलीसिया और साइप्रस की कलीसिया शामिल हैं।

प्रत्येक कलीसियाई संगठन पर एक कुलपति या आर्कबिशप का शासन होता है। कॉन्स्टेंटिनोपल के कुलपति को 15 अगुवों में सर्वोच्च पद माना जाता है। कॉन्स्टेंटिनोपल का प्राचीन नगर अब इस्तांबुल, तुर्की है। कॉन्स्टेंटिनोपल के कुलपति के पास अन्य कलीसियाई संगठनों पर अधिकार नहीं है, परन्तु वे सभी सर्वोच्च के रूप में उनका आदर करते हैं।

ईस्टर्न रूढ़िवाद के विश्वासियों की संख्या का अनुमान 22.5 करोड़ से 30 करोड़ तक है। यह रोमन कैथोलिकवाद के बाद संसार का दूसरा सबसे बड़ा मसीही संगठन है।

पूर्वी यूरोप के कई देशों में, अधिकांश आबादी खुद को ईस्टर्न रूढ़िवादी मानती है, और मध्य पूर्व के कई देशों में भी बड़ी संख्या में ईस्टर्न रूढ़िवादी विश्वासी पाए जाते हैं।

► आप किस ईस्टर्न रूढ़िवादी कलीसिया से परिचित हैं?

## ईस्टर्न रूढ़िवाद की मान्यताएँ

> "अब जब यीशु मसीह की कलीसिया प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नींव पर बनी है, और यीशु मसीह कोने का मुख्य पत्थर है, तो इस मसीही कलीसिया के सिद्धान्तों को पवित्रशास्त्र में खोजा जाना चाहिए।"
> - एडम क्लार्क
> मसीही ईशविज्ञान

ईस्टर्न रूढ़िवादी कलीसिया परमेश्वर के बारे में बुनियादी मसीही सिद्धान्तों को मानती है, जैसे कि त्रिएकत्व और मसीह तथा पवित्र आत्मा का ईश्वरत्व।

ईस्टर्न रूढ़िवाद बहुत अधिक कलीसिया की परम्परा पर निर्भर करता है। किसी सिद्धान्त को साबित करने के लिए, उनके अगुवे बाइबल से उद्धरण देने के साथ-साथ प्रारम्भिक कलीसिया के अगुवों से भी उद्धरण देने की सम्भावना रखते हैं। वे सिखाते हैं कि उनके सिद्धान्त का अधिकार बाइबल है, परन्तु बाइबल की व्याख्या कलीसिया के द्वारा की जानी चाहिए।

रूढ़िवाद ने विश्वासों और प्रथाओं की एक जटिल प्रणाली विकसित की है जो परम्परा पर आधारित है। इस कलीसिया का दावा है कि उसके पास यह सिखाने का अधिकार है कि उद्धार के लिए कौन सी बात आवश्यक है, भले ही वह पवित्रशास्त्र में सिखाई गई बातों से परे हो। ईस्टर्न रूढ़िवादी अनुयायियों का मानना है कि उनकी परम्पराएँ बाइबल का खंडन नहीं करतीं।[40]

रूढ़िवादी कलीसियाओं की आराधना शैली बहुत औपचारिक होती है। संसारभर में उनके पास ऐसे कई बड़े-बड़े गिरजाघर हैं जो अपनी शानदार वास्तुकला के लिए जाने जाते हैं। उन गिरजाघरों को इतिहास के पवित्र लोगों की तस्वीरों और मूर्तियों से सजाया

[40] Pixabay के Freddy Torres द्वारा लिया गया चित्र, https://pixabay.com/photos/architecture-church-kiev-religion-2166264/ से प्राप्त किया गया।

गया है। उनके याजकों के पास अक्सर विशेष वस्त्र होते हैं। आराधना की गतिविधियाँ अधिकांश रूप से याजकों के द्वारा की जाती हैं, जिसमें मण्डली की बहुत कम भागीदारी होती है।

कई संस्कृतियों के लोग अपने पिछले धर्म की धार्मिक प्रथाओं को बनाए रखते हुए रूढ़िवादी बन गए। पहले मूर्तिपूजक मूर्तियों को मसीही पवित्र लोगों के नाम दिए जाते थे। इस कलीसिया के समारोहों को मूर्तिपूजक धर्म या प्रकृति धर्म या यहाँ तक कि जादू-टोने के समारोहों के साथ मिला दिया गया था।

कई रूढ़िवादी अनुयायी परमेश्वर और यहाँ तक कि यीशु को भी अपने से दूर और बेपरवाह मानते हैं, इसलिए उनके बजाय वे पवित्र लोगों से प्रार्थना करते हैं।

***पवित्र आत्मा हमें इस तरह से प्रार्थना करने में सहायता करता है कि परमेश्वर उसे स्वीकार करे, रोमियों 8:26-27 देखें। हमें भरोसा होना चाहिए कि परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं को सुनकर उनका उत्तर देता है। प्रार्थना करने वाले व्यक्ति को यह विश्वास होना चाहिए कि परमेश्वर प्रार्थना का उत्तर देता है, या उस व्यक्ति में परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला विश्वास नहीं है, इब्रानियों 11:6 देखें।***

इन कलीसियाओं में पवित्र लोगों की तस्वीरें और मूर्तियाँ उपलब्ध करवाई जाती हैं ताकि लोग उनसे प्रार्थना कर सकें। पवित्र लोगों के द्वारा उपयोग की जाने वाली वस्तुओं को आदर के लिए इन कलीसियाओं में रखा जाता है। कभी-कभी दांतों या हड्डियों जैसे शारीरिक अवशेषों को कलीसिया में रखा जाता हैं। लोग घुटनों के बल बैठकर उन हड्डियों के द्वारा दर्शाए गए पवित्र लोगों से प्रार्थना करने आते हैं।

► मूर्तिपूजा क्या है? क्या ईस्टर्न रूढ़िवाद की कुछ प्रथाएँ मूर्तिपूजा हैं?

ईस्टर्न रूढ़िवाद में मरियम को विशेष रूप से आदर दिया जाता है। रूढ़िवाद के कई अनुयायी परमेश्वर से अधिक मरियम से प्रार्थना करते हैं। उन्हें लगता है कि यीशु मरियम की बात सुनेगा और उससे प्रभावित होगा। उपासक और मसीह के बीच मरियम ही मध्यस्थ बन गई है। कैथोलिकवाद के विपरीत, ईस्टर्न रूढ़िवाद यह नहीं मानता कि मरियम एक ऐसे मानवीय स्वभाव के साथ जन्मी थी जो बाकी सभी से अलग था और हमेशा पाप से स्वतंत्र थी।

***हर जगह यीशु से प्रार्थना करना मसीही विश्वासियों की पहचान है, 1 कुरिन्थियों 1:2 देखें। मसीही विश्वासी भी परमेश्वर पिता से प्रार्थना करते हैं, 1 पतरस 1:17 देखें। बाइबल पवित्र आत्मा से बातचीत के बारे में भी बात करती है, 2 कुरिन्थियों 13:14 देखें। बाइबल हमें यह कभी नहीं बताती कि हमें परमेश्वर के अलावा मरियम या किसी अन्य व्यक्ति से प्रार्थना करनी चाहिए।***

कैथोलिकवाद और ईस्टर्न रूढ़िवाद दोनों ही **तत्व परिवर्तन (transubstantiation)**, अर्थात् इस विश्वास की शिक्षा देते हैं कि प्रभु भोज के दौरान, रोटी और दाखरस यीशु की वास्तविक देह और लहू में बदल जाते हैं, ताकि उद्धार पाने के लिए उपासक उन्हें ग्रहण कर सके।

***जब यीशु ने चेलों को प्रभु भोज लेना सिखाया, तब वह जीवित भी था और उनके साथ मौजूद भी था, 1 कुरिन्थियों 11:23-25 देखें। इस कारण, जब उसने कहा, "यह मेरी देह है," तो उसका अर्थ था कि रोटी उसकी देह का प्रतीक थी। आज के समय में, प्रभु भोज को उसी तरह माना जाना चाहिए जैसा कि यीशु ने इसे स्थापित किया था।***

रोमन कैथोलिक लोगों के विपरीत, ईस्टर्न रूढ़िवादी कलीसिया के लोग शुद्धिकरण में विश्वास नहीं करते। वे ऐसे पोप में भी विश्वास नहीं करते जिसके पास विश्वव्यापी कलीसिया पर मसीह का अधिकार हो। वे रोमन कैथोलिक पोप को अस्वीकार करते हैं और उनका अपना ऐसा कोई अगुवा नहीं है जिसे वे वैसा ही अधिकार देते हों।

रूढ़िवादी याजकों को विवाह करने की अनुमति है, परन्तु केवल अविवाहित याजक ही बिशप बन सकता है।

ईस्टर्न रूढ़िवाद उद्धार की प्रक्रिया के रूप में ***थियोसिस*** के सिद्धान्त की शिक्षा देता है। *थियोसिस* में एक विश्वासी धीरे-धीरे परमेश्वर की तरह बनने के लिए बदल जाता है, जिसमें पवित्र सिद्धता का उसका ही स्वभाव होता है। यह अनुग्रह और पवित्र आत्मा के कार्य के द्वारा पूरा होता है। यह प्रक्रिया मृत्यु के बाद ही पूरी होती है। ईस्टर्न रूढ़िवादी कलीसिया के लोग कहते हैं कि इस पवित्र सिद्धता को प्राप्त करने में, हम परमेश्वर बन जाते हैं, परन्तु उनका अर्थ यह नहीं है कि हम परमेश्वर की तरह सनातन हैं।

***बाइबल कहती है कि प्रत्येक विश्वासी परमेश्वर के स्वभाव को साझा करता है, 2 पतरस 1:3-4 देखें। हमें उसका स्वभाव प्राप्त करने के लिए मृत्यु के बाद तक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ती है।***

उनका मानना है कि मसीह ने हमारे लिए पाप को पराजित कर दिया है, परन्तु हर एक मसीही विश्वासी को पाप और अशुद्धता पर अपनी व्यक्तिगत् विजय में प्रगति करने के लिए पवित्र आत्मा की सामर्थ्य प्राप्त करनी चाहिए।

> "प्रायश्चित में सभी पाप शामिल हैं, चाहे वे मूल हों या वास्तविक, भूत और भविष्य, बड़े या छोटे, समय या अनन्तकाल में हों।
>
> - थॉमस ओडेन
>
> जीवन का वचन

ईस्टर्न रूढ़िवादी कलीसिया सिखाती है कि एक मसीही विश्वासी को मसीह में धर्मी ठहराया गया है, जिसका अर्थ है कि उस मसीही विश्वासी को उन पापों के लिए क्षमा कर दिया जाता है जो उसने पहले ही किए हैं और अपने जीवन में वास्तव में धर्मी बना दिया जाता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि जब कोई व्यक्ति पाप करना जारी रखता है तो उसे निर्दोष माना जाता है, और इसका अर्थ यह नहीं है कि यदि कोई व्यक्ति पिछले जीवन में वापस जाता है तो वह अभी भी धर्मी ठहराया गया है। मसीही विश्वासी हर दिन धर्मी रूप से जीवन बिताने के लिए पवित्र आत्मा की सामर्थ्य पर निर्भर करता है। यदि कोई व्यक्ति याद रखे कि परमेश्वर उसे उसके अच्छे कामों के कारण नहीं, बल्कि यीशु के कारण स्वीकार करता है तो यह भी अच्छा ईशविज्ञान है।

ईस्टर्न रूढ़िवाद के कई अनुयायी सुसमाचार पर विश्वास करते हैं और परमेश्वर के अनुग्रह का अनुभव करते हैं। हालाँकि, कलीसिया स्पष्ट रूप से इस सुसमाचार संदेश का प्रचार नहीं करती कि एक पापी को अपने पापों का पश्चाताप करना चाहिए और उद्धार का तत्काल आश्वासन प्राप्त करने के लिए मसीह पर अपना विश्वास रखना चाहिए। इस कारण, लाखों रूढ़िवादी सदस्यों में से अधिकांश

धार्मिक रीति-रिवाजों का पालन करते हुए खुले पाप में जीवन बिताना जारी रखते हैं। उनमें से अधिकांश यह नहीं समझते हैं कि उद्धार कैसे पाया जाए।

► ईस्टर्न रूढ़िवादी ईशविज्ञान के बारे में कुछ अच्छी बातें कौन सी हैं?

► अब वापस जाएं और ***बोल्ड और इटैलिक किए गए*** पाठ और प्रत्येक पवित्रशास्त्र को पढ़ें।

## सुसमाचार प्रसार/सिद्धान्त की हस्तपुस्तिका का उपयोग करना

ईस्टर्न रूढ़िवादी कलीसिया त्रिएकत्व और मसीह तथा पवित्र आत्मा के ईश्वरत्व के मूलभूत मसीही सत्यों की शिक्षा देती है।

कुछ ऐसे रूढ़िवादी उपासक हैं जिन्होंने उद्धार के लिए यीशु मसीह पर अपना विश्वास रखा है, परन्तु कलीसिया की शिक्षाओं में सुसमाचार का संदेश स्पष्ट नहीं है। अधिकांश ने पश्चाताप, क्षमा और उद्धार के आश्वासन का अनुभव नहीं किया है, और वे परमेश्वर के साथ रिश्ते में नहीं रह रहे हैं। इस कारण, सुसमाचार साझा करना एक मसीही विश्वासी के लिए महत्वपूर्ण है। रूढ़िवाद में उपेक्षित सुसमाचार की अनिवार्यताओं को *सिद्धान्त की हस्तपुस्तिका* के निम्नलिखित खंडों से सिद्ध किया जा सकता है:

(9) उद्धार केवल मसीह के प्रायश्चित से ही है।

(10) केवल परमेश्वर की ही उपासना करनी चाहिए।

(11) हम विश्वास के द्वारा उद्धार पाते हैं।

(12) हमें उद्धार का व्यक्तिगत आश्वासन मिल सकता है।

क्योंकि ईस्टर्न रूढ़िवाद ने ऐसी परम्पराएँ जोड़ी हैं जिन्हें वे मसीही धर्म के लिए आवश्यक मानते हैं, इसलिए एक मसीही विश्वासी को उन्हें *सिद्धान्त की हस्तपुस्तिका* में उद्धृत पवित्रशास्त्र दिखाने चाहिए

(1) बाइबल धर्मसिद्धान्त के लिए पर्याप्त है।

## गवाही

**जॉन** का पालन-पोषण रोमानिया के एक रूढ़िवादी परिवार में हुआ था। उनके दादा-दादी कलीसिया में अगुवे थे। उनका बपतिस्मा हुआ और कलीसिया में ही उनका विवाह हुआ, परन्तु वे अक्सर सभाओं में शामिल नहीं होते थे। पास्टर ने कभी उनके पापों के बारे में उनसे बात नहीं की। **जॉन** के पास बाइबल नहीं थी और पासबान ने कभी उनसे नहीं कहा कि उन्हें बाइबल पढ़नी चाहिए। एक जवान के रूप में वे कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल हो गए। उन्हें कम्युनिस्टों के द्वारा बैपटिस्ट आराधना सभाओं को देखने के लिए भेजा गया था। उन्हें उनसे पूछना था कि वे रूढ़िवाद के बजाय बैपटिस्ट क्यों हैं। उन सभाओं में, उन्हें एहसास हुआ कि उन्होंने कभी अपने पापों का पश्चाताप नहीं किया था। उन्होंने पश्चाताप करने और यीशु के सच्चे अनुयायी बनने का निर्णय लिया। उन पर अपने परिवार और कम्युनिस्ट पार्टी के द्वारा अपने नये विश्वास को छोड़ने के लिए दबाव डाला गया। बाइबल पढ़ने में समय बिताने से उन्हें प्रोत्साहन मिला। उनके परिवार

ने उनके जीवन में बदलाव देखा और उनमें से भी कई लोग विश्वासी बन गए। **जॉन** कहते हैं कि ईस्टर्न रूढ़िवाद और सुसमाचार प्रचार करने के मसीही धर्म के बीच सबसे बड़ा अंतर यह है कि सुसमाचार प्रचार करने वाले नये जन्म पर जोर देते हैं।

## वचन का अध्ययन – भाग 2

► अब 1 थिस्सलुनीकियों 1 को फिर से पढ़ें। प्रत्येक छात्र एक अनुच्छेद लिखे जिसमें इस अंश का संदेश ईस्टर्न ऑर्थोडॉक्स के अनुयायियों के लिए समझाया गया हो। कुछ छात्र अपनी लिखी बातें साझा कर सकते हैं।

## वैकल्पिक पठन ओरिएंटल ऑर्थोडॉक्स कलीसिया

ओरिएंटल ऑर्थोडॉक्स कलीसियाएँ, ईस्टर्न रूढ़िवादी कलीसिया से अलग हैं।

ओरिएंटल ऑर्थोडॉक्स में छह कलीसियाई संगठन पाए जाते हैं: कॉप्टिक, इथियोपियन, इरिट्रियन, मलंकारा सीरियन, सिरिएक और अर्मेनियाई अपोस्टोलिक। प्रत्येक संगठन की अगुवाई एक कुलपति के द्वारा की जाती है। प्रत्येक संगठन दूसरों से अलग स्वतंत्र रूप से संचालित होता है। कॉप्टिक कलीसिया का कुलपति सभी पूर्व दिशा के रूढ़िवाद का पोप है, परन्तु उन छह संगठनों के प्रतिनिधियों की बैठकों की अगुवाई करने के अलावा, दूसरों पर उसका कोई अधिकार नहीं है।

आर्मेनिया, इथियोपिया और इरिट्रिया के देशों में, ओरिएंटल ऑर्थोडॉक्स मसीही विश्वासी सबसे बड़ा धार्मिक समूह हैं। कुछ मुस्लिम देशों में जैसे कि मिस्र, सूडान, सीरिया और लेबनान, जहाँ की आबादी का एक छोटा सा प्रतिशत मसीही लोग भी हैं, उनमें मसीही लोगों का एक बड़ा प्रतिशत पूर्व दिशा के रूढ़िवादी मसीही विश्वासी हैं। मुस्लिम देशों में सदियों से उन्हें गम्भीर रूप से सताया गया है।

सन् 451 में सैद्धान्तिक मतभेद के कारण ओरिएंटल ऑर्थोडॉक्स अन्य मसीही कलीसियाओं से अलग हो गया।

वे मसीह के स्वभाव पर ईशवैज्ञानिक असहमति के कारण अलग हो गए। उस समय एक मुख्य कलीसियाई संगठन था जो मसीह धर्म का प्रतिनिधित्व करता था। यह कलीसिया अभी तक ईस्टर्न रूढ़िवादी कलीसिया और रोमन कैथोलिक कलीसिया में विभाजित नहीं हुई थी। इस समय तक कुछ कलीसियाएँ मुख्य कलीसिया से अलग हो गई थीं।

कसदियों की महासभा ने, जिसका उद्देश्य सम्पूर्ण मसीही धर्म का प्रतिनिधित्व करना था, निर्णय लिया कि यह मानना सही है कि मसीह के दो स्वभाव थे, अर्थात् मानवीय और दिव्य। कुछ कलीसियाओं ने इस निर्णय को अस्वीकार कर दिया क्योंकि ऐसा लगता था कि मसीह एक में दो व्यक्ति था। उनका मानना था कि उसका स्वभाव मानवीय और दिव्य दोनों से आया था, परन्तु वह केवल एक स्वभाव था। उनका मानना था कि वे मसीही धर्म की मूल मान्यताओं को मानते हैं। इसमें राजनीतिक मुद्दों सहित अन्य मुद्दे भी शामिल थे, परन्तु धार्मिक मुद्दा सबसे महत्वपूर्ण था।

उस महासभा के कुछ वर्षों के भीतर, असहमत बिशपों को उस महासभा के निर्णय से कलीसिया से निकाल दिया गया। उस समय के बाद ओरिएंटल ऑर्थोडॉक्स कलीसिया का गठन किया गया।

## प्रत्येक पाठ के लिए निर्धारित कार्य

इस धार्मिक समूह के किसी व्यक्ति के सामने सुसमाचार प्रस्तुत करने का अवसर ढूँढ़ना याद रखें। अपने सहपाठियों के साथ हुई बातचीत के बारे में बताने के लिए तैयार रहें। अपना 2-पृष्ठ वाला प्रतिवेदन लिखकर अपनी कक्षा के अगुवे को सौंप दें।

# पाठ 19
# समृद्धि के धर्मशास्त्र को समझना

## पहली मुलाकात

विनीत ने टेलीविज़न पर एक कलीसिया की सेवा देखी। कलीसिया एक विशेष परियोजना के लिए दान ले रही थी। कलीसिया के एक प्रचारक ने परियोजना के लिए दान देने वाले सभी लोगों के लिए आशीष की प्रार्थना की। प्रचारक ने वायदा किया कि परमेश्वर देने वालों को जितना उन्होंने दिया है, उसका सौ गुना अधिक धन वापस देंगे। विनीत ने सोचा कि क्या उन्हें परियोजना के लिए ऑनलाइन दान देना चाहिए।

## वचन का अध्ययन – भाग 1

► मत्ती 6:25-34 को ऊँची आवाज में मिलकर पढ़ें। प्रत्येक छात्र एक अनुच्छेद लिखे जो इस पवित्रशास्त्र के अंश का सारांश प्रस्तुत करे। यह अनुच्छेद परमेश्वर द्वारा हमारी आवश्यकताओं को पूरा करने के तरीक़े के बारे में क्या सिखाता है? प्रत्येक छात्र कथनों की एक सूची बनाए। जो आपने लिखा है उस पर सामूहिक रूप से चर्चा करें।

## मनुष्यजाति के लिए परमेश्वर की आशीष

परमेश्वर अपनी सृष्टि को आशीष देते हैं (उत्पत्ति 1:22, 28)। परमेश्वर ने पहली मनुष्यजाति को बनाया और उन्हें उनकी ज़रूरत की प्रत्येक चीज़ प्रदान करने के लिए एक आदर्श वातावरण में रखा (उत्पत्ति 2:8-9)। मनुष्य के पाप करने से पहले, काम करना सुखद था, और कोई शारीरिक कष्ट, बुढ़ापा या मृत्यु नहीं थी (उत्पत्ति 3:17-19)। सृष्टि के समय परमेश्वर ने मनुष्यों के लिए जो जीवन की रचना की, उससे हमें पता चलता है कि वह हमारी प्रत्येक ज़रूरत को पूरा करना चाहते हैं।

जब यीशु पृथ्वी पर थे, तो उन्होंने परमेश्वर के प्रेम को दर्शाया। बीमारों को चंगा करके और भूखों को खाना खिलाकर, उन्होंने दिखाया कि परमेश्वर हमारी शारीरिक ज़रूरतों का ध्यान रखते हैं। लाज़र की क़ब्र पर, जब यीशु शोकित परिवार के लिए रोए तब उन्होंने परमेश्वर के अनुग्रह को दर्शाया (यूहन्ना 11:35) और फिर उसे मृतकों में से जीवित किया।

प्रेरित यूहन्ना ने लिखा कि वह चाहते थे कि विश्वासी समृद्ध और चंगे रहें (3 यूहन्ना 1:2)।

इस पाठ की शुरुआत में आपने जो अनुच्छेद पढ़ा, उसमें यीशु ने कहा कि जैसे परमेश्वर पक्षियों की देखभाल करते हैं और फूलों को सुंदर बनाते हैं, वैसे ही वह अपनी संतानों की भी देखभाल करेंगे (मत्ती 6:25-34)। उन्होंने कहा कि परमेश्वर की संतानों को अपनी ज़रूरतों के बारे में चिंता नहीं करनी चाहिए। एक विश्वासी को परमेश्वर के राज्य को व्यक्तिगत ज़रूरतों से भी अधिक प्राथमिकता देनी चाहिए।

► एक छात्र को समूह के लिए 1 तीमुथियुस 6:6-10 पढ़ना चाहिए।

परमेश्वर चाहते हैं कि उनकी संतानें धनी बनने की चाहत रखने के बजाय संतुष्ट रहें। यह अनुच्छेद हमें चेतावनी देता है कि हमें धन से प्रेम नहीं करना चाहिए, क्योंकि धन का प्रेम हर तरह की बुराई का कारण बनता है। प्रेरित पौलुस ने लिखा कि यदि हमारी बुनियादी ज़रूरतें पूरी हो जाती हैं तो हमें संतुष्ट रहना चाहिए। उसने कहा कि जो लोग धनी बनने की कोशिश करते हैं वे परीक्षाओं और हानिकारक लालसाओं में फँस जाते हैं। जो व्यक्ति धन से प्रेम करता है उसे बहुत दुःख मिलता है।

## दुःख के बारे में बाइबल का दृष्टिकोण

दुःख पाप का परिणाम है; हालाँकि, किसी व्यक्ति का दुःख उसके अपने पाप के अनुसार न्यायसंगत रूप से नहीं बाँटा जाता। इस जीवन में दुःख का वितरण समान या न्यायपूर्ण नहीं है। हम न केवल अपने पापों के कारण, बल्कि दूसरों के पापों के कारण भी दुःख भोगते हैं।

परमेश्वर ने एक परिपूर्ण संसार बनाया और कभी नहीं चाहा कि बीमारी, बुढ़ापा और मृत्यु अस्तित्व में हो। वह अंत में एक परिपूर्ण संसार को बहाल करेंगे। मसीह के प्रायश्चित के बलिदान के कारण अंत में सम्पूर्ण सृष्टि की पूर्ण बहाली होगी।

प्रायश्चित के बलिदान के सभी लाभ अभी पूरी तरह से प्राप्त नहीं होते। परमेश्वर प्राथमिकताओं के एक क्रम का पालन करते हैं। चूँकि दुःख पाप का परिणाम है, इसलिए सबसे पहले पाप से निपटना चाहिए। यदि परमेश्वर अचानक से सभी दुखों को दूर कर दें, तो लोग पाप के परिणाम को नहीं देख पाएँगे। दुःख पाप की बुराई और पश्चाताप की आवश्यकता को दर्शाता है।

लोगों को स्वतंत्र प्राणी के रूप में बनाकर, परमेश्वर अपनी प्राथमिकताएँ दर्शाते हैं। परमेश्वर पाप से घृणा करते हैं, लेकिन वह चाहते हैं कि लोग स्वतंत्र रूप से चुनाव करें। परमेश्वर चाहते हैं कि लोग सही काम करें क्योंकि वे ऐसा करना चुनते हैं, इसलिए नहीं कि उन्हें ऐसा करने के लिए मजबूर किया जाता है। परमेश्वर लोगों को उनके चुनाव के अनुसार बचाना चाहते हैं, इसलिए वह उनकी इच्छाओं को ध्यान में रखते हुए दुःख को पाप के परिणाम दिखाने की अनुमति देते। जब लोग दुःखी संसार में परमेश्वर की भलाई को देखते हैं, तो वे यह भी समझते हैं कि उन्हें पाप से पश्चाताप करके परमेश्वर की आज्ञा माननी चाहिए।

परमेश्वर सबसे पहले पाप की समस्या से निपट रहे हैं और इसमें समय लगता है क्योंकि उन्होंने लोगों को स्वतंत्र इच्छा दी है। संसार का पाप एक पल में नहीं मिटाया जा सकता क्योंकि लोगों को व्यक्तिगत रूप से निर्णय लेना होगा। जो लोग पश्चाताप करते हैं वे अंततः परमेश्वर की नई सृष्टि में प्रवेश करेंगे, जहाँ कोई दुःख नहीं होगा। जो लोग अपने पाप को छोड़ने के लिए तैयार नहीं हैं, वे कभी भी दुःख से स्वतंत्र नहीं होंगे।

परमेश्वर का सामर्थ्य सीमित नहीं है, लेकिन उनके पास प्राथमिकताओं का एक क्रम है। लोगों को इच्छुक, पश्चातापी विश्वासियों के रूप में बचाने के लिए, उसे पीड़ा के बजाय पहले पाप से निपटना चाहिए। कभी-कभी परमेश्वर चंगा करते हैं, लेकिन वर्तमान में सभी लोगों के लिए पूर्ण चंगाई का आश्वासन नहीं है। यही कारण है कि हम शारीरिक रूप से बूढ़े होते रहते हैं। हमें शरीर के अंतिम उद्धार तक विश्वास में प्रतीक्षा करनी चाहिए (रोमियों 8:23)।

## समृद्धि की बाइबल आधारित नींव

► परमेश्वर लोगों की ज़रूरतें कैसे पूरी करते हैं?

कभी-कभी परमेश्वर असामान्य, चमत्कारी तरीक़े से प्रदान करते हैं। उदाहरण के लिए, उन्होंने इस्राएल के लोगों के लिए आकाश से मन्ना भेजा (निर्गमन 16:14-15)। यीशु ने दो अवसरों पर भीड़ के लिए चमत्कारिक रूप से रोटी और मछली की मात्रा बढ़ाई (मरकुस 6:34-44, मरकुस 8:1-9)। हालाँकि, परमेश्वर ने लोगों को आशीष देने के लिए सामान्य तरीक़े स्थापित किए हैं।

1. **परमेश्वर काम को आशीष देते हैं।** काम उस परिपूर्ण जीवन का हिस्सा था जिसे परमेश्वर ने आदम के लिए बनाया था (उत्पत्ति 2:15)। वचन बताता है कि हम काम से लाभ उठाते हैं (नीतिवचन 14:23)। एक व्यक्ति को दूसरों के साथ बाँटने के लिए संसाधन प्राप्त करने के लिए काम करना चाहिए (इफिसियों 4:28)। बाइबल अकसर आलसी व्यक्ति की आलोचना करती है (नीतिवचन 6:9, नीतिवचन 10:26, नीतिवचन 20:4)। कलीसिया को ऐसे व्यक्ति का समर्थन नहीं करना चाहिए जो काम करने के लिए तैयार न हो (2 थिस्सलुनीकियों 3:10)। एक व्यक्ति जो काम करने में सक्षम है, उसे यह आशा नहीं करनी चाहिए कि परमेश्वर बिना काम के उसकी ज़रूरतें पूरी करेंगे।

2. **परमेश्वर व्यापार को आशीष देते हैं।** बाइबल में एक गुणी स्त्री के वर्णन में यह विवरण शामिल है कि वह लाभ के लिए व्यापार करती है (नीतिवचन 31:16, 24)। परमेश्वर ईमानदारी से किए गए व्यापार से प्रसन्न होते हैं, लेकिन बेईमानी से घृणा करते हैं (नीतिवचन 11:1)। परमेश्वर ऐसे व्यापार से प्रसन्न नहीं होते जो कठिन परिस्थितियों में फँसे लोगों के साथ अन्याय करता है (नीतिवचन 22:16, आमोस 8:4-8)।

3. **परमेश्वर संपत्ति को आशीष देते हैं।** भविष्यद्वक्ता मीका ने कहा कि एक राष्ट्र पर परमेश्वर की आशीष में सुरक्षित निजी संपत्ति भी शामिल है (मीका 4:4)। कई बार परमेश्वर ने अपनी संतानों की ज़मीन और खेत के पशुओं को आशीष देने का वायदा किया (व्यवस्थाविवरण 28:4)। किसी व्यक्ति के लिए संपत्ति का विकास करना अच्छा है ताकि उससे लाभ हो।

4. **परमेश्वर कलीसियाई परिवार को आशीष देते हैं।** परमेश्वर की योजना है कि कलीसिया अपने लोगों की देखभाल एक परिवार के सदस्यों के समान करे। विश्वासियों को उन लोगों की मदद करनी चाहिए जो विश्वासी परिवार में हैं (गलातियों 6:10, 1 तीमुथियुस 5:3)। कलीसिया उन तरीक़ों में से एक है जिसके द्वारा परमेश्वर विश्वासियों की ज़रूरतों को पूरा करते हैं।

5. **परमेश्वर बलिदानपूर्ण दान को आशीष देते हैं।** प्रेरित पौलुस ने कलीसिया से वायदा किया कि परमेश्वर उनकी ज़रूरतों को पूरा करेंगे क्योंकि उन्होंने स्वेच्छा से बलिदानपूर्वक दान दिया था ताकि वह दूसरों की सेवा कर सके (फिलिप्पियों 4:14-19)। यीशु ने कहा कि विधवा का छोटा-सा दान भी बड़ा माना जाता है क्योंकि उसने स्वेच्छा से बलिदानपूर्वक दान दिया (मरकुस 12:43-44)। कलीसिया में प्रत्येक व्यक्ति को कलीसिया की सेवकाई में योगदान देना चाहिए और आत्मिक परिवार में दूसरों की मदद करने के तरीक़ों को खोजना चाहिए।

6. **परमेश्वर नियमित दान को आशीष देते हैं।** दशमांश और भेंट की पुराने नियम की व्यवस्था हमें बताती है कि एक विश्वासी को नियमित रूप से अपनी आय का 10% और अतिरिक्त भेंट देनी चाहिए। परमेश्वर ने दशमांश देने वाले लोगों को वित्तीय आशीष देने का वायदा किया (मलाकी 3:10)।

7. **परमेश्वर पासबानों का सहयोग करने से आशीष देते हैं।** परमेश्वर चाहते थे कि पासबानों को उनकी सेवकाई द्वारा सहायता मिले (1 कुरिन्थियों 9:14)। विश्वासियों को अपने पासबानों का सहयोग करने के लिए दान देना चाहिए (गलातियों 6:6)। एक पासबान को आवश्यकता पड़ने पर काम करने के लिए तैयार रहना चाहिए (प्रेरितों के काम 20:34)। एक पासबान को प्रेम से प्रेरित होना चाहिए न कि धन से (1 पतरस 5:2)। झूठे सिद्धांत के कई शिक्षक धन की इच्छा से प्रेरित होते हैं (तीतुस 1:11, 2 पतरस 2:3)। धन के लिए परमेश्वर की आशीषों को खरीदना या बेचना ग़लत है (प्रेरितों के काम 8:20)।

## झूठी समृद्धि के शिक्षक

बाइबल हमें ऐसे प्रचारकों से सावधान करती है जो लोगों को लुभाने के लिए झूठा संदेश देते हैं (2 तीमुथियुस 4:1-4)। झूठी समृद्धि के शिक्षकों में कई सामान्य विशेषताएँ होती हैं:

1. वे पश्चाताप की बुलाहट करने के बजाय सांसारिक लक्ष्यों को बताकर अविश्वासियों को आकर्षित करते हैं।
2. वे मानवीय दुःख के बारे में यथार्थवादी मसीही दृष्टिकोण नहीं देते।
3. उनका रवैया घमंडी है जो अन्य कलीसियाओं, वृद्ध मसीहियों और यहाँ तक कि परमेश्वर के प्रति भी अनादरपूर्ण है।
4. वे ऐसे वायदे करते हैं जो परमेश्वर नहीं करते, जिसके परिणामस्वरूप निराशा होती है और विश्वास में कमी आती है।

कभी-कभी झूठे समृद्धि शिक्षक असामान्य सिद्धांतों और प्रतिभाशाली उपदेशों से ध्यान आकर्षित करते हैं। वे चमत्कार और प्रकाशन दिखाने का दावा करते हैं जो अन्य कलीसियाओं के पास नहीं है। वे धार्मिक हस्तियों के रूप में सम्मानित होना चाहते हैं।

वे नए प्रकाशन पर ज़ोर देते हैं, और उनके कई सिद्धांत बाइबल में नहीं पाए जाते। वे दावा करते हैं कि उन्होंने ये नए सिद्धांत परमेश्वर के साथ बातचीत से सीखे हैं।

> "परन्तु यदि कोई आत्मा में होकर कहे, मुझे पैसे दो या इसी प्रकार का कुछ और, तो उसकी बात न सुनना। परन्तु यदि वह कहे कि ज़रूरतमंद लोगों के लिए दो, तो कोई उसे दोषी न ठहराए।"
> - *डिडेच*
> (दूसरी सदी की कलीसिया से)

वे विश्वास के बारे में अपनी शिक्षाओं के लिए सबसे अधिक जाने जाते हैं, जो इस बात पर ज़ोर देते हैं कि यदि कोई व्यक्ति विश्वास का इस्तेमाल करना सीख ले तो उसे चंगाई और धन मिल सकता है। वे वायदा करते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति को चंगा किया जा सकता है। वे कहते हैं कि प्रत्येक मसीही के लिए धनी बनना परमेश्वर की योजना है।

वे दावा करते हैं कि उनकी सेवकाई में कई चमत्कार होते हैं, लेकिन इस बात का कोई ठोस सबूत नहीं है कि वे चमत्कार वास्तविक हैं। वे प्रत्येक विश्वासी को धनी बनाने के लिए दिशा-निर्देश देने का दावा करते हैं, लेकिन केवल अगुवे ही अपने अनुयायियों के दान से धनी बनते हैं।

इन शिक्षकों का अनुसरण करने वाले लोगों की भीड़ न तो धनी है, न ही उन्हें पूर्ण चंगाई का अनुभव हो रहा है। इसके बजाय, वे आशावान लोग हैं, जिनके पास अप्रमाणित सफलता की कहानियाँ हैं।

संसार भर के देशों में झूठी समृद्धि की शिक्षा देने वाली कई नई कलीसिया शुरू हो गई हैं। उनमें से कुछ टेलीविज़न पर अमेरिकी शिक्षकों की नक़ल करते हैं। कुछ अमेरिका में झूठे समृद्धि प्रचारकों की पुस्तकों और वीडियो का उपयोग करते हैं। कुछ झूठे समृद्धि शिक्षक दूसरे देशों में कलीसिया को शुरू करते हैं और स्थानीय मण्डलियों को आशीष देने के लिए धन का उपयोग करने के बजाय स्वयं के लिए दान लेते हैं।

## झूठे समृद्धि धर्म सिद्धान्त

झूठे समृद्धि के शिक्षकों ने अपने विचारों के समर्थन में झूठे धर्म सिद्धान्त विकसित किए हैं।

झूठे समृद्धि शिक्षक कहते हैं कि विश्वास सृष्टि की व्यक्तित्वहीन शक्ति और सार है। उनका मानना है कि विश्वास एक ऐसी शक्ति है जिसका इस्तेमाल लोग वैसे ही कर सकते हैं जैसे परमेश्वर करते हैं।

झूठे समृद्धि शिक्षक सोचते हैं कि मनुष्य परमेश्वर पर निर्भर हुए बिना और उनकी इच्छा जानने की कोशिश किए बिना विश्वास का उपयोग कर सकता है। इसके विपरीत, यीशु ने हमें पिता की इच्छा पूरी करने के लिए प्रार्थना करने के लिए कहा (मत्ती 6:10)। बाइबल हमें बताती है कि विश्वास हमें परमेश्वर पर भरोसा करने और उनके द्वारा दिए जाने वाले इनाम की ओर ले जाता है (इब्रानियों 11:6)।

झूठे समृद्धि शिक्षक कहते हैं कि परमेश्वर पृथ्वी के स्वामी नहीं है या उस पर शासन नहीं करते। वे सिखाते हैं कि परमेश्वर ने मनुष्य को पृथ्वी पर अधिकार दिया है, और मनुष्य ने इसे शैतान को दे दिया है। वे कहते हैं कि परमेश्वर पृथ्वी पर कुछ भी नहीं कर सकते जब तक कि लोग उन्हें अनुमति न दें। इसके विपरीत, बाइबल कहती है कि पृथ्वी और उसमें उपस्थित प्रत्येक वस्तु परमेश्वर की है (भजन संहिता 24:1)। बाइबल कहती है कि परमेश्वर पूरी पृथ्वी के न्यायी हैं और पृथ्वी पर कार्य करते हैं (1 शमूएल 2:10)।

विश्वास के बारे में उनके सिद्धांत परमेश्वर के सिद्धांतों पर आधारित हैं जो ऐतिहासिक मसीही विश्वास से अलग हैं। उदाहरण के लिए, वे सिखाते हैं कि परमेश्वर पिता एक शारीरिक मनुष्य हैं। उनका मानना है कि लोग परमेश्वर की शारीरिक प्रतियाँ हैं। उनका मानना है कि चूँकि लोग परमेश्वर की प्रतियाँ हैं, इसलिए उन्हें वह सब करने में सक्षम होना चाहिए जो परमेश्वर करते हैं।

बाइबल कहती है कि परमेश्वर आत्मा हैं (यूहन्ना 4:24) और मनुष्य नहीं (यूहन्ना 23:19)। यीशु परमेश्वर के एकलौते पुत्र हैं जिन्होनें हमारा उद्धार किया (यूहन्ना 3:16)। लेकिन झूठे समृद्धि शिक्षक कहते हैं कि परमेश्वर हमारे जैसे मनुष्य हैं और यीशु हमसे अलग नहीं हैं।

> "मानव हृदय जिन पापों की ओर आकर्षित होता है, उनमें से शायद ही कोई अन्य पाप परमेश्वर को मूर्तिपूजा से अधिक घृणित लगता है, क्योंकि मूर्तिपूजा मूलतः उनके चरित्र का अपमान है.... पतित हृदय की छाया में जन्मे परमेश्वर स्वाभाविक रूप से सच्चे परमेश्वर की सच्ची समानता नहीं होगा। भजन संहिता 50:21 में प्रभु ने दुष्ट व्यक्ति से कहा, 'इसलिये तू ने समझ लिया कि परमेश्वर बिलकुल मेरे समान है।'"
> - ए.डब्लू. टोज़र से अनुकूलित

केनेथ कोपलैंड ने आदम के बारे में कहा,

> आदम परमेश्वर का प्रतिरूप था, बिलकुल [परमेश्वर] जैसा दिखता था। यदि आप आदम को परमेश्वर के बगल में खड़ा करें, तो वे बिलकुल एक समान दिखेंगे। यदि आप यीशु और आदम को साथ-साथ खड़ा करें, तो वे बिलकुल एक समान दिखेंगे और एक जैसे लगेंगे।[41]

> वह परमेश्वर के थोड़ा-सा समान नहीं था। वह लगभग समान भी नहीं था। वह तो परमेश्वर के अधीन भी नहीं था... आदम जितना परमेश्वर के समान हो सकता था, उतना ही था—बिलकुल यीशु के समान।[42]

केनेथ हेगिन ने कहा, "प्रत्येक वह व्यक्ति जो दोबारा जन्म लेता है, उसने देह धारण किया है, और मसीही विश्वास एक चमत्कार है। विश्वासी ने यीशु के समान ही देह धारण किया है।"[43]

बेनी हिन ने कहा, "मुझे मत बताओ कि तुम्हारे पास यीशु है। तुम वह सब कुछ हो जो वह थे, जो वह हैं और जो वह हमेशा रहेंगे।"[44]

मॉरिस सेरुल्लो ने कहा, "भाई, जब हम यहाँ खड़े होते हैं, तो आप मॉरिस सेरुल्लो को नहीं देख रहे होते हैं, आप परमेश्वर को देख रहे होते हैं। आप यीशु को देख रहे होते हैं।"[45]

परमेश्वर ने कहा,

> क्योंकि परमेश्वर मैं ही हूँ, दूसरा कोई नहीं; मैं ही परमेश्वर हूँ और मेरे तुल्य कोई भी नहीं है। मैं तो अन्त की बात आदि से और प्राचीनकाल से उस बात को बताता आया हूँ जो अब तक नहीं हुई। मैं कहता हूँ, 'मेरी युक्ति स्थिर रहेगी और मैं अपनी इच्छा को पूरी करूँगा (यशायाह 46:9-10)।

बाइबल में लिखा है, "पृथ्वी और जो कुछ उस में है यहोवा ही का है, जगत और उस में निवास करनेवाले भी" (भजन संहिता 24:1)।

लेकिन समृद्धि के झूठे शिक्षक कहते हैं कि परमेश्वर का अब पृथ्वी पर कोई अधिकार नहीं है।

केनेथ कोपलैंड ने कहा,

---

[41] Kenneth Copeland, "The Authority of the Believer IV" (Fort Worth, TX: Kenneth Copeland Ministries, 1987), audiotape #01-0304, side 1.
[42] Kenneth Copeland, "Following the Faith of Abraham," (Fort Worth, TX: Kenneth Copeland Ministries, 1985), audiotape side 1.
[43] Kenneth Hagin, "The Incarnation," *The Word of Faith* # 13, 12 (December, 1980), 14
[44] Benny Hinn, "Our Position in Christ #2 - The Word Made Flesh," (Orlando, FL: Orlando Christian Center, 1991), audiotape #A031190-2, side 2.
[45] Morris Cerullo, "The Endtime Manifestation of the Sons of God," audiotape 1.

> उसे [परमेश्वर को] पहले वाले [आदम] जैसा ही एक मनुष्य चाहिए। यह एक मनुष्य ही होना चाहिए। वह परमेश्वर बनकर यहाँ ऐसी विशेषताओं और गरिमाओं के साथ नहीं आ सकता जो मनुष्य में आम नहीं हैं। वह ऐसा नहीं कर सकता। यह कानूनी नहीं है।[46]
>
> उन्होंने अपना काम पूरा करने के लिए किसी भी ऐसी चीज़ का इस्तेमाल नहीं किया जो आम तौर पर मनुष्य के लिए सामान्य नहीं है।[47]

कोपलैंड ने यह भी कहा, "वह [परमेश्वर] मिट्टी से फिर से दूसरा मनुष्य नहीं बना सकते। पृथ्वी की मिट्टी अब उनकी नहीं है।"

फ्रेडरिक प्राइस ने कहा,

> अब यह चौंकाने वाली बात है! लेकिन परमेश्वर को मनुष्य की ओर से इस पृथ्वी में काम करने की अनुमति दी जानी चाहिए... हाँ! आप नियंत्रण में हैं! तो यदि मनुष्य के पास नियंत्रण है, तो अब किसके पास नहीं है? परमेश्वर... जब परमेश्वर ने आदम को अधिकार दिया, तो इसका अर्थ था कि अब परमेश्वर के पास अधिकार नहीं था। इसलिए परमेश्वर इस पृथ्वी पर कुछ भी नहीं कर सकते जब तक कि हम उन्हें ऐसा करने की अनुमति न दें। और हम प्रार्थना के द्वारा उन्हें ऐसा करने की अनुमति देते हैं।[48]

> "यह कितनी अजीब बात है कि मसीही विश्वास को मानने वाले लोग यह मान सकते हैं कि सांसारिक आत्मा, सांसारिक दोस्तों और सांसारिक सिद्धांतों द्वारा संचालित उनके जीवन के साथ, वे परमेश्वर के अनुग्रह को पा सकते हैं या कभी स्वर्ग के राज्य में पहुँच सकते हैं!"
> - एडम क्लार्क

झूठे समृद्धि शिक्षकों का धर्म सिद्धान्त बाइबल और मसीही विश्वास की शुरू से स्थापित बुनियादी मान्यताओं का खंडन करता है।

## बाइबलीय सुधार

पौलुस ने कुरिन्थुस के विश्वासियों को मसीही जीवन के बारे में उनकी ग़लतफ़हमी दूर करने के लिए लिखा (1 कुरिन्थियों 4:8-13 देखें)। उनमें से कई लोग मसीही बनने से पहले गरीब थे। उन्होंने सोचा कि क्योंकि वे परमेश्वर की संतान बन गए हैं, विश्वास और आत्मिक वरदानों के साथ, वे संसार में धन और प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकते हैं। पौलुस ने उन्हें बताया कि प्रेरितों को भी गरीबी का सामना करना पड़ा और संसार में उनका दर्जा कम था। हालाँकि, उनका विश्वास बड़ा था और उनके पास आत्मिक वरदान थे, फिर भी वे कभी-कभी भूखे, बेघर होते थे और स्वयं का पालन-पोषण करने के लिए काम करते थे। विश्वास धन का आश्वासन नहीं है।

दूसरे अनुच्छेद में पौलुस ने समझाया कि सारी सृष्टि अभी भी पाप के श्राप के परिणाम भुगत रही है (रोमियों 8:22-23 देखें)। सभी जीवित प्राणी पीड़ित हैं और जीवित रहने के लिए संघर्ष करते हैं। उन्होंने कहा कि मसीही भी अभी भी शारीरिक रूप से पीड़ित हैं और उस समय की प्रतीक्षा कर रहे हैं जब उनकी देह को छुड़ाया जाएगा। हालाँकि, हम पाप से बच गए हैं, फिर भी हम अभी तक प्रायश्चित

---

[46] Kenneth Copeland, "The Incarnation," (Fort Worth, TX: Kenneth Copeland Ministries, 1985), audiotape #01-0402, side 1.
[47] Copeland, "The Incarnation."
[48] Frederick Price, "Prayer: Do You Know What Prayer Is... and How to Pray?" *The Word Study Bible* (Tulsa, OK: Harrison House, 1990), 1178.

के बलिदान के द्वारा दी गई पूर्ण चंगाई का अनुभव नहीं कर पाए हैं। हम अभी भी बीमारी, बुढ़ापे और मृत्यु का अनुभव करते हैं क्योंकि हम अभी तक स्वर्ग में नहीं हैं। परमेश्वर हमें चंगा करते हैं, लेकिन हमें इस बात का आश्वासन नहीं है कि हम सभी शारीरिक समस्याओं से स्वतंत्र रह सकते हैं।

प्रेरित याकूब ने उन लोगों को फटकारा जो संसार की वस्तुओं से प्रेम करते थे और अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए प्रार्थना करते थे (याकूब 4:3)। प्रेरित पौलुस देमास के बारे में दुःखी था जिसने संसार की वस्तुओं से प्रेम करने के कारण सेवकाई छोड़ दी थी (2 तीमुथियुस 4:10)। स्पष्टतः, याकूब और पौलुस दोनों यह समझते थे कि विश्वास धन का आश्वासन नहीं है।

इब्रानियों 11 में विश्वास के कई नायकों के जीवन का वर्णन है। उन्होंने महान कार्य किए क्योंकि उन्होंने परमेश्वर के वायदों पर विश्वास किया और परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया। परमेश्वर के प्रति अपनी विश्वासयोग्यता के कारण उन्होंने कठिन समय का सामना किया। उनमें से कई बेघर थे और उनके पास भोजन और कपड़े नहीं थे (इब्रानियों 11:37-38)। उन्होंने ये सब इसलिए नहीं सहा क्योंकि उनमें विश्वास नहीं था, बल्कि इसलिए क्योंकि उनमें विश्वास था। वे परमेश्वर के साथ अपने सम्बन्ध की वजह से संसार की प्रत्येक वस्तु खोने को तैयार थे।

► बाइबल में ऐसा कौनसा प्रमाण है जो बताता है कि विश्वास धन का आश्वासन नहीं देता?

बाइबल का सुसमाचार उस व्यक्ति के लिए आशा का संदेश है जो जानता है कि वह पापी है और परमेश्वर से क्षमा और शांति चाहता है। परमेश्वर के साथ एक सम्बन्ध पश्चाताप और हमारी इच्छा के अधीन होने से शुरू होता है। मसीही दैनिक आज्ञाकारिता, विनम्रता और परमेश्वर की इच्छा के प्रति समर्पण में रहता है। परमेश्वर हमें अपनी सभी ज़रूरतों को प्रार्थना में उनके पास लाने के लिए आमंत्रित करते हैं, लेकिन हमें हर परिस्थिति में उसकी इच्छा को स्वीकार करना चाहिए। परमेश्वर वायदा करते हैं कि सब कुछ उनके नियंत्रण में है और वह सब कुछ हमारे भले के लिए करेंगे (रोमियों 8:28-29), लेकिन वह सभी दुखों को तुरंत दूर करने का वायदा नहीं करते हैं (रोमियों 8:16-18, 1 पतरस 1:6)।

प्रभु की प्रार्थना मसीही दृष्टिकोण का एक उदाहरण है। यह झूठे समृद्धि शिक्षकों के दृष्टिकोण के विपरीत है जो स्वयं के लिए सामर्थ्य और आदर का दावा करते हैं। इस प्रार्थना में हम पाते हैं कि प्राथमिकता परमेश्वर का राज्य और महिमा है, और सब कुछ उनकी इच्छा के अधीन होना चाहिए (मत्ती 6:9-13 देखें)।

► चंगाई और धन के बारे में एक मसीही का रवैया, झूठे समृद्धि शिक्षकों के रवैये से किस तरह अलग होना चाहिए?

## एक गवाही

सैंटो डोमिंगो में एक कलीसिया अपनी इमारत को बड़ा बनाना चाहती थी। उन्होंने परमेश्वर से प्रार्थना की कि वे इसकी व्यवस्था करें। उन्होंने एक मिशनरी संगठन से भी मदद माँगी। मण्डली के लोगों ने स्वेच्छा से अपना धन दिया। उन्होंने इमारत निर्माण परियोजना के लिए अपना समय और काम भी किया। परमेश्वर ने उनकी प्रतिबद्धता और स्वेच्छा से दिये गए दान को आशीष दी, और इमारत पूरी बन गई।

## वचन का अध्ययन – भाग 2

► अब मत्ती 6:25-34 को फिर से पढ़ें। प्रत्येक छात्र एक अनुच्छेद लिखे जिसमें इस अंश का संदेश झूठे समृद्धि शिक्षकों का अनुसरण करने वालों के लिए समझाया गया हो। कुछ छात्र अपनी लिखी बातें साझा कर सकते हैं।

## प्रत्येक पाठ के लिए निर्धारित कार्य

इस धार्मिक समूह के किसी व्यक्ति के सामने सुसमाचार प्रस्तुत करने का अवसर ढूँढ़ना याद रखें। झूठे समृद्धि शिक्षक विभिन्न कलीसियाओं में पाए जाते हैं, लेकिन उनके संदेश समान हैं। अपने सहपाठियों के साथ हुई बातचीत के बारे में बताने के लिए तैयार रहें। अपना 2-पृष्ठ वाला प्रतिवेदन लिखकर अपनी कक्षा के अगुवे को सौंप दें।

# सिद्धान्त की हस्तपुस्तिका

यह पुस्तिका कुछ ऐसे सिद्धांतों के लिए बाइबल आधारित समर्थन प्रदान करती है जिन्हें अकसर झूठे विश्वासों द्वारा नकार दिया जाता है। यह पुस्तिका सभी मसीही सिद्धांतों को शामिल करने के लिए नहीं बनाई गई है, यहाँ पर सभी महत्वपूर्ण सिद्धांतों को शामिल नहीं किया गया है।

## (1) बाइबल धर्मसिद्धान्त के लिए पर्याप्त है।

### यह क्यों मायने रखता है

कुछ विश्वास जो मसीही होने का दावा करते हैं, वे अपने सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांतों के लिए नए प्रकाशन पर निर्भर करते हैं। उनका दावा है कि बाइबल में वह सब कुछ नहीं है जो सिद्धांत के लिए ज़रूरी है। लेकिन बाइबल दावा करती है कि इसका संदेश पर्याप्त है, इसलिए यदि कोई व्यक्ति इसका पूरी तरह से पालन करता है, तो वह बच जाता है।

### वचन आधारित प्रमाण

“आकाश और पृथ्वी का टल जाना व्यवस्था के एक बिन्दु के मिट जाने से सहज है” (लूका 16:17)। कुछ इब्रानी अक्षरों के ऊपर लिखे इस चिह्न का कोई अर्थ नहीं था और यह केवल सजावट के लिए था। इस पद का अर्थ यह है कि परमेश्वर का वचन सुरक्षित रखा गया है।

“क्योंकि तुम ने नया जन्म पाया है...परमेश्वर के जीवते और सदा ठहरनेवाले वचन के द्वारा नया जन्म पाया है। घास सूख जाती है, और फूल झड़ जाता है, परन्तु प्रभु का वचन युगानुयुग स्थिर रहता है। और यही सुसमाचार का वचन है जो तुम्हें सुनाया गया था” (1 पतरस 1:23-25)। परमेश्वर का वचन कभी असफल नहीं होगा, और यह सुसमाचार यह बात बताता है। इसलिए, सुसमाचार उन सिद्धांतों में नहीं पाया जाएगा जो वचन से बाहर हैं, या इसके विपरीत हैं।

“आकाश और पृथ्वी टल जाएँगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी” (मरकुस 13:31)। यीशु ने कहा कि उनके शब्द व्यर्थ नहीं जायेंगे।

“बचपन से पवित्रशास्त्र तेरा जाना हुआ है, जो तुझे मसीह पर विश्वास करने से उद्धार प्राप्त करने के लिये बुद्धिमान बना सकता है” (2 तीमुथियुस 3:15)।

“सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है...ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने” (2 तीमुथियुस 3:16-17)। बाइबल में इतनी शिक्षा है कि वह किसी व्यक्ति को वैसा बना सकती है जैसा परमेश्वर उसे बनाना चाहता है।

## (2) केवल एक ही परमेश्वर हैं।

### यह क्यों मायने रखता है

सृष्टिकर्ता और पिता के रूप में, परमेश्वर महिमा के योग्य हैं। वह चाहते हैं कि हम उनके प्रति ऐसी विश्वासयोग्यता रखें जो किसी अन्य प्राणी को न मिले। वह कहते हैं कि वह जलन रखने वाले परमेश्वर हैं (निर्गमन 34:14, व्यवस्थाविवरण 4:24, व्यवस्थाविवरण 5:9, व्यवस्थाविवरण 6:15)। जब वह महिमा किसी और को दी जाती है जिसके केवल वे योग्य हैं, तो वह क्रोधित हो जाते हैं (व्यवस्थाविवरण 32:16, 21)। जब कोई विश्वास यह सिखाता है कि एक से अधिक परमेश्वर हैं, या मनुष्य परमेश्वर बन सकता है, तो इसका परिणाम यह होता है कि परमेश्वर से वह महिमा ले ली जाती है जो केवल उन्हीं की है।

### वचन आधारित प्रमाण

“मुझ से पहले कोई परमेश्वर न हुआ और न मेरे बाद कोई होगा” (यशायाह 43:10)।

“मैं सबसे पहला हूँ, और मैं ही अन्त तक रहूँगा; मुझे छोड़ कोई परमेश्वर है ही नहीं” (यशायाह 44:6)।

“क्या मुझे छोड़ कोई और परमेश्वर है? नहीं, मुझे छोड़ कोई चट्टान नहीं; मैं किसी और को नहीं जानता” (यशायाह 44:8)।

इस बात के प्रमाण के लिए कि कोई दूसरा परमेश्वर नहीं है, यशायाह 45:5, 6, 14, 21-22, और यशायाह 46:9 भी देखें।

“आकाश परमेश्वर की महिमा का वर्णन कर रहा है; और आकाशमण्डल उसकी हस्तकला को प्रगट कर रहा है” (भजन संहिता 19:1)।

“जब मैं आकाश को, जो तेरे हाथों का कार्य है, और चंद्रमा और तारागण को जो तू ने नियुक्त किए हैं, देखता हूँ; तो फिर मनुष्य क्या है कि तू उसका स्मरण रखे, और आदमी क्या है कि तू उसकी सुधि ले?” (भजन संहिता 8:3-4)। परमेश्वर केवल इस पृथ्वी के परमेश्वर नहीं है, बल्कि वह सम्पूर्ण सृष्टि के परमेश्वर और सृष्टिकर्ता हैं।

## (3) परमपिता परमेश्वर मनुष्य नहीं है।

### यह क्यों मायने रखता है

कुछ विश्वासों में यह कहा जाता है कि परमेश्वर मनुष्य हैं, इसका कारण यह है कि मनुष्य को परमेश्वर के तुल्य माना जाए। इससे परमेश्वर की महिमा कम हो जाती है। ऊपर "केवल एक परमेश्वर हैं" के अंतर्गत परमेश्वर की जलन के बारे में पद देखें।

### वचन आधारित प्रमाण

"ईश्वर मनुष्य नहीं कि झूठ बोले, और न वह आदमी है कि अपनी इच्छा बदले" (गिनती 23:19)।

"मैं मनुष्य नहीं परमेश्वर हूँ" (होशे 11:9)।

"वे अपने आप को बुद्धिमान जताकर मूर्ख बन गए, और अविनाशी परमेश्वर की महिमा को नाशवान् मनुष्य" (रोमियों 1:22-23)। परमेश्वर को मनुष्य के स्वरुप के समान बनाना मूर्तिपूजा है।

"यीशु ने उसको उत्तर दिया, "हे शमौन, योना के पुत्र, तू धन्य है; क्योंकि मांस और लहू ने नहीं, परन्तु मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है, यह बात तुझ पर प्रगट की है" (मत्ती 16:17)। यीशु के कथन के अनुसार पिता माँस और लहू नहीं हैं।

"परमेश्वर आत्मा है" (यूहन्ना 4:24)।

## (4) परमेश्वर कभी नहीं बदले।

### यह क्यों मायने रखता है

झूठे विश्वासों के पास यह कहने के लिए अलग-अलग कारण हैं कि परमेश्वर बदल सकते हैं। वे शायद यह कहना चाहें कि वह हमारे समान ही एक मनुष्य थे, जो मनुष्य को परमेश्वर के स्तर तक ले जाता है। वे शायद यह कहना चाहें कि परमेश्वर में भलाई और बुराई दोनों हैं, या यह कि परमेश्वर गलतियाँ कर सकते हैं।

### वचन आधारित प्रमाण

"क्योंकि मैं यहोवा बदलता नहीं" (मलाकी 3:6)।

"अनादिकाल से अनन्तकाल तक तू ही परमेश्वर है" (भजन संहिता 90:2)।

"ज्योतियों के पिता... न अदल बदल के कारण उस पर छाया पड़ती है" (याकूब 1:17)।

## (5) यीशु परमेश्वर हैं।

### यह क्यों मायने रखता है

1. क्योंकि यीशु परमेश्वर हैं, इसलिए उनकी बलिदानपूर्वक मृत्यु का मूल्य अनंत है - जो संसार के पापों की क्षमा के लिए पर्याप्त है।
2. क्योंकि वह परमेश्वर हैं, उनमें हमें बचाने की सामर्थ्य है; वह मार्ग, सत्य और जीवन हैं।
3. क्योंकि वह परमेश्वर हैं, हमें उनकी उपासना वैसे ही करनी चाहिए जैसे हम पिता की उपासना करते हैं।

यदि कोई कहता है कि यीशु को परमेश्वर ने बनाया था या वह परमेश्वर नहीं बल्कि एक मनुष्य थे, तो वे परमेश्वर की उस महिमा को ले लेते हैं जिसके वह योग्य हैं। वे उद्धार के लिए यीशु पर पूरी तरह से विश्वास करने के बजाय एक अलग सुसमाचार पर भी विश्वास करते हैं।

### वचन आधारित प्रमाण

“मैं और पिता एक हैं” (यूहन्ना 10:30)।

“कि पहले इसके कि अब्राहम उत्पन्न हुआ, मैं हूँ” (यूहन्ना 8:58)।

“पिता किसी का न्याय नहीं करता, परन्तु न्याय करने का सब काम पुत्र को सौंप दिया है, कि सब लोग जैसे पिता का आदर करते हैं वैसे ही पुत्र का भी आदर करें” (यूहन्ना 5:22-23)।

सारी वस्तुएँ यीशु के द्वारा और उन्हीं के लिये सृजी गई हैं। (कुलुस्सियों 1:16)।

यीशु परमेश्वर के पूर्ण स्वरुप हैं और अपने सामर्थ्य से सृष्टि को बनाए रखते हैं (इब्रानियों 1:3)।

यीशु “आदि और अन्त” हैं, एक ऐसी उपाधि जिसका दावा परमेश्वर स्वयं करते हैं (प्रकाशितवाक्य 1:17, यशायाह 44:6)।

अन्य संदर्भ जहाँ यीशु को परमेश्वर कहा गया है : यूहन्ना 1:1, 14, प्रेरितों के काम 20:28, तीतुस 2:13, यशायाह 9:6, 1 तीमुथियुस 3:16, और यूहन्ना 14:9

वे पद जो दर्शाते हैं कि यीशु में परमेश्वर के गुण हैं : मत्ती 18:20, मत्ती 28:20, फिलिप्पियों 3:21, इब्रानियों 13:8, यूहन्ना 2:24-25, और मीका 5:2

वे पद जो दर्शाते हैं कि यीशु की उपासना वैसे ही की जाती है जैसे पिता की उपासना की जाती है : इब्रानियों 1:6, 1 कुरिन्थियों 1:2, फिलिप्पियों 2:9-11, यशायाह 45:22-23, प्रकाशितवाक्य 1:6, प्रकाशितवाक्य 5:12-13, और यूहन्ना 17:5 (यशायाह 42:8, यशायाह 48:11 देखें)।

## (6) यीशु शारीरिक देह के साथ मृतकों में से जी उठे।

### यह क्यों मायने रखता है

कलीसिया के शुरुआती दिनों से ही पुनरुत्थान सुसमाचार का एक ज़रूरी हिस्सा था। प्रेरितों ने प्रचार किया कि यीशु परमेश्वर के पुत्र और सृष्टि के उद्धारकर्ता हैं। उनका पुनरुत्थान साबित करता है कि उनका सुसमाचार हमें बचाकर अनंत जीवन दे सकता है।

### वचन आधारित प्रमाण

यीशु ने अपने शारीरिक पुनरुत्थान की भविष्यद्वाणी की थी : "इस मन्दिर को ढा दो, और मैं इसे तीन दिन में खड़ा कर दूँगा... परन्तु उसने अपनी देह के मन्दिर के विषय में कहा था" (यूहन्ना 2:19-21)।

यीशु ने अपने पुनरुत्थान के बाद अपने चेलों से कहा: "मेरे हाथ और मेरे पाँव को देखो कि मैं वही हूँ। मुझे छूकर देखो, क्योंकि आत्मा के हड्डी माँस नहीं होता जैसा मुझ में देखते हो" (लूका 24:39)।

यीशु ने थोमा से कहा, "अपनी उँगली यहाँ लाकर मेरे हाथों को देख और अपना हाथ लाकर मेरे पंजर में डाल, और अविश्वासी नहीं परन्तु विश्वासी हो" (यूहन्ना 20:27)।

1 कुरिन्थियों 15:20-23 हमें बताता है कि यीशु को उसी तरह से जी उठाया गया था जिस तरह से मसीहियों को जी उठाया जाएगा। पूरा अध्याय मसीही विश्वास के लिए मसीह के शारीरिक पुनरुत्थान की आवश्यकता को दर्शाता है। यदि मसीह नहीं जी उठा, तो हमें जी उठने की कोई आशा नहीं है, और इसलिए हमारा सुसमाचार व्यर्थ है (15:17)। यदि मसीह नहीं जी उठा, तो हमें भी जी उठाया नहीं जाएगा, और हम एक अनंत आशा के बिना अभागे हैं (15:19)।

प्रेरितों ने पुनरुत्थान को सुसमाचार के एक अनिवार्य भाग के रूप में प्रचारित किया (प्रेरितों के काम 2:31-32, प्रेरितों के काम 3:15, प्रेरितों के काम 4:10, प्रेरितों के काम 10:40-41, प्रेरितों के काम 13:30-37, प्रेरितों के काम 17:31, और प्रेरितों के काम 26:8,23

## (7) पवित्र आत्मा परमेश्वर है।

### यह क्यों मायने रखता है

जो विश्वास पवित्र आत्मा के ईश्वरत्व को नकारता है, वह आमतौर पर त्रिएक और मसीह के ईश्वरत्व को नकारता है। जो व्यक्ति यह नहीं मानता कि पवित्र आत्मा परमेश्वर है, वह उनकी उपासना नहीं करेगा और उन्हें वह आदर नहीं देगा जिसके वह योग्य हैं।

### वचन आधारित प्रमाण

पवित्र आत्मा को परमेश्वर कहा जाता है (प्रेरितों के काम 5:4 और 2 कुरिन्थियों 3:17)।

पवित्र आत्मा के पास वह ज्ञान है जो केवल परमेश्वर के पास है: वह परमेश्वर को पूरी तरह से समझता है (1 कुरिन्थियों 2:10-11) और उसने प्राचीन समय में भविष्यद्वाणी की थी (1 पतरस 1:10-11, 2 पतरस 1:21)।

पवित्र आत्मा हर जगह उपस्थित है (भजन संहिता 139:7)।

पवित्र आत्मा को मसीह की आत्मा कहा जाता है और वह हर विश्वासी के साथ उपस्थित है (रोमियों 8:9)।

पवित्र आत्मा वह करता है जो केवल परमेश्वर ही कर सकते हैं (लूका 24:49, यूहन्ना 16:8-11, इफिसियों 3:16, गलातियों 5:22-23)।

पवित्र आत्मा की निन्दा की जा सकती है (लूका 12:10)।

## (8) परमेश्वर त्रियक्ता है।

### यह क्यों मायने रखता है

जो लोग त्रिएकता को नकारते हैं, वे आमतौर पर इस बात से इनकार करते हैं कि यीशु और पवित्र आत्मा परमेश्वर हैं, और उनकी उपासना नहीं करते। सबसे बड़ी ग़लती जो एक व्यक्ति कर सकता है, वह है या तो किसी ऐसे व्यक्ति की उपासना करना जो परमेश्वर नहीं है, या किसी ऐसे व्यक्ति की उपासना करने में विफल होना जो परमेश्वर है। एक विश्वास जो इस बात से इनकार करता है कि यीशु परमेश्वर हैं, एक नया सुसमाचार विकसित करेगा।

### वचन आधारित प्रमाण

त्रिएकता का सिद्धांत तीन तथ्यों से आता है।

1. बाइबल कहती है कि केवल एक ही परमेश्वर हैं।
2. बाइबल पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा को परमेश्वर के रूप में बताती है।
3. पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा एक दूसरे से अलग हैं और व्यक्तियों के रूप में एक दूसरे के साथ बातचीत करते हैं।

पहले दो तथ्यों के वचन आधारित प्रमाण के लिए, इस पुस्तिका में “केवल एक ही परमेश्वर हैं,” “यीशु परमेश्वर हैं,” और “पवित्र आत्मा परमेश्वर है” शीर्षक वाले अनुभाग देखें।

पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा एक दूसरे और विश्वासियों के साथ व्यक्तियों के रूप में बातचीत करते हैं, इसके प्रमाण के लिए यूहन्ना 14-16 देखें। यूहन्ना 14 में, 10-13, 16, 21, 23, 24, 26, 28 और 31 पद देखें। यूहन्ना 15 में, 1-2, 9, 10, 15, 23-24 और 26 देखें। यूहन्ना 16 में, 7, 10, 13-16, 26-28 और 32 पद देखें।

## (9) उद्धार केवल मसीह के प्रायश्चित से ही है।

### यह क्यों मायने रखता है

झूठे विश्वास एक व्यक्ति को परमेश्वर का अनुग्रह पाने के लिए ग़लत दिशा-निर्देश देते हैं। उद्धार पाने का केवल एक ही मार्ग है।

### वचन आधारित प्रमाण

"क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें" (प्रेरितों 4:12)।

"उसके पुत्र यीशु का लहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है" (1 यूहन्ना 1:7)।

"क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है; और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर का दान है" (इफिसियों 2:8)।

"अत: जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे, तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें" (रोमियों 5:1)।

"सब विश्वास करनेवालों...उसके अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है, सेंतमेंत धर्मी ठहराए जाते हैं" (रोमियों 3:22, 24)।

"अत: जब कि हम अब उसके लहू के कारण धर्मी ठहरे, तो उसके द्वारा परमेश्वर के क्रोध से क्यों न बचेंगे?" (रोमियों 5:9)।

"परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है" (रोमियों 6:23)।

## (10) केवल परमेश्वर की ही उपासना करनी चाहिए।

### यह क्यों मायने रखता है

यदि कोई व्यक्ति परमेश्वर के अलावा किसी और की उपासना करता है, तो वह परमेश्वर का शत्रु है और शैतान के अधीन है। परमेश्वर के साथ किसी और की उपासना करना संभव नहीं है। मानवीय अगुवों, संतों या मरियम की उपासना करना ग़लत है। आत्माओं से प्रार्थना करना और उनकी आज्ञा मानना ग़लत है।

### वचन आधारित प्रमाण

परमेश्वर ने अपने लोगों से कहा कि वे किसी भी मूर्ति को दण्डवत न करें (निर्गमन 20:4-5)। इसलिए हम जानते हैं कि किसी भी वस्तु की उपासना करना ग़लत है।

शैतान ने यीशु को अपने सामने झुकने के लिए लुभाया, लेकिन यीशु ने कहा कि लिखा है कि हमें केवल परमेश्वर को प्रणाम और उनकी ही उपासना करनी चाहिए (मत्ती 4:10)। इसलिए हम जानते हैं कि शैतान की उपासना करना ग़लत है।

प्रेरित पौलुस ने कहा कि दुष्ट की उपासना करने से परमेश्वर का क्रोध और जलन भड़कता है (1 कुरिन्थियों 10:20-22)। इसलिए हम जानते हैं कि उन आत्माओं की उपासना करना ग़लत है जो परमेश्वर के विरुद्ध हैं।

प्रेरित पौलुस ने कहा कि जो लोग स्वर्गदूतों की उपासना करते हैं वे धोखा खाते हैं (कुलुस्सियों 2:18)। इसलिए हम जानते हैं कि स्वर्गदूतों की उपासना करना ग़लत है।

प्रेरित पतरस ने कुरनेलियुस से कहा कि वह उसकी उपासना न करे क्योंकि वह भी एक मनुष्य था (प्रेरितों के काम 10:25-26)। इसलिए हम जानते हैं कि किसी मनुष्य की उपासना करना ग़लत है।

## (11) हम विश्वास के द्वारा उद्धार पाते हैं।

### यह क्यों मायने रखता है

क्योंकि उद्धार पूरी तरह से मसीह के प्रायश्चित के बलिदान के द्वारा प्रदान किया जाता है, इसलिए लोग अपने उद्धार को पाने के लिए कुछ भी नहीं कर सकते, यहाँ तक कि आंशिक रूप से भी नहीं। कोई भी मानव संगठन अन्य आवश्यकताओं को निर्धारित करके किसी व्यक्ति से उद्धार को दूर नहीं रख सकता है।

### वचन आधारित प्रमाण

“क्योंकि व्यवस्था के कामों से कोई प्राणी उसके सामने धर्मी नहीं ठहरेगा” (रोमियों 3:20)।

“**मनुष्य व्यवस्था के कामों से अलग ही, विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरता है**” (रोमियों 3:28)।

“इसी कारण प्रतिज्ञा विश्वास पर आधारित है कि अनुग्रह की रीति पर हो” (रोमियों 4:16)।

“अत: जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे, तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें” (रोमियों 5:1)।

“और जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा” (प्रेरितों के काम 2:21)।

“क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है...वरन् परमेश्वर का दान है, और न कर्मों के कारण” (इफिसियों 2:8-9)।

“यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है” (1 यूहन्ना 1:9)।

“सुसमाचार को छोड़ जिसे तुम ने ग्रहण किया है, यदि कोई और सुसमाचार सुनाता है, तो शापित हो” (गलातियों 1:9)।

## (12) हमें उद्धार का व्यक्तिगत आश्वासन मिल सकता है।

### यह क्यों मायने रखता है

क्योंकि उद्धार परमेश्वर का मुफ़्त उपहार है, जिसे विश्वास से प्राप्त किया जाता है, एक व्यक्ति जान सकता है कि वह बचा हुआ है। यदि कोई व्यक्ति परमेश्वर के सामने अपने पापों का अंगीकार करता है, और मसीह के प्रायश्चित के बलिदान के आधार पर क्षमा करने के परमेश्वर के वायदे पर विश्वास करता है, तो वह व्यक्ति विश्वास कर सकता है कि वह बचा हुआ है। परमेश्वर अपनी आत्मा की गवाही भी देते हैं कि हम बचाए गए हैं। झूठे विश्वास आम तौर पर लोगों को डर में रखते हैं।

### वचन आधारित प्रमाण

"मैं ने तुम्हें, जो परमेश्वर के पुत्र के नाम पर विश्वास करते हो, इसलिये लिखा है कि तुम जानो कि अनन्त जीवन तुम्हारा है" (1 यूहन्ना 5:13)।

"इसी से प्रेम हम में सिद्ध हुआ कि हमें न्याय के दिन हियाव हो" (1 यूहन्ना 4:17)।

"परन्तु लेपालकपन की आत्मा मिली है, जिससे हम हे अब्बा, हे पिता कहकर पुकारते हैं। आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है, कि हम परमेश्वर की सन्तान हैं" (रोमियों 8:15-16)।

## (13) बचाए न गए लोग अनन्त दण्ड भोगेंगे।

### यह क्यों मायने रखता है

यदि कोई विश्वास अनंत दंड की वास्तविकता को नकारता है, तो यह मानवीय विकल्पों के महत्व और परमेश्वर की व्यवस्था के प्रति आदर को कम करता है। यीशु ने कई बार नरक के बारे में बात की, जिससे इस सिद्धांत का महत्व पता चलता है।

### वचन आधारित प्रमाण

यीशु ने एक धनी व्यक्ति के बारे में बताया जो मृत्यु के बाद नरक की आग में था (लूका 16:24)।

"उनकी पीड़ा का धुआँ युगानुयुग उठता रहेगा, और जो उस पशु और उसकी मूर्ति की पूजा करते हैं...उनको रात दिन चैन न मिलेगा" (प्रकाशितवाक्य 14:11)।

"आग के अनन्त दण्ड में पड़कर दृष्टान्त ठहरे हैं" (यहूदा 7)।

"हे शापित लोगो, मेरे सामने से उस अनन्त आग में चले जाओ, जो शैतान और उसके दूतों के लिये तैयार की गई है" (मत्ती 25:41)।

"और ये अनन्त दण्ड भोगेंगे परन्तु धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे" (मत्ती 25:46)।

# समीक्षा प्रश्न

ये प्रश्न उन पाठों के लिए हैं जिनमें धार्मिक समूहों को शामिल किया गया है।

कक्षा सत्र के आरम्भ में, शिक्षक को इनमें से कुछ प्रश्नों की समीक्षा करनी चाहिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर एक वाक्य में दिया जा सकता है। ये प्रश्न छात्रों को प्रत्येक धार्मिक समूह के बारे में सबसे महत्वपूर्ण विवरण याद रखने में मदद करेंगे।

**पाठ 3 - मोर्मोनवाद**

(1) मसीही धर्म के इतिहास के बारे में मोर्मोन क्या मानते हैं?

(2) मोर्मोन का अंतिम लक्ष्य क्या है?

(3) मोर्मोन क्या मानते हैं कि यीशु अपने जन्म से पहले कौन थे?

(4) मोर्मोन अन्य कलीसियाओं के बारे में क्या सोचते हैं?

(5) मोर्मोन के लिए सर्वोच्च अधिकारी कौन है?

**पाठ 4 - यहोवा विटनेसेस**

(1) यहोवा विटनेसेस दूसरे चर्चों के बारे में क्या सोचते हैं?

(2) यहोवा विटनेसेस क्या मानते हैं कि उद्धार पाने के लिए एक व्यक्ति को क्या करना चाहिए?

(3) यहोवा विटनेसेस पवित्र आत्मा के बारे में क्या मानते हैं?

(4) यहोवा विटनेसेस यीशु के बारे में कौन-सी झूठी मान्यताएँ सिखाते हैं?

**पाठ 5 - इग्लेसिया नी क्रिस्टो**

(1) इग्लेसिया नी क्रिस्टो का अनुवादित नाम क्या है?

(2) इग्लेसिया नी क्रिस्टो का सबसे महत्वपूर्ण विश्वास क्या है?

(3) इग्लेसिया नी क्रिस्टो यीशु के बारे में क्या सिखाता है?

(4) इग्लेसिया नी क्रिस्टो के अनुसार, उद्धार पाने के लिए एक व्यक्ति को कौन सी दो चीजें करनी चाहिए?

(5) कौन सा बड़ा पंथ सिद्धांत में इग्लेसिया नी क्रिस्टो के समान है?

**पाठ 6 - ईस्टर्न लाइटनिंग**

(1) ईस्टर्न लाइटनिंग नामक पंथ का आधिकारिक नाम क्या है?

(2) ईस्टर्न लाइटनिंग यीशु के बारे में क्या सिखाते है?

(3) ईस्टर्न लाइटनिंग के अनुसार, एक व्यक्ति कैसे बचाया जाता है?

**पाठ 7 – प्रलयवादी पंथ**

(1) प्रलयवादी पंथ लोगों की भावनात्मक और आध्यात्मिक ज़रूरतों को कैसे पूरा करने की कोशिश करते हैं?

(2) प्रलयवादी पंथ बाइबल का दुरुपयोग कैसे करते हैं?

(3) बाइबल से भविष्यद्वाणी संबंधी वचनों का महान विषय क्या है?

(4) प्रलयवादी पंथ विनाशकारी कैसे हैं?

**पाठ 8 - हिन्दू धर्म**

(1) हिंदू धर्म के देवताओं का नैतिक चरित्र एक सच्चे ईश्वर के नैतिक चरित्र से किस प्रकार भिन्न है?

(2) हिंदुओं के अनुसार ब्रह्म क्या है?

(3) यीशु के बारे में हिंदू दृष्टिकोण क्या है?

(4) हिंदू का अंतिम लक्ष्य क्या है?

**पाठ 9 - बौद्ध धर्म**

(1) बौद्ध लोग ईश्वर के स्थान पर किस पर विश्वास करते हैं?

(2) बौद्ध धर्म के अंतिम लक्ष्य का नाम बताइए और उसे परिभाषित कीजिए।

(3) बौद्ध लोग जीवन में दुखों के लिए क्या स्पष्टीकरण देते हैं?

(4) बौद्ध लोग मानसिक और आध्यात्मिक अभ्यास क्यों करते हैं?

**पाठ 10 - ताओ धर्म**

(1) ताओवादी किससे प्रार्थना करते हैं?

(2) ताओवाद में सर्वोच्च देवता कौन हैं?

(3) ताओवादी का लक्ष्य क्या है?

(4) ताओवाद के अनुसार, यीशु कौन हैं?

**पाठ 11 - इस्लाम**

(1) इस्लाम के ईश्वर, पैगम्बर और पवित्र पुस्तक का नाम बताइए।

(2) मुसलमान यीशु के बारे में कौन-सी गलत धारणाएँ रखते हैं?

(3) मुसलमान बाइबल के बारे में क्या मानते हैं?

(4) मुसलमान उद्धार के बारे में क्या मानते हैं?

**पाठ 12 - यहूदी धर्म**

(1) यहूदी धर्म और मसीही धर्म में कौन से धर्मग्रंथ समान हैं?

(2) यहूदी धर्म में उद्धार की अवधारणा क्या है?

(3) यहूदी धर्म के अनुसार यीशु कौन थे?

(4) यहूदी धर्म किस तरह के मसीहा की अपेक्षा करता है?

**पाठ 13 - नये युग का धर्म**

(1) नए युग के अनुयायी अलौकिकता के साथ कैसे बातचीत करते हैं?

(2) नए युग का धर्म दूसरे धर्मों को किस तरह देखते हैं?

(3) परमेश्वर के बारे में नए युग की अवधारणा क्या है?

(4) नए युग के अनुयायी यीशु के बारे में क्या मानते हैं?

(5) नए युग के अनुयायी पाप के बारे में क्या मानते हैं?

(6) नए युग के अनुयायी उद्धार के बारे में क्या मानते हैं?

**पाठ 14 - प्रकृति धर्म**

(1) क्या प्रकृतिक धर्मों की मान्यताएँ और प्रथाएँ एक विशेष धर्म तक ही सीमित हैं? समझाएँ।

(2) प्रकृतिक धर्मों का पालन करने वाले लोग आत्माओं के साथ कैसे बातचीत करते हैं?

(3) अंधविश्वास क्या है?

(4) मसीहियत अंधविश्वासी क्यों नहीं हैं?

(5) एनिमिस्ट ईश्वर से प्रार्थना क्यों नहीं करते?

**पाठ 15 - वुडू**

(1) वुडू के साधक किसकी उपासना करते हैं?

(2) वुडू धर्म किस कलीसिया से अनुष्ठान, छवियाँ और संत के नाम लेता है?

(3) वुडू उपासना सेवा के दौरान उपासक का लक्ष्य क्या होता है?

(4) वुडू समारोहों में इस्तेमाल की जाने वाली चीज़ों के कुछ उदाहरण क्या हैं?

**पाठ 16 - सेवेंथ डे एड्वैंटिस्म को समझना**

(1) एडवेंटिस्टों का परमेश्वर के बारे में क्या दृष्टिकोण है?

(2) एडवेंटिस्टों का उद्धार के बारे में क्या दृष्टिकोण है?

(3) एडवेंटिस्टों का मानना है कि पुनरुत्थान के समय लोगों के साथ क्या होगा?

(4) वह प्राथमिक सिद्धांत क्या है जो एडवेंटिस्टों को अन्य चर्चों से अलग करता है?

**पाठ 17 - रोमन कैथोलिकवाद को समझना**

(1) रोमन कैथोलिक धर्म अपने नाम के साथ क्या दावा करता है?

(2) रोमन कैथोलिक परमेश्वर के बारे में क्या विश्वास करते हैं?

(3) रोमन कैथोलिकों पर मूर्तिपूजा का आरोप क्यों लगाया जाता है?

(4) उद्धार के बारे में रोमन कैथोलिक दृष्टिकोण क्या है?

(5) शुद्धिकरण का रोमन कैथोलिक सिद्धांत क्या है?

**पाठ 18 - ईस्टर्न रूढ़िवाद को समझना**

(1) ईस्टर्न रूढ़िवादी चर्च का नाम क्या दावा करता है?

(2) ईस्टर्न रूढ़िवादी चर्च परमेश्वर के बारे में क्या विश्वास करता है?

(3) ईस्टर्न रूढ़िवादी चर्च बाइबल के बारे में क्या सिखाता है?

(4) ईस्टर्न रूढ़िवादी के अनुयायी संतों से प्रार्थना क्यों करते हैं?

(5) ईस्टर्न रूढ़िवादी की शिक्षा के अनुसार थियोसिस में क्या होता है?

**पाठ 19 - समृद्धि के धर्म सिद्धान्त को समझना**

(1) झूठे समृद्धि शिक्षकों की चार सामान्य विशेषताएँ बताइए।

(2) झूठे समृद्धि धर्मशास्त्र के अनुसार, विश्वास क्या है?

(3) झूठे समृद्धि धर्मशास्त्र के अनुसार, परमेश्वर कौन है?

(4) झूठे समृद्धि धर्मशास्त्र के अनुसार, लोग क्या हैं?

# अनुशंसित संसाधन

**इस पाठ में चर्चा किये गये विषयों के बारे में अधिक जानने के लिए कृपया निम्नलिखित संसाधन देखें।**

**सुसमाचार प्रसार**

Coleman, Robert. *The Master Plan of Evangelism*. Ada: Revell, 2010.

Comfort, Ray. *Hell's Best-Kept Secret*. New Kensington: Whitaker House, 2004.

Little, Paul. *How to Give Away Your Faith*. Downers Grove: IVP Books, 2019.

**मोर्मोनवाद**

Martin, Walter. *The Kingdom of the Cults: The Definitive Work on the Subject*. Bloomington: Bethany House Publishers, 2019.

Geisler, Norman and William Nix. *From God to Us Revised and Expanded: How We Got Our Bible*. Chicago: Moody Publishers, 2012.

यहोवा विटनेसेस, इग्लेसिया नी क्रिस्टो और ईस्टर्न लाइटनिंग पर पाठों के लिए अनुशंसित पुस्तकें भी इस पाठ के लिए प्रासंगिक हैं।

**यहोवा विटनेसेस**

Strobel, Lee. *The Case for Christ: A Journalist's Personal Investigation of the Evidence for Jesus*. Grand Rapids: Zondervan, 2016.

Carlson, Ron and Ed Decker. *Fast Facts on False Teachings*. Eugene: Harvest House Publishers, 2003.

मोर्मोनवाद, इग्लेसिया नी क्रिस्टो और ईस्टर्न लाइटनिंग पर पाठों के लिए अनुशंसित पुस्तकें भी इस पाठ के लिए प्रासंगिक हैं।

**इग्लेसिया नी क्रिस्टो**

Strobel, Lee. *The Case for Easter: A Journalist Investigates the Evidence for the Resurrection*. Grand Rapids: Zondervan, 2018.

McDowell, Josh and Bob Hostetler. *Beyond Belief to Convictions*. Carol Stream: Tyndale House Publishers, Inc., 2002

मॉर्मनवाद, यहोवा विटनेसेस और ईस्टर्न लाइटनिंग पर पाठों के लिए अनुशंसित पुस्तकें इस पाठ के लिए भी प्रासंगिक हैं।

**ईस्टर्न लाइटनिंग**

Strobel, Lee. *The Case for the Real Jesus: A Journalist Investigates Current Attacks on the Identity of Christ*. Grand Rapids: Zondervan, 2009.

Hattaway, Paul. *China's Christian Martyrs*. Grand Rapids: Kregel Publications, 2007.

मॉर्मनवाद, यहोवा विटनेसेस और इग्लेसिया नी क्रिस्टो पर पाठों के लिए अनुशंसित पुस्तकें भी इस पाठ के लिए प्रासंगिक हैं।

**प्रलयवादी पंथ**

Bird, Mark, Allan Brown, Philip Brown, Ben Durr, Stephen Gibson, Daniel Glick, Richard Miles, and Larry Smith. *I Believe: Fundamentals of the Christian Faith*. Cincinnati: Revivalist Press, 2006.

Ladd, Eldon. *The Blessed Hope*. Grand Rapids: Eerdmans, 1990.

**हिन्दू धर्म**

Strobel, Lee. *The Case for Faith: A Journalist Investigates the Toughest Objections to Christianity*. Grand Rapids: Zondervan, 2014.

बौद्ध धर्म, ताओवाद, इस्लाम और यहूदी धर्म पर पाठों के लिए अनुशंसित पुस्तकें इस पाठ के लिए भी प्रासंगिक हैं।

**बौद्ध धर्म**

Strobel, Lee. *The Case for a Creator: A Journalist Investigates Scientific Evidence that Points toward God*. Grand Rapids: Zondervan, 2014.

हिन्दू धर्म, ताओवाद, इस्लाम और यहूदी धर्म पर पाठों के लिए अनुशंसित पुस्तकें इस पाठ के लिए भी प्रासंगिक हैं।

**ताओ धर्म**

Geisler, Norman. *Christian Apologetics*. Ada: Baker Academic, 2013.

हिन्दू धर्म, बौद्ध धर्म, इस्लाम और यहूदी धर्म पर पाठ के लिए अनुशंसित पुस्तकें इस पाठ के लिए भी प्रासंगिक हैं।

**इस्लाम**

Rhodes, Ron. *Reasoning from the Scriptures with Muslims*. Eugene: Harvest House Publishers, 2002.

हिन्दू धर्म, बौद्ध धर्म, ताओवाद और यहूदी धर्म के पाठों के लिए अनुशंसित पुस्तकें इस पाठ के लिए भी प्रासंगिक हैं।

**यहूदी धर्म**

McDowell, Josh. *More than a Carpenter*. Carol Stream: Tyndale Momentum, 2009.

Kaiser, Walter C. *The Messiah in the Old Testament*. Grand Rapids: Zondervan, 1995.

यहोवा विटनेसेस और इग्लेसिया नी क्रिस्टो पर पाठों के लिए अनुशंसित पुस्तकें भी इस पाठ के लिए प्रासंगिक हैं।

यहूदियों के लिए यीशु की वेबसाइट https://jewsforjesus.org पर मसीही धर्म के लिए सबूत और आपत्तियों के उत्तर प्रदान करती है, खासकर यहूदियों के लिए।

एक अन्य सेवकाई जो लेख और जानकारी प्रदान करती है, वह है चुने हुई लोगों की सेवकाई, https://www.chosenpeople.com पर।

**नये युग का धर्म**

Geisler, Norman and Ronald M. Brooks. *When Skeptics Ask: A Handbook on Christian Evidences*. Ada: Baker Books, 1990.

Chesterton, G.K. *The Everlasting Man*. Brooklyn: Angelico Press, 2013.

Lewis, C. S. *The Abolition of Man*. San Francisco: HarperOne, 2015.

यहोवा विटनेसेस, इग्लेसिया नी क्रिस्टो और ईस्टर्न लाइटनिंग पर पाठों के लिए अनुशंसित पुस्तकें भी इस पाठ के लिए प्रासंगिक हैं।

**प्रकृति धर्म**

Richardson, Don. *Peace Child*. Bloomington: Bethany House Publishers, 2005.

Richardson, Don. *Eternity in Their Hearts*. Bloomington: Bethany House Publishers, 2006.

**वुडू**

Spurgeon, Charles and Robert Hall. *Spiritual Warfare in a Believer's Life*. Edmonds: YWAM Publishing, 1993.

Middleton, David. *Victory Over the Forces of Darkness*. Salem: Allegheny Publications, 2010.

**सेवेंथ डे एड्वैंटिस्म को समझना**

Carson, D. A. *From Sabbath to Lord's Day: A Biblical, Historical, and Theological Investigation*. Eugene: Wipf and Stock, 2000.

**कैथोलिकवाद**

Noll, Mark. *Turning Points: Decisive Moments in the History of Christianity*. Ada: Baker Academic, 2012.

ईस्टर्न रूढ़िवादी पर पाठ के लिए अनुशंसित पुस्तक इस पाठ के लिए भी प्रासंगिक है।

**ईस्टर्न रूढ़िवाद**

Gonzalez, Justo. *A History of Christian Thought, Volume 1: From the Beginnings to the Council of Chalcedon*. Nashville: Abingdon Press, 1987.

रोमन कैथोलिक धर्म पर पाठ के लिए अनुशंसित पुस्तक इस पाठ के लिए भी प्रासंगिक है।

**समृद्धि का धर्मशास्त्र**

Hanegraaff, Hank. *Christianity in Crisis*. Nashville: Thomas Nelson, 2012.

Gibson, Stephen. *Prosperity Prophets*. Salem: Allegheny Publications, 2006.

Sider, Ronald. *The Scandal of the Evangelical Conscience*. Ada: Baker Books, 2005.

# निर्धारित कार्य का रिकॉर्ड

विद्यार्थी का नाम _____

नीचे दी गई तालिका में, प्रत्येक लिखित रिपोर्ट प्रस्तुत करने पर हस्ताक्षर करें। Shepherds Global Classroom से प्रमाण पत्र प्राप्त करने के लिए सभी असाइनमेंट (निर्धारित कार्य) सफलतापूर्वक पूरे होने चाहिए।

| | बातचीत तिथि | चर्चा किये गए धार्मिक समूह | लिखित रिपोर्ट प्रस्तुत की गई |
|---|---|---|---|
| 1 | | | |
| 2 | | | |
| 3 | | | |
| 4 | | | |
| 5 | | | |
| 6 | | | |
| 7 | | | |
| 8 | | | |
| 9 | | | |
| 10 | | | |

Shepherds Global Classroom से पूरा होने के प्रमाण पत्र के लिए आवेदन हमारे वेबपेज www.shepherdsglobal.org. पर किया जा सकता है। प्रमाण पत्र SGC के अध्यक्ष से प्रशिक्षकों और प्रशिक्षकों को डिजिटल रूप से प्रेषित किए जाएंगे जो अपने छात्र (छात्रों) की ओर से आवेदन पूरा करते हैं।

मसीह पर केंद्रित। प्रशिक्षण। हर जगह।

shepherds
GLOBAL CLASSROOM

SHEPHERDSGLOBAL.ORG